रचयिता :

कविवर राजमल पवैया

●

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल

भोपाल (म० प्र०)

न्योछावर : रु. ४-५०

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल

जैन मन्दिर मार्ग, चौक, भोपाल

●

* लागत मूल्य रु० ५-५०
* विक्रय मूल्य रु० ४-५०

पुस्तक मंगाने का पता :

श्री बदामीलाल जैन

फर्म : कन्हैयालाल बदामीलाल जैन

८४, इब्राहीमपुरा, भोपाल

४६२००१ (म.प्र.)

पूजांजलि पर अपने विचार एवं सुझाव भेजने का पता—

श्री राजमल पवैया, ४८ इब्राहीमपुरा, भोपाल—४६२ ००१ (म. प्र.)

प्रथम संस्करण ४००० सहारनपुर (उ. प्र.)

द्वितीय परिवर्धित संस्करण ५००० भोपाल (म. प्र.)

(श्री महावीर निर्वाण महोत्सव २५१०, सन् १९८३)

●

मुद्रक : दिवाकर प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

३५, जेल रोड, जहांगीराबाद, भोपाल

प्राक्कथन

भोपाल के प्रसिद्ध साहित्यकार, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सेवाभावी कार्यकर्त्ता कविवर श्री राजमल जी पवैया द्वारा रचित ४४ आध्यात्मिक पूजनों का संग्रह "जैन पूजाजलि" का द्वितीय संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष है। पूजांजलि का प्रथम संस्करण ३८ पूजनों का श्री हेमचन्द्र जी (जैन इंजीनियरिंग कं०) के सद प्रयत्न से दि० जैन स्वाध्याय मंडल सहारनपुर (उ. प्र.) से गत वर्ष ४००० छपा था जिसका अल्पावधि में ही विक्रय हो गया।

पवैया जी सन १९३२ से ही लिखते आ रहे हैं। गीत, कहानी, व्यंग, कविता, लेख सभी विषयों पर आपने लिखा है। चीन - भारत युद्ध के समय सन १९६२ में वीर-रस पूर्ण १५४ कविताओं का संग्रह ' जीवन दान" छपा जिसकी देश के महान नेताओं पं० जवाहरलाल नेहरू श्रीमती इन्दिरा गांधी, मुरारजी देसाई डॉ० जाकिर हुसेन, श्री लाल बहादुर शास्त्री, यशवन्तराव चह्वाण, बाबू तखतमल जैन, मोहनलाल सुखाड़िया, डॉ० हु० वि० पाटसकर, विख्यात ज्योतषी पं० सूर्यनारायण व्यास, डॉ० शंकरदयाल शर्मा आदि ने एवं दैनिक नव भारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान आदि अनेकों समाचार पत्रों ने बड़ी प्रशंसा की। आध्यात्मिक पुरुष पूज्य श्री कानजी स्वामी के निकट संपर्क में आने के बाद रुचि बदली और आप आध्यात्मिक गीत लिखने लगे। प्रथम आध्यात्मिक रचना "कब मुझे समकित मिलेगा" सन्मति संदेश में छपी। सन् १९६३ में महात्मा गांधी के आध्यात्मिक गुरु श्रीमद् राजचन्द्र जी के गुजराती काव्य "अपूर्व अवसर" का हिन्दी पद्यानुवाद किया, जो पूज्य श्रीकानजी स्वामी को इतना भाया कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में तप कल्याणक के अवसर पर वे इसका ही पाठ करके प्रवचन करते थे।

सन् १९६४ में आपकी प्रथम पूजन "पंच परमेष्ठी" छपी जिसे भारतीय ज्ञानपीठ ने अपनी ज्ञानपीठ पूजांजलि में स्थान दिया। तब से अब तक यह पूजन अनेक संग्रहों में एक लाख से अधिक छप चुकी है। इसी प्रकार बाहुबलि पूजन भी पचास हजार से अधिक छप चुकी है। वैसे तो पवैया जी की २०-२५ छोटी-मोटी पुस्तकें छप चुकी हैं। सन १९३४-३५ में "जगदुद्धारक भगवान महावीर" "जैन धर्म वीरों का धर्म है" "जैन धर्म-सार्वधर्म" आदि छपी हैं जिनकी प्रशंसा उस समय जैन धर्म भूषण ब्र० शीतलप्रसाद जी एवं विद्यावारिधि बैरिस्टर चंपतराय जी आदि विद्वानों ने की थी।

अभी तक आपने सभी तीर्थंकरों, तीर्थ क्षेत्रों तथा नैमित्तिक एवं विशेष पर्वों आदि की १०८ पूजन और १५०० से अधिक आध्यात्मिक गीत लिखे हैं। समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में आपके गीत छपते रहते हैं। ५ पूजनो का विमोचन तो पूज्य श्री कानजी स्वामी के करकमलों द्वारा हुआ था। यह विचित्र

संयोग है कि सन १९३२ में लिखित प्रथम गीत "दशलक्षण धर्म" था जो जैनमित्र में उस समय छपा और वही गीत आज 'दशलक्षण पूजन' का आधार बन गया। सन १९३४ में प्रकाशित गीत भी "महावीर जयन्ती" पूजन की जयमाला बन गया है। आपने पंचसहस्त्रनाम, संपूर्ण चतुर्विशंति जिनस्तोत्र, पंच परमेष्ठी विधान, पंच कल्याणक विधान एवं दशभक्ति आदि भी लिखे हैं।

आपकी रचनाओं की प्रशंसा आचार्य श्री समन्तभद्र जी कुम्भोज बाहुवलि एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी, मुनि श्री शान्ति सागर जी, मुनि श्री निर्वाण सागर जी, श्री जिनेन्द्र वर्णी (स्व० मुनि श्री सिद्धान्त सागर जी), सुप्रसिद्ध विद्वान स्व० श्री ए. एन. उपाध्ये, पं० श्री फूलचन्द जी सिद्धान्त शास्त्री, पं० श्री कैलाश चन्द्र जी शास्त्री, पं० श्री जगन्मोहन लाल जी शास्त्री, पं० श्री बाबू भाई मेहता पं० श्री दरवारी लाल जी कोठिया, ब्र० केशरीचन्द जो धवल, पं० पन्नालालजी महित्याचार्य, पं० प्रकाश हितैषी आदि विद्वानों ने की है। आपका लेखन निःस्वार्थ भाव से जिनवाणी के प्रचार प्रसार हेतु सतत् प्रवाहित हो रहा है। हमें आशा है इन पूजनों का विशेष प्रचार होगा। विशिष्ट सभी धार्मिक पर्वो पर लिखी गई पूजनों को उन-उन पर्वों पर करने से पर्वो के महत्व का ज्ञान होगा।

भोपाल दिगम्बर जैन समाज एवं मुमुक्ष मंडल के भाइयों ने इसके प्रकाशन और मूल्य कम करने में जो सहयोग दिया है वह प्रशंसनीय है। इस पुस्तक की लागत ५)५० रु. से भी अधिक आई है किन्तु प्रचार-प्रसार की दृष्टि से ४)५० रु. न्योछावर रखी गई है।

दिवाकर प्रिन्टर्स के श्री बी० एल० दिवाकर एवं श्री राकेश दिवाकर ने इसे तत्परता से सुन्दर छापा है, अतः धन्यवाद। 'पूजांजलि' के छापने में सावधानी बरती है। फिर भी यदि भूलें रह गई हों तो सुधारने की कृपा करें।

दो वर्ष पूर्व पू० श्री जिनेन्द्र वर्णी जी के भोपाल चतुर्मास के अवसर पर उन्होंने इन पूजनों को देखकर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट की थी तथा भूमिका के रूप में 'मंगल कामना' में अपने विचार प्रगट किये हैं जिसके लिये हम उनके आभारी है।

पूजांजलि के प्रत्येक पृष्ठ पर पवैया जी द्वारा रचित लगभग २०० काव्य सूक्तियां एक एक करके दी गई हैं जो अपने आप में अनुपम हैं तथा प्रत्येक पूजा के अन्त में जाप्य मन्त्र भी दिया है।

हमारी आकांक्षा है कि आपकी सभी आध्यात्मिक रचनाओं का प्रकाशन शीघ्र ही हो जाय। इत्यलम्!

पंडित राजमल जैन बी. काम.
१०, ललवानी गली, भोपाल म. प्र.
ज्योतिपर्व, वीर सं० २५१०

राजमल जैन बी. काम.

मंगल कामना

आज के इस क्रान्तिकारी युग में तत्व ज्ञान की चर्चा प्रत्येक शास्त्र सभा में सुनने को मिलती है। इस अध्यात्म विकास के मार्ग में ये युग क्रान्ति कोई छोटी बात नहीं है। एक क्षण में तो एक आम्र फल भी प्राप्त नही होता फिर जो फल जीवन विकास के साथ सम्बन्धित हैं उसकी प्राप्ति एक क्षण में कैसे हो सकती है ? सोपान दर सोपान ऊपर चढ़ना ही तो विकास है। फिर कुछ काल पश्चात वह एकदम बदला सा प्रतीत होता है। इसी प्रकार यह अध्यात्म की क्रान्ति का युग है।

परन्तु क्या यह क्रान्ति यहाँ तक आकर ही बस हो जायेगी ? क्रान्ति रुक सकती है परन्तु विकास नहीं, वह तो विकास है। वह अवश्य ही आगे चलेगा, चलता रहेगा। अपनी चरम सीमा तक और अगर यह सिद्धान्त सत्य है तो हमें आश्वस्त रहना चाहिए कि अध्यात्म का, भक्ति का तथा धर्म का, कवित्व का यह प्रवाह निरन्तर प्रवाहित रहेगा।

भक्ति जिसकी अभिव्यक्ति पूजा के द्वारा होती है पाद प्रक्षालन स्मरण, चिन्तन, आह्वानन, सन्निधिकरण, अर्चन भजन, कीर्तन गायन, नर्तन आदि न जाने कितने अङ्ग इसके विस्तार में समाये हुए हैं। इस सबका अवसान वास्तव में आत्मार्पण में होता है। यदि आत्मार्पण न हो तो पूजा एक शुभ क्रिया मात्र रह जाती है परन्तु आत्मार्पण हो जाने पर वह अनुभव साक्षात् रूप से मोक्ष का कारण बन जाता है।

भोपाल निवासी श्री राजमल जी पवैया इसके एक उदाहरण हैं यद्यपि अभी आत्मार्पण वाली अवस्था दूर है तथापि भक्ति युक्त कवित्व के अकल्पित प्रवाह में उनकी लेखनी से अब तक एक हजार से अधिक आध्यात्मिक गीत और लगभग एक सौ पूजायें निकल चुकी हैं फिर भी लेखनी रुक नही रही है। गीत पूजाओं की रचना करते रहना ही मानो उनका व्यसन बन गया है। सन १९६२ से उनका यह स्रोत बराबर बह रहा है और बहता रहेगा। पूजा के क्षेत्र में कोई भी विषय उन्होंने नहीं छोड़ा है। क्या पंच परमेष्ठी देव शास्त्र गुरु, चतुर्विंशति तीर्थङ्कर, सीमंधर प्रभु गौतम स्वामी बाहुबलि क्या पच बालयति, कुन्द कुन्द आचार्य तथा सरस्वती माता समयसार तथा पर्व पूजाये आदि सब ही तो समेट लिया है उन्होंने अपनी परधि में।

प्रत्येक पूजा अध्यात्म रस से ओत-प्रोत है और इस युग के अनुसार समयसार के रङ्ग में रङ्गी हुई है। व्यवहार भूमि पर पसन्द भी बहुत की जा रही हैं।

भले ही उन्हें आज तक प्रकाशित होने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ हो परन्तु वे उनके भीतर तो प्रकाशित ही थीं यदि वहां प्रकाशित न होतीं तो बाहर आती कैसे? अध्यात्म के इस युग में इस प्रकार के उदाहरण नित्य बनते जा रहे है।

प्रकाश में आने पर इनकी यह कला इस युग को क्या प्रदान करेगी यह तो युग बतायेगा। मेरी तो प्रभु से यह प्रार्थना है कि इनके भीतर उदित यह कला चन्द्रमा की एक एक कला की भाँति दिन दिन बढ़ती हुई पूर्ण हो जाए और इस विश्व पर अमृत बरसा कर सर्वत्र शान्ति रस का प्रसार करे। उनकी इस 'पूजाँजलि' का प्रचार अधिकाधिक हो इस मङ्गल कामना के साथ।

ॐ

जिनेन्द्र वर्णी

●●

☼ गुरु बिन कौन गति मेरी ☼

भव विकट वन मैं लगाऊँ प्रति समय फेरी ॥ गुरू० ॥

कर्म वदरी ने मुझे हर बार है घेरी।
नाव मेरी डूबने में है न अब देरी ॥ गुरू० ॥

शुद्ध मन की भावना से है विनय मेरी।
बाँह थामो लाज राखो मैं शरण तेरी ॥ गुरू० ॥

☼ हमारे गुरु मंगलदातार ☼

पंच महाव्रत साधें, अट्ठाईस मूलगुण धार।
सब जीवों को अभयदान दें, सब विधि हिंसा टार ॥ हमारे० ॥

हित मित सत्य वचन प्रिय बोलें, सजे शील सिंगार।
नाहीं अंतर बाह्य परिग्रह, निज से ही बस प्यार ॥ हमारे० ॥

निज स्वरूप ही प्रतिपल चिन्तत, निर्मल संयम धार।
स्वयं तरें औरों को तारें, ले जाएं भव पार ॥ हमारे० ॥

☼ आज मेरो नींद नसानी हो ☼

गुरू चरणन में बैठ सुनी, मैंने जिनवाणी हो ॥ आज० ॥

भव भव व्याकुल होय फिरी, निज सुध बिसरानी हो।
उपजत नसत देह को अब तक, अपनी जानी हो ॥ आज० ॥

श्रुत उपदेश ग्रहण करते ही, राह दिखानी हो।
निज पर भेद लख्यो मैंने ज्यों, पय अरु पानी हो ॥ आज० ॥

पूजांजलि सूची

प्रभु जी मैंने लाखों यतन करे

सम्यक दर्शन के बिन मैंने भव के भ्रमण करे ।। प्रभु० ।।
तत्त्व चिन्तवन कबहुं न कीनो, शास्त्र हु श्रवण करे ।
एक बार रुचि पूर्वक नाहीं, उर जिन वचन धरे ।। प्रभु० ।।
कोटिक वर्षों तक प्रभु मैने, तप भी गहन करे ।
बिन त्रिगुप्ति के स्वामी, मैंने कर्म न हनन करे ।। प्रभु० ।।
क्रिया कान्ड में धर्म मानकर, पर के भजन करे ।
निजस्वरूप को कियो न चिन्तन, भवदुख सहन करे ।। प्रभु० ।।

ज्ञान की निर्मल ज्योति जली

तत्त्व प्रतीति होत ही सगरी मिथ्या बुद्धि टली ।। ज्ञान० ।।
अनतानुबंधी की माया में निज बुद्धि छली ।
दृष्टि बदलते ही प्रभु मेरी दिशा आज बदली ।। ज्ञान० ।।
निज परिणति रसपान करत ही मन की खिली कली ।
मिथ्या भ्रांति मिटी क्षण भर में जो था सदा पली ।। ज्ञान० ।।

जो तू आत्म ध्यान चित धरतो

यह दुर्लभ मनुष्य भव तेरो, छिन में अरे सुधरतो ।। जो० ।।
विषय कषाय कीच से बाहर, ले वैराग्य निकरतो ।
आपा पर को भेद जानतो, सम्यक निर्णय करतो ।। जो० ।।
पंच महाव्रत धारण करके, जो संयम आदरतो ।
रत्नत्रय की नाव बैठकर, जल्दी पार उतरतो ।। जो० ।।
ज्ञानपवन से अष्ट कर्म रज, नेक समय में हरतो ।
सादि अनंत समाधि प्राप्त कर सुख अनंत तू भरतो ।। जो० ।।

निज आतम सिंगार सबेरे

समकित मुकुट, ज्ञान को कुन्डल, कंगन चारित केरे । निज० ।
संयम तिलक हार सामायिक, फिर निज रूप निहेरे ।
निज दर्पण में निज को देखे, पर की ओर न हेरे । निज० ।
निज को दर्शन निज को पूजन, निज को जाप जपेरे ।
निज चिन्तन निज मनन मिटावत, जनम जनम के फेरे । निज० ।
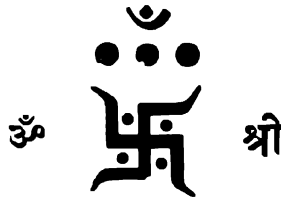
जैन पूजांजलि

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

प्रथम जिनेन्द्र तीर्थंकर प्रभु, ऋषभदेव को सविनय वंदन।
वृषभ जिनेश्वर आदिनाथ विभु, आदिब्रह्म भवकष्ट निकंदन ।।१।।
अजितनाथ अजितंजय अविकल, अजर अमर अनुपम अविनाशी।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, ज्ञान ज्योतिमय स्वपर प्रकाशी ।।२।।
संभवनाथ सौख्य के सागर, सर्वगुणों के आश्रयदाता ।
लोकालोक प्रकाशक जिनरवि, जो भी ध्याता शिवसुख पाता ।।३।।
अभिनदन आनंदसिंधु प्रभु, अविनश्वर अविकारी ज्ञायक।
आधि व्याधि पर की उपाधि के, क्षयकर्त्ता आनंदप्रदायक ।।४।।
सुमति जिनेन्द्र सुमति के दाता, दुर्नय तिमिर निवारण कारण।
सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी, परम पूज्य भवसागर तारण ।।५।।
पद्मनाथ प्रभु पद्म ज्योतिधन, उद्योतित त्रिभुवन में नामी।
पद्मरागमणि प्रभा दुग्ध में, जैसे व्यापे अंतर्यामी ।।६।।
हे सुपार्श्व स्वामी शत इन्द्रों से, वंदित हैं चरण तुम्हारे।
एक सहस्र अष्टनामों से, थुति करके इन्द्रादिक हारे ।।७।।
चद्रनाथ चदाप्रभुके चरणाम्बुज, ध्याते ऋषि-मुनि-गणधर।
कोटिक चंद्र सूर्य लज्जित हैं, ऐसे ज्योतिर्मय जगदीश्वर ।।८।।
पुष्पदंत परिपूर्ण ज्ञानमय, सुविधिनाथ शिवनाम तुम्हारा।
पावन परम प्रकाशमयी प्रभु, परमतेजमय जीवन सारा ।।९।।
शीतलनाथ शील के सागर, शुचिमय शीतल सिंधु सरल हो।
नाम-मात्र से अमृत होता, चाहे जैसा तीव्र गरल हो ।।१०।।
श्री श्रेयांसनाथ श्रेयस्कर, श्रेयस पद की मुझे चाह है।
जो भी शरण आपकी आता, होती उसे न राग दाह है ।।११।।
वासुपूज्य वागीश्वर विघ्नविनाशक विश्वभूप सुखकारी।
सुर नर पशु नारक गतियों से, तुम्हीं बचाते भवदुखहारी ।।१२।।

सच्ची श्रद्धा-ज्ञान सहित आचरण करने वाला सच्चा श्रावक

विमलनाथ विमलेश विवेकी, कर्मघाति घननाशनहारे ।
समवशरण में विमल ज्ञान रवि, किरण मनोज्ञ प्रकाशन हारे ।।१३।।

हे अनंत जिन नाथ महाप्रभु, गुण अनंत तुमने प्रगटाए ।
अनुभव रस बिन अब तक हमने कष्ट अनंतानंत उठाए ।।१४।।

धर्म नाथ प्रभु धर्म धुरंधर, ध्यान ध्येय ध्याता विख्याता ।
धर्मचक्रधारी हो जाता, जो भी तुम्हें हृदय से ध्याता ।।१५।।

शान्तिनाथ सुख-शांति विधाता, शान्ति सिन्धु समता के सागर ।
परम शान्त रस वर्षा करते, तीन लोक में नाम उजागर ।।१६।।

कुन्थुनाथ षट काया रक्षक, कृपा समुद्र कृतान्त कर्महर ।
रोग-शोक-दुख-हानि-मरण-भय, अपयश बंधनहर्ता सुखकर ।।१७।।

अरहनाथ अरिकर्म जयी, जो भी भव से आतंकित होता ।।
चरण कमल की शरण प्राप्त कर, भवपीड़ा से वंचित होता ।।१८।।

मल्लिनाथ की महा कृपा से, मोहमल्ल को चूर करूं मैं ।
मिथ्यातम हर समकित पाऊं, अष्टकर्मरज दूर करूं मैं ।।१९।।

मुनि सुव्रत जिनव्रत के अधिपति, महामोक्ष मंगल के दायक ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित मय, मोक्षमार्ग के श्रेष्ठ विधायक ।।२०।।

नमि जिनवर के चरण पखारूं, निर्निमेष अविरल छवि निरखूं ।
भेद ज्ञान-विज्ञान सूर्य पा, निज को निज पर को पर परखूं ।२१।।

नेमिनाथ निर्द्वन्द, निराकुल, निर्मल निर्विकार गुण धामी ।
केवल ज्ञान-प्रकाश ज्योति दो, यही विनय है अन्तर्यामी ।।२२।।

पार्श्वनाथ पावन परमेश्वर, संकटमोचन परम सुखमयी ।
पूर्णानंद स्वरूप ज्ञानघन, नाश करो संसार दुखमयी ।।२३।।

महावीर सन्मति जिन स्वामी, वर्धमान अतिवीर वीर प्रभु ।
अन्तिम तीर्थंकर वैशालिक, परम पुनीत सुवीर धीर प्रभु ।।२४।।

लौकिक सुख की नहीं कामना, केवल शिव सुख की अभिलाषा ।
भव अटवी से शीघ्र उबारो, स्वामी पूर्ण करो यह आशा ।।२५।।

यह स्तोत्र चतुर्विंशति जिन, जो भी पढ़ता भाव भक्ति से ।
मुक्ति लक्ष्मी का पति बनता, सिद्ध लोक जा आत्मशक्ति से ।।२६।।

— ✿ —

धर्म वही है, जो जीव को उत्तम सुख प्रदान करे।

अभिषेक पाठ

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को भाव से वंदन करूँ।
मन, वचन, काय त्रियोगपूर्वक शीष चरणों में धरूँ॥
सर्वज्ञ केवल ज्ञान धारी की सु छवि उर में धरूँ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग महान की जय उच्चरूँ॥
उज्ज्वल दिगम्बर वेश दर्शन कर हृदय आनंद भरूँ।
अति विनयपूर्वक नमन करके सफल यह नर भव करूँ॥
मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु के पूज्य मस्तक पर करूँ।
जल धार देकर हर्ष से अभिषेक प्रभू जी का करूँ॥
मैं न्हवन प्रभु का भाव से कर सकल भव पातक हरूँ।
प्रभु चरण कमल पखारकर सम्यकत्व की सम्पत्ति वरूँ॥

अभिषेक स्तुति

मैंने प्रभु के चरण पखारे।
जनम, जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे॥
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा ऊपर ढारे।
वीतराग अरिहंत देव के गूँजे जय जयकारे॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे।
पावन तन, मन, नयन भये सब दूर भये अंधियारे॥

पूजा पीठिका

ॐ जय, जय, जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु,
अरिहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वंदन।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वंदन॥
और लोक के सर्व साधुओं को है विनय सहित वंदन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को बार बार मेरा वंदन॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

साधुजन मोहभाव नष्ट कर ज्ञायक भावमयी निश्चय स्तुति को प्राप्त हैं।

मङ्गल चार, चार, हैं उत्तम चार शरण में जाऊँ मै।
मन, वच, काय, त्रियोगपूर्वक शुद्ध भावना भाऊँ मैं॥
श्री अरिहंत देव मङ्गल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मङ्गल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल॥
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में है उत्तम।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम॥
श्री अरिहंत शरण में जाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊं।
साधु शरण में जाऊं, केवलि कथित धर्म शरणा जाऊं॥

ॐ नमो अर्हते स्वाहा, पुष्पांजलि क्षिपामि।

मंगलविधान

णमोकार का मन्त्र शाश्वत इसकी महिमा अपरम्पार।
पाप ताप संताप क्लेश हर्ता भव भयनाशक सुखकार॥
सर्व अमङ्गल का हर्ता है सर्वश्रेष्ठ है मंत्र पवित्र।
पाप पुण्य आश्रव का नाशक संवरमय निर्जरा विचित्र॥
बन्ध विनाशक मोक्ष प्रकाशक वीतराग पद दाता मित्र।
श्री पंचपरमेष्ठी प्रभु के झलक रहे हैं इसमें चित्र॥
इसके उच्चारण से होता विषय कषायों का परिहार।
इसके उच्चारण से होता अन्तर मन निर्मल अविकार॥
इसके ध्यान मात्र से होता अन्तर द्वन्द्वों का प्रतिकार।
इसके ध्यान मात्र से होता वाह्यान्तर आनन्द अपार॥
णमोकार है मन्त्र श्रेष्ठतम सर्व पाप नाशनहारी।
सर्व मङ्गलों में पहला मङ्गल पढ़ते ही सुखकारी॥
यह पवित्र अपवित्र दशा सुस्थिति दुस्थिति में हितकारी।
निमिषमात्र में जपते ही होता विलीन पातक भारी॥

देव दर्शन द्वारा भव्य जीव आत्मानुभूति प्राप्ति कर लेते हैं।

सर्व विघ्न बाधा नाशक है सर्व संकटों का हर्ता।
अजर, अमर, अविकल, अविकारी अविनाशी सुख का कर्ता ।।
कर्माष्टक का चक्र मिटाता, मोक्ष लक्ष्मी का दाता।
धर्मचक्र से सिद्धचक्र पाता जो ओम नमः ध्याता ।।
ओम शब्द में गर्भित पांचों परमेष्ठी निज गुण धारी।
जो भी ध्याते बन जाते परमात्मा पूर्ण ज्ञान धारी।
जय, जय, जयति पंच परमेष्ठी जय, जय, णमोकार जिन मंत्र।
भव बन्धन से छुटकारे का यही एक है मंत्र स्वतन्त्र ।।
इसकी अनुपम महिमा का शब्दों में कैसे हो वर्णन।
जो अनुभव करते हैं वे ही पा लेते हैं मुक्ति गगन ।।

—:※:—

—अर्घ—

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिन गृह में जिन प्रतिमा सम्मुख सहस्रनाम को नमन करूँ ।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन, सहस्रनामेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वस्ति मङ्गलम्)

मङ्गलमय भगवान् वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर
मंगलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि मङ्गल जैन धर्म सुखकर
मंगलमय श्री ऋषभदेव प्रभु, मंगलमय श्री अजित जिनेश
मंगलमय श्री सम्भव जिनवर, मंगल अभिनन्दन परमेश
मंगलमय श्री सुमति जिनोत्तम मंगल पद्मनाथ सर्वेश
मंगलमय सुपार्श्व जिनस्वामी मंगल चन्दा प्रभु चन्द्रेश
मंगलमय श्री पुष्पदन्त प्रभु, मंगल शीतलनाथ सुरेश
मंगममय श्रेयांसनाथ जिन मंगल वासु पूज्य पूज्येश

वीतरागी शान्त-मुद्रा के दर्शन से आत्मा में शांति प्रगट होती।

मंगलमय श्री विमलनाथ विभु, मंगल अनन्तनाथ महेश
मंगलमय श्री धर्मनाथ प्रभु, मंगल शान्तिनाथ चक्रेश
मंगलमय श्री कुन्थुनाथ जिन मंगल श्री अरनाथ गुणेश
मंगलमय श्री मल्लिनाथ प्रभु मंगल मुनिसुव्रत सत्येश
मंगलमय नमिनाथ जिनेश्वर मंगल नेमिनाथ योगेश
मंगलमय श्री पार्श्वनाथ प्रभु, मंगल वर्धमान तीर्थेश
मंगलमय अरिहंत महाप्रभु मंगल सर्व सिद्ध लोकेश
मंगलमय श्री सर्वसाधुगण, मंगल जिनवाणी उपदेश
मंगलमय सीमन्धर आदिक, विद्यमान जिन बीस परेश
मँगलयय त्रैलोक्य जिनालय मंगल जिन प्रतिमा भव्येश
मंगलमय त्रिकाल चौबीसी मंगल समवशरण सविशेश
मंगल पंचमेरु जिन मन्दिर, मंगल नन्दीश्वर द्वीपेश
मंगल सोलह कारण दशलक्षण, रत्नत्रय व्रत भव्येश
मंगल सहस्त्र कूट चैत्यालय मँगल मानस्तम्भ हमेश
मंगलमय केवल श्रुत केवलि मंगल ऋद्धिधारी विद्येश
मंगलमय पांचों कल्याणक, मंगल जिन शासन उद्देश
मंगलमय निर्वाण भूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष
सर्व सिद्धि मंगल के दाता हरो अमंगल हे विश्वेश
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊँ तब तक पूजूँ हे ब्रह्मेश

卐 श्री देव शास्त्र गुरु पूजन 卐

वीतराग अरिहंत देव के पावन चरणों में वन्दन।
द्वादशांग श्रुत श्री जिनवाणी जग कल्याणी का अर्चन ॥

अभिषेक करते समय साक्षात अरहंत के स्पर्श जैसा भाव होता है।

द्रव्य भाव संयममय मुनिवर श्री गुरु को मैं करु नमन।
देव शास्त्र गुरु के चरणों का बारम्बार करु पूजन॥

ॐ ह्री श्री देव शास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अत्र मम् सन्निहितोभव भव वषट्।

आवरण ज्ञान पर मेरे है, हूँ जन्म मरण से सदा दुखी।
जब तक मिथ्यात्व हृदय में है यह चेतन होगा नहीं सुखी॥
ज्ञानावरणी के नाश हेतु चरणों में जल करता अर्पण।
देव शास्त्र गुरु के चरणों का बारम्बार करु पूजन॥

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन पर जब तक छाया है संसार ताप तब तक ही है।
जब तक तत्वों का ज्ञान नहीं मिथ्यात्व पाप तब तक ही है॥
सम्यक् श्रद्धा के चन्दन से मिट जायेगा दर्शनावरण।
देव शास्त्र गुरु के चरणों का बारम्बार करूँ पूजन॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यों दर्शनावरण कर्म विनाशनाय चंदनं नि०।

निज स्वभाव चैतन्य प्राप्ति हित जागे उर में अन्तरबल।
अक्षय सुख अनन्त का घाता वेदनीय है कर्म प्रबल॥
अक्षत चरण चढ़ाकर प्रभुवर वेदनीय का करूँ दमन।देव०।

ॐ ह्री श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो वेदनीय कर्म विनाशनाय अक्षतम् नि०।

मोहनीय के कारण यह चेतन अनादि से भटक रहा।
निज स्वभाव तज पर द्रव्यों की ममता में ही अटक रहा।
भेदज्ञान की खड्ग उठाकर मोहनीय का करूं हनन॥देव॥

ॐ ह्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहनीय कर्म विनाशनाय पुष्पम् नि०।

वीतरागी का स्पर्श करते ही रागादि भाव नष्ट हो जाते हैं।

आयु कर्म के बंध उदय में सदा उलझता आया हूँ।
चारों गतियों में डोला हूं निज को जान न पाया हूँ ॥
अजर अमर अविनाशी पद हित आयु कर्म का करूँ शमन ।देव.॥
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो आयु कर्म विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

नाम कर्म के कारण मैंने जैसा भी शरीर पाया ।
उस शरीर को अपना समझा निज चेतन को विसराया ॥
ज्ञान दीप के चिर प्रकाश से नाम कर्म करूँ दमन ।
देव शास्त्र गुरु के चरणों का बारम्बार करूँ पूजन ॥
ॐ ह्री श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो नाम कर्म विनाशनाय दीपम् नि० ।

उच्च नीच कुल मिला बहुत पर निज कुल जान नहीं पाया ।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य निरंजन सिद्ध स्वरूप न उर भाया ॥
गोत्र कर्म का धूम्र उड़ाऊं निज परणति में करूं रमण ।देव शास्त्र·
ॐ ह्री देव शास्त्र गुरुभ्यो गोत्र कर्म विनाशनाय धूपम् नि० ।

दान लाभ भोगोपभोग बल मिलने में जो बाधक है ।
अन्तराय के सर्वनाश का आत्मज्ञान ही साधक है ॥
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य सुख पाऊं निज आराधक बन ।देव शास्त्र.
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अन्तराय कर्म विनाशनाय फलम् नि० ।

कर्मोदय में मोह रोष से करता है शुभ अशुभ विभाव ।
पर में इष्ट अनिष्ट कल्पना रागद्वेष विकारी भाव ॥
भाव कर्म करता जाता है जीव भूल निज आत्मस्वभाव ।
द्रव्यकर्म बंधते हैं तत्क्षण शाश्वत सुख का करें अभाव ॥
चार घातिया चउ अघातिया अष्टकर्म का करूँ हनन ।
देव शास्त्र गुरु के चरणों का बारम्बार करूं पूजन ॥
ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो सम्पूर्ण अष्टकर्म विनाशनाय अर्घम् नि० ।

— ✠ —

रागादि भावों को नष्ट करना ही सच्चा प्रक्षालन है।

(जयमाला)

हे जगबन्धु जिनेश्वर तुमको अब तक कभी नहीं ध्याया।
श्री जिनवाणी बहुत सुनी पर नहीं कभी श्रद्धा लाया॥
परम वीतरागी सन्तों का भी उपदेश न मन भाया।
नरक त्रियँच देव नर गति में भ्रमण किया बहु दुख पाया॥
पाप पुण्य में लीन हुआ निज शुद्ध भाव को विसराया।
इसीलिये प्रभुवर अनादि से भव अटवी में भरमाया॥
आज तुम्हारे दर्शन कर प्रभु मैंने निज दर्शन पाया।
परम शुद्ध चैतन्य ज्ञानघन का बहुमान हृदय आया॥
दो आशीष मुझे हे जिनवर जिनवाणी गुरुदेव महान।
मोह महातम शीघ्र नष्ट हो जाये करूं आत्म कल्याण॥
स्वपर विवेक जगे अन्तर में दो सम्यक् श्रद्धा का दान।
क्षायक हो उपशम हो हे प्रभु क्षयोपमशम सद्दर्शन ज्ञान॥
सात तत्व पर श्रद्धा करके देव शास्त्र गुरु को मानूँ।
निज पर भेद जानकर केवल निज में ही प्रतीत ठानूँ॥
पर द्रव्यों से मैं ममत्व तज आत्म द्रव्य को पहचानूँ।
आत्म द्रव्य को इस शरीर से पृथक् भिन्न निर्मल जानूँ॥
समकित रवि की किरणें मेरे उर अन्तर में करें प्रकाश।
सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर स्वामी पर भावों का करूं विनाश॥
सम्यक् चारित को धारण कर निज स्वरूप का करूं विकास।
रत्नत्रय के अवलम्बन से मिले मुक्ति निर्वाण निवास॥

दोहा

जय जय जय अरहन्त देव जय, जिनवाणी जग कल्याणी।
जय निर्ग्रन्थ महान् सुगुरु, जय जय शाश्वत शिव सुखदानी॥

देव-शास्त्र गुरु का सच्चा श्रद्धान सम्यग्दर्शन है।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु के वचन भाव सहित उरधार।

मन वच तन जो पूजते वे होते भवपार।

इत्याशीर्वादः

जाप्य—ॐ श्री ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः

श्री पंचपरमेष्ठी पूजन

अरहन्त, सिद्ध, आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भव सागर तारणहार नमन॥
मन वच काया पूर्वक करता हूं शुद्ध हृदय से आह्वानन्।
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ सन्निकट होउ मेरे भगवन्॥
निज आत्म तत्व की प्राप्ति हेतु ले अष्ट द्रव्य करता पूजन।
तुव चरणों की पूजन से प्रभु निज सिद्ध रूप का हो दर्शन॥

ॐ ह्रीं अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवोषट्।

ॐ ह्री अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ, तिष्ठ, ठः ठः।

ॐ ह्री अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

मैं तो अनादि से रोगी हूं उपचार कराने आया हूं।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ॥
मैं जन्म जरा मृतु नाश करूँ ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु भव दुख मेटो अन्तरयामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत को द्रव्य, गुण पर्याय से जानने वाला आत्मा को पहिचानता है।

संसार ताप से जल जल कर मैंने अगणित दुख पाये हैं।
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया पर के ही गीत सुहाये हैं।।
शीतल चन्दन है भेंट तुम्हें संसार ताप नाशो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु भव दुख मेटो अन्तरयामी।।

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दम् नि०स्वाहा।

दुखमय अथाह भव सागर में मेरी यह नौका भटक रही।
शुभ अशुभ भाव की भंवरों में चैतन्य शक्ति निज अटक रही।।
तन्दुल हैं धवल तुम्हें अर्पित अक्षय पद प्राप्त करूँ स्वामी।हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि०।

मैं काम व्यथा से घायल हूँ सुख की न मिली किंचित् छाया।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ तुमको पाकर मन हर्षाया।।
मैं काम भाव विध्वंस करूँ ऐसा दो शील हृदय स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो काम वाण, विध्वंसनाय पुष्पम् नि० स्वाहा

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूँ चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी तृप्त नहीं हो पाया हूँ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

मोहान्ध महा अज्ञानी मैं निज को पर का कर्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने निज आतम स्वरूप न पहिचाना।।
मैं दीप समर्पण करता हूँ मोहान्धकार क्षय हो स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

कर्मों की ज्वाला धधक रही संसार बढ़ रहा है प्रतिपल।
संवर से आश्रव को रोकूँ निर्जरा सुरभि महके पल पल।।
मैं धूप चढ़ाकर अब आठों कर्मों का हनन करूँ स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा

जिनेन्द्र देव के बताये मार्ग पर चलना ही सच्ची विनय है।

निज आत्म तत्व का मनन करूँ चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा ज्ञान चरित्र श्रेष्ठ सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का॥
उतम फल चरण चढ़ाता हूँ निर्वाण महाफल हो स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं श्री पंच परमेष्ठिभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०

जल चन्दन, अक्षत, पुष्प, दीप नैवेद्य, धूप, फल लाया हूँ।
अब तक के संचित कर्मों का मैं पुञ्ज जलाने आया हूं॥
यह अर्घ समर्पित करता हूँ अविचल अनर्घ पद दो स्वामी। हे पंच

ॐ ह्रीं पंच परमेष्ठिभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

☼ जयमाला ☼

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो निज ध्यान लीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर अरहन्त देव को नमस्कार॥
अविचल अविकारी अविनाशी निज रूप निरञ्जन निराकार।
जय अजर अमर हे मुक्ति कन्त भगवन्त सिद्ध को नमस्कार॥
छतीस सुगुण से तुम मण्डित निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे मुक्ति वधू के अनुरागी आचार्य सुगुरु को नमस्कार॥
एकादश अङ्ग पूर्व चौदह के पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यान्तर मुनि मुद्रा महान श्री उपाध्याय को नमस्कार॥
व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म वैराग्य भावना हृदय धार।
हे द्रव्य भाव संयममय मुनिवर सर्वसाधु को नमस्कार॥
बहुपुण्य संयोग मिला नरतन जिनश्रुत जिनदेव चरण दर्शन।
हो सम्यक् दर्शन प्राप्त मुझे तो सफल बने मानव जीवन॥
निज पर का भेद जानकर मैं निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेद ज्ञान के द्वारा मैं निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ॥
निज में रत्नत्रय धारणकर निज परिणति को ही पहचानूँ।
पर परणति से हो विमुख सदा निज ज्ञान तत्व को ही जानूँ॥

जब ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता विकल्प तज शुल्क ध्यान मैं ध्याऊंगा।
तब चार घातिया क्षय करके अरहन्त महापद पाऊँगा॥
है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा हे प्रभु कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा फल पाने को अब निज स्वभाव में आऊंगा॥
अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु हे प्रभु मैंने की है पूजन।
तब तक चरणों में ध्यान रहे जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

हे मङ्गल रूप अमङ्गल हर मङ्गलमय मङ्गल गान करूँ।
मङ्गल में प्रथम श्रेष्ठ मङ्गल नवकार मन्त्र का ध्यान करूँ॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

जाप्य—ॐ ह्रीं श्री अ सि. आ उ. साय नमः

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन

सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सुजात स्वयंप्रभु देव।
ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सौरी प्रभु विशाल कीर्ति सुदेव॥
श्री वज्रधर, चन्द्रानन् प्रभु चन्द्रबाहु, भुजङ्गम् ईश।
जयति ईश्वर जयति नेमप्रभु वीरसेन महाभद्र महीश॥
पूज्य देवयश अजितवीर्य जिन बीस जिनेश्वर परम महान।
विचरण करते हैं विदेह में शाश्वत तीर्थङ्कर भगवान॥
नहीं शक्ति जाने की स्वामी यहीं वन्दना करूँ प्रभो।
स्तुति पूजन अर्चन करके शुद्ध भाव उर भरूँ प्रभो॥१॥

ॐ ह्रीं श्री विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थङ्कर जिन समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थङ्कर जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थङ्कर जिन समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

निर्मल सरिता का प्रासुक जल लेकर चरणों में आऊँ ।
जन्म जरादिक क्षय करने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शीतल चन्दन दाह निकन्दन लेकर चरणों में आऊँ ।
भव सन्ताप दाह हरने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय भवताप विनाशनाय चंदनं नि० ।

स्वच्छ अखण्डित उज्ज्वल तंदुल लेकर चरणों में आऊँ ।
अनुपम अक्षय पद पाने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

शुभ्र शील के पुष्प मनोहर लेकर चरणों में आऊँ ।
काम शत्रु का दर्प नशाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ ।
विद्यमान बीसों तीर्थंकंकर की पूजन कर हर्षाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय काम वाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

परम शुद्ध नैवेद्य भाव उर लेकर चरणों में आऊँ ।
क्षुधा रोग का मूल मिटाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ ॥

सोमंधर, युगमंधर, आदिक, अजित वीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्।

जग मग अन्तर दीप प्रज्ज्वलित लेकर चरणों में आऊँ।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि.

कर्म प्रकृतियों का ईंधन अब लेकर चरणों में आऊँ।
ध्यान अग्नि में इसे जलाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थकंर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय अष्टकर्म दहनाय धूपम् नि०।

निर्मल सरस विशुद्ध भाव फल लेकर चरणों में आऊँ॥
परम मोक्ष फल शिव सुख पाने श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सोमंधर, युगमँधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थकंर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।

अर्घ पुञ्ज वैराग्य भाव का लेकर चरणों में आऊँ।
निज अनर्घ पदवी पाने को श्री जिनवर के गुण गाऊँ॥
सोमंधर, युगमंधर, आदिक अजित वीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थकंर की पूजन कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि०।

(जयमाला)

मध्यलोक में असंख्यात सागर अरु असंख्यात हैं द्वीप।
जम्बू द्वीप धातकी खण्ड अरु पुष्करार्ध यह ढाई द्वीप॥

जिनदेव की पहचान से अपनी आत्मा की पहिचान होती है।

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं तीनों लोकों में अति ख्यात।
मेरु सुदर्शन, विजय, अचल, मंदर विद्युन्माली विख्यात॥
एक एक में हैं बत्तीस विदेह क्षेत्र अतिशय सुन्दर।
एक शतक अरु साठ क्षेत्र हैं, चौथा काल जहां सुखकर॥
पाँच भरत अरु पंच ऐरावत कर्म भूमियाँ दस गिनकर।
एक साथ हो सकते हैं तीर्थंकर एक शतक सत्तर॥
किन्तु न्यूनतम बीस तीर्थंकर विदेह में होते हैं।
सदा शाश्वत विद्यमान सर्वज्ञ जिनेश्वर होते हैं।
एक मेरु के चार विदेहों में रहते तीर्थंकर चार।
बीस विदेहों में तीर्थंकर बीस सदा ही मङ्गलकार॥
कोटि पूर्व की आयु पूर्ण कर होते पूर्ण सिद्ध भगवान्।
तभी दूसरे इसी नाम के होते हैं अरहन्त महान्॥
श्री जिनदेव महा मङ्गलमय वीतराग सर्वज्ञ प्रधान।
भक्ति भाव से पूजन करके मैं चाहूँ अपना कल्याण॥

विरहमान श्री बीस जिनेश्वर भाव सहित गुण गान करूँ।
जो विदेह में विद्यमान हैं उनका जय जय गान करूँ॥
सीमन्धर को वन्दन करके मैं अनादि मिथ्यात्व हरूँ।
जुगमन्धर की पूजन करके समकित अङ्गीकार करूँ॥
श्री बाहु को सुमिरण करके अविरति हर व्रत ग्रहण करूँ।
श्री सुबाहु पद अर्चन करके तेरह विधि चारित्र धरूँ॥
प्रभु सुजात के चरण पूजकर पंच प्रमाद अभाव करूँ।
देव स्वयंप्रभ को प्रणाम कर दुखमय सर्व विभाव हरूँ॥
ऋषभानन की स्तुति करके योग कषाय निवृत्ति करूँ।
पूज्य अनन्त वीर्य पद वन्दूं पथ निर्ग्रन्थ प्रवृत्ति करूँ॥

देव सौरिप्रभ चरणाम्बुज दर्शन कर पाँचों बन्ध हरूँ।
परम विशाल कीर्ति की जय हो निज को पूर्ण अबंध करूँ॥
श्री वज्रधर सर्व दोष हर सब संकल्प विकल्प हरूँ।
चन्द्रानन के चरण चित्त धर निर्विकल्पता प्राप्त करूँ॥
चन्द्रबाहु को नमस्कार कर पाप पुण्य सब नाश करूँ।
श्री भुजङ्ग पद मस्तक धरकर निज चिद्रूप प्रकाश करूँ॥
ईश्वर प्रभु की महिमा गाऊँ आत्म द्रव्य का भान करूँ।
श्री नेमि प्रभु के चरणों में चिदानन्द का ध्यान करूँ॥
वीरसेन के पद कमलों में उर चंचलता दूर करूँ।
महाभद्र की भव्य सुछवि लख कर्म घातिया चूर करूँ॥
श्री देवयश सुयश गान कर शुद्ध भावना हृदय धरूँ।
अजितवीर्य का ध्यान लगाकर गुण अनंत निज प्रगट करूँ॥
बीस जिनेश्वर समवशरण लख मोहमयी संसार हरूँ।
निज स्वभाव साधन के द्वारा शीघ्र भवार्णव पार करूँ॥
स्वगुण अनन्त चतुष्टय धारी वीतराग को नमन करूँ।
सकल सिद्धि मङ्गल के दाता पूर्ण अर्घ के सुमन धरूँ॥
ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यम् नि०।

दोहा

जो विदेह के बीस जिनेश्वर की महिमा उर में धरते।
भाव सहित प्रभु पूजन करते मोक्ष लक्ष्मी को वरते॥

✠ इत्याशीर्वादः ✠

जाप्य– ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नमः

सिद्ध समान परम पद अपना, यह निश्चय कब लाओगे।
द्रव्यदृष्टि बन निज स्वरूप को, कब तक अरे सजाओगे॥

श्री सीमन्धर जिन पूजन

जय जयति जय श्रेयांस नृपसुत सत्य देवी नन्दनम् ।
चऊ घाति कर्म विनष्ट कर्त्ता ज्ञान सूर्य निरञ्जनम् ॥
जय जय विदेही नाथ जय जय धन्य प्रभु सीमन्धरम् ।
सर्वज्ञ केवल ज्ञान धारी जयति जिन तीर्थङ्करम् ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिन अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

यह जन्म मरण का रोग, हे प्रभु नाश करूँ ।
दो समरस निर्मल नीर, आत्म प्रकाश करूँ ॥
शाश्वत जिनवर भगवन्त, सीमन्धर स्वामी ।
सर्वज्ञ देव अरहन्त, प्रभु अन्तरयामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन हरता तनताप, तुम भवताप हरो ।
निज सम शीतल हे नाथ, मुझको आप करो ॥
शाश्वत जिनवर भगवन्त, सीमन्धर स्वामी ॥
सर्वज्ञ देव अरहन्त, प्रभु अन्तरयामी ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय संसारताप बिनाशनाय चन्दनम् नि० ।

इस भव समुद्र से नाथ, मुझको पार करो ।
अक्षय पद दे जिनराज, अब उद्धार करो ॥ शाश्वत जिनवर...

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० स्वाहा ।

कन्दर्प दर्प हो चूर, शील स्वभाव जगे ।
भवसागर के उस पार, मेरी नाव लगे ॥ शाश्वत जिनवर...

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

आत्म स्वरूपवलंबन भावों, से विभाव परिहार करो।
रत्नत्रय का वैभव पाकर, भव दुख सागर पार करो॥

यह क्षुधा ज्वाल विकराल, हे प्रभु शान्त करूँ।
चरु चरण चढ़ाऊँ देव, मिथ्या भ्रान्ति हरूँ॥ शाश्वत जिनवर...
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

मद मोह कुटिल विषरूप, छाया अंधियारा।
दो सम्यक् ज्ञान प्रकाश, फैले उजियारा॥ शाश्वत जिनवर...
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

कर्मों की शक्ति विनष्ट, अब प्रभुवर करदो।
मैं धूप चढ़ाऊँ नाथ, भव बाधा हरदो॥
शाश्वत जिनवर भगवन्त, सीमन्धर स्वामी।
सर्वज्ञ देव अरिहन्त, प्रभु अन्तरयामी॥
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपम् नि०स्वाहा।

फल चरण चढ़ाऊँ नाथ, फल निर्वाण मिले।
अन्तर में केवल ज्ञान, सूर्य महान खिले॥ शाश्वत जिनवर...
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा।

जब तक अनर्घ पद प्राप्त, हो न मुझे सत्वर।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ नित्य, चरणों में प्रभुवर॥ शाश्वत जिनवर...
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० स्वाहा।

गर्भ

जम्बूदीप सुमेरु सुदर्शन पूर्व दिशा में क्षेत्र विदेह।
देश पुष्कलावती राजधानी है पुण्डरीकिणी गेह॥
रानी सत्यवती माता के उर में स्वर्ग त्याग आये।
सोलह स्वप्न लखे माता ने रत्न सुरों ने वर्षाये॥
ॐ ह्रीं गर्भ मङ्गल प्राप्ताय श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

संवरभाव जगाओगे तो, आस्रव बंध रुकेगा ही।
भाव निर्जरा अपनायी तो, कर्म निर्जरित होगा ही॥

नृप श्रेयांसराय के गृह में तुमने स्वामी जन्म लिया।
इंद्र सुरों ने जन्म महोत्सव कर निज जीवन धन्य किया॥
गिरि सुमेरु पर पांडुक वन में रत्न शिलासुविराजित कर।
क्षीरोदधि से न्हवन किया प्रभु दसों दिशा अनुरंजित कर॥

ॐ ह्रीं जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

एक दिवस नभ में देखा बादल क्षण भर में हुए विलीन।
बस अनित्य संसार जान वैराग्य भाव में हुए सुलीन॥
लौकान्तिक देवर्षि सुरों ने आकर जय जयकार किया।
अतुलित वैभव त्याग आपने वन में जा तप धार लिया॥

ॐ ह्रीं तपो मङ्गल मण्डिताय श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घम् नि०।

आतम ध्यानमय शुक्ल ध्यान धर कर्म घातिया नाश किया।
त्रेसठ कर्म प्रकृतियाँ नाशीं केवल ज्ञान प्रकाश लिया॥
समवशरण की गन्ध कुटी में अन्तरीक्ष प्रभु रहे विराज।
मोक्षमार्ग सन्देश दे रहे भव्य प्राणियों को जिनराज॥

ॐ ह्रीं श्री केवल ज्ञान मण्डिताय श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय अर्घम् नि०।

☼ जयमाला ☼

शाश्वत विद्यमान तीर्थङ्कर सीमन्धर प्रभु दया निधान।
दे उपदेश भव्य जीवों को करते सदा आप कल्याण॥
कोटि पूर्व की आयु पांच सौ धनुष स्वर्ण सम काया है।
सकल ज्ञेय ज्ञाता होकर भी निज स्वरूप ही भाया है॥
देव तुम्हारे दर्शन पाकर जागा है उर में उल्लास।
चरण कमल में नाथ शरण दो सुनो प्रभो मेरा इतिहास॥
मैं अनादि से था निगोद में प्रति पल जन्म मरण पाया।
अग्नि, भूमि, जल, वायु, वनस्पति कायक थावर तन पाया॥

शुद्धातम ही परमज्ञान है, शुद्धातम पवित्र दर्शन ।
यही एक चारित्र परम हैं, यही एक निर्मल तप धन ॥

दो इन्द्रिय त्रस हुआ भाग्य से पार न कष्टों का पाया ।
जन्म तोन इन्द्रिय भी धारा दुख का अन्त नहीं आया ॥
चौ इन्द्रिय धारी बनकर मैं विकलत्रय में भरमाया ।
पचेन्द्रिय पशु सैनी और असैनी हो बहु दुख पाया ॥
बड़े भाग्य से प्रबल पुण्य से फिर मानव पर्याय मिली ।
मोह महामद के कारण हो नहीं ज्ञान की कली खिली ॥
अशुभ पाप आश्रव के द्वारा नर्क आयु का बंध सहा ।
नारकीय बन नरको में रह ऊष्ण शीत दुख द्वन्द सहा ॥
शभ पुण्याश्रव के कारण मैं स्वर्ग लोग तक हो आया ।
ग्रैवेयक तक गया किन्तु शाश्वत सुख चैन नहीं पाया ॥
देख दूसरे के वैभव को अर्तरौद्र परिणाम किया ।
देव आयु क्षय होने पर ऐकेन्द्रिय तक में जन्म लिया ॥
इस प्रकार धर धर अनन्त भव चारों गतियों में भटका ।
तीव्र मोह मिथ्यात्व पाप के कारण इस जग में अटका ॥
महापुण्य के शुभ सँयोग से फिर यह नर तन पाया है ।
देव आपके चरणों को पाकर यह मन हर्षाया है ॥
जनम जनम तक भक्ति तुम्हारी रहे हृदय में हे जिनदेव ।
वीतराग सम्यक् पथ पर चल पाऊँ सिद्ध स्वपद स्वयमेव ॥
भरत क्षेत्र से कुन्द कुन्द मुनि ने विदेह को किया प्रयाण ।
प्रभो तुम्हारे समवशरण के दर्शन कर हो गये महान ॥
आठ दिवस चरणों में रहकर ओंकार ध्वनि सुनी प्रधान ।
भरत क्षेत्र में लौटे मुनिवर सुनकर वीतराग विज्ञान ॥
करुणा जागी जीवों के प्रति रचा शास्त्र श्री प्रवचन सार ।
समयसार पचास्तिकाय श्रुत नियमसार प्राभृत सुखकार ॥
रचे देव चौरासी पाहुड़ प्रभु वाणी के ले आधार ।
निश्चयनय भूतार्थ बताया अभूतार्थ सारा व्यवहार ॥
पाप पुण्य दोनों बन्धन हैं जग में भ्रमण कराते हैं ।
राग मात्र को हेय जान ज्ञानी निज ध्यान लगाते हैं ॥
निज का ध्यान लगाया जिसने उसको प्रगटा केवल ज्ञान ।
परम समाधि महा सुखकारी निश्चय पाता पद निर्वाण ॥

दर्शनीय श्रवणीय आत्मा, वंदनीय मननीय महान ।
शान्ति सिन्धु सुख सागर अनुपम, नव तत्वों में श्रेष्ठ प्रधान ।।

इस प्रकार इस भरत क्षेत्र के जीवों पर अनन्त उपकार ।
हे सीमन्धर नाथ आपके, करो देव मेरा उद्धार ।।
समकित ज्योति जगे अन्तर में हो जाऊँ मैं आप समान ।
पूर्ण करो मेरी अभिलाषा हे प्रभु सीमन्धर भगवान ।।
ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर जिनेन्द्राय पूणार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।
सीमन्धर प्रभु के चरण भाव सहित उरधार ।
मन वच तन जो पूजते वे होते भवपार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य-　　ॐ ह्रीं श्री सीमन्धर नाथ जिनेन्द्राय नमः

श्री कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजन

तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय को वंदन ।
ऊर्ध्व मध्य पाताल लोक के जिन भवनों को करूँ नमन ।।
हैं अकृत्रिम आठ कोटि अरु छप्पन लाख परम पावन ।
संतानवें सहस्र चार सौ इक्यासी गृह मन भावन ।।
कृत्रिम अकृत्रिम जो असंख्य चैत्यालय हैं उनको वंदन ।
विनय भाव से भक्तिपूर्वक नित्य करूँ मैं जिन पूजन ।।

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं तीन लोकसंबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालस्थ जिन बिम्ब समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

भव बीजांकुर पैदा करने वाला, राग द्वेष हरलूँ।
वीतराग बन साम्यभाव से, इस भव का अभाव करलूँ॥

सम्यक् जल की निर्मल उज्ज्वलता से जन्म जरा हरलूँ।
मूल धर्म का सम्यक् दर्शन हे प्रभु हृदयंगम करलूँ॥
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वंदन करलूँ।
ज्ञान सूर्य की परम ज्योति पा भव सागर के दुख हरलूँ॥

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालस्थ जिन बिम्बेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चंदन की पावन शीतलता से भव भय हरलूँ।
वस्तु स्वभाव धर्म है सम्यक् ज्ञान आत्मा में भरलूँ॥
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वंदन करलूँ।
ज्ञान सूर्य की परम ज्योति पा भव सागर के दुख हरलूँ॥

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चारित की अखंडता से अक्षय पद आदरलूँ।
साम्यभाव चारित्र धर्म पा वीतरागता को वरलूँ॥ तीन लोक...

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

शील स्वभावी पुष्प प्राप्त कर काम शत्रु को क्षय करलूँ।
अणुव्रत शिक्षाव्रत गुणव्रत धर पंच महाव्रत आचरलूँ॥ तीन लोक...

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधो कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

संतोषामृत के चरु लेकर क्षुधा व्याधि को जय करलूँ।
सत्य शौचतप त्याग क्षमा से भाव शुभाशुभ सब हरलूँ॥ तीन लोक

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

पापों की जड़ पर प्रहार कर, पुण्य मूल भी छेद करो।
मोक्ष हेतु संवर के द्वारा, आश्रव का उच्छेद करो॥

ज्ञान दीप के चिर प्रकाश से मोह ममत्व तिमिर हरलूं।
रत्नत्रय का साधन लेकर यह संसार पार करलूं॥ तीन लोक...

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

ध्यान अग्नि में कर्म धूप धर अष्टकर्म अघ को हरलूं।
धर्म श्रेष्ठ मंगल को पा शिवमय सिद्धत्व प्राप्त करलूं॥ तीन...

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालस्थ जिन बिम्बेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

भेद ज्ञान विज्ञान ज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त करलूं।
परम भाव संपदा सहजशिव महा मोक्षफल को वरलूं॥ तीन...

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।

द्वादश विधितप अर्घ संजोकर जिनवर पद अनर्घ वरलूं।
मिथ्या, अविरति, पँच प्रमाद, कषाय योग बंधन हरलूं॥ तीन..

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालस्थ जिन बिम्बेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि०।

☼ जयमाला ☼

इस अनंत आकाश बीच में तीन लोक है पुरुषाकार।
तीनों वातवलय से वेष्टित, सिंधु बीचज्यों बिंदु प्रसार॥
ऊर्ध्व लोक छह, अधोसात है, मध्य एक राजू विस्तार।
चौदह राजु उतंग लोक है, त्रसनाड़ी त्रस का आधार॥
तीन लोक में भवन अकृत्रिम आठ कोटि अरु छप्पन लाख।
संतानवे सहस्र चार सौ इक्यासी जिन आगम साख॥
ऊर्ध्व लोक में कल्पवासियों के जिन गृह चौरासी लक्ष।
संतानवे सहस्र तेईस जिनालय हैं शाश्वत प्रत्यक्ष॥

बार बार तू डूब रहा है, बैठ उपल की नावो में।
शिव सुख सुधा समुद्र स्वयं में, खोज रहा पर भावों में॥

अधो लोक में भवन वासी के लाख बहात्तर, करोड़ सात।
मध्य लोक के चार शतक अट्ठावन चैत्यालय विख्यात॥
जंबूघातकि पुष्करार्ध में पंचमेरु के जिन गृह ख्यात।
जंबूवृक्ष शाल्मलितरु अरु विजयारध के अति विख्यात॥
वक्षारों गजदंतो इष्वाकारों के पावन जिनगेह।
सर्वकुला चल मानुषोत्तर पर्वत के वंदू धरनेह॥
नंदीश्वर कुन्डलवर द्वीप रुचकवर के जिन चैत्यालय।
ज्योतिष व्यंतर स्वर्ग लोक अरु भवन वासि के जिन आलय॥
एक एक में एक शतक अरु आठ आठ जिन मूर्त्ति प्रधान।
अष्ट प्राप्तिहार्यों वसु मंगल द्रव्यों से अति शोभा वान॥
कुल प्रतिमा नौ सौ पच्चीस करोड़ तिरेपन लाख महान।
सत्ताईस सहस्र अरु नौ सौ अड़तालीस अकृत्रिम जान॥
उन्नत धनुष पांच सौ पदमासन हैं रत्नमयी प्रतिमा।
वीतराग अर्हंत मूर्त्ति की है पावन अचिन्त्य महिमा॥
असंख्यात, संख्यात जिन भवन तीन लोक में शोभित हैं।
इन्द्रादिक सुर नर विद्याधर मुनि वंदन कर मोहित हैं॥
देव रचित या मनुज रचित, हैं भव्य जनों द्वारा वंदित।
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय की पूजन कर मैं हूँ हर्षित॥
ढाइद्वीप में भूत भविष्यत वर्त्तमान के तीर्थङ्कर।
पंचवर्ण के मुझे शक्ति दे मैं निज पद पाऊँ जिनवर॥
जिन गुण संपत्ति मुझे प्राप्त हो परम समाधि मरण हो नाथ।
सकल कर्म क्षय हों प्रभु मेरे बोधि लाभ हो हे जिननाथ॥

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यम् नि०।

ज्ञानी स्वगुण चिन्तवन करता, अज्ञानी पर का चिन्तन।
ज्ञानी आत्म मनन करता है, अज्ञानी विभाव मंथन ।।

कृत्रिम अकृत्रिम जिन भवन भाव सहित उर धार।
मनवचतन जो पूजते वे होते भव पार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं णमोकार मंत्र ।

श्री सिद्ध पूजन

हे सिद्ध तुम्हारे बन्दन से उर में निर्मलता आती है।
भव भव के पातक कटते हैं पुण्यावलि शीश झुकाती है ।।
तुम गुण चिन्तन से सहज देव होता स्वभाव का भान मुझे ।
हे सिद्ध समान स्वपद मेरा हो जाता निर्मल ज्ञान मुझे ।।
इसलिये नाथ पूजन करता, कब तुम समान मैं बन जाऊँ ।
जिस पथ पर चल तुम सिद्ध हुए, मैं भी चल सिद्ध स्वपद पाऊँ ।।
ज्ञानावरणादिक अष्ट कर्म को नष्ट करूँ ऐसा बल दो।
निज अष्ट स्वगुण प्रगटें मुझमें, सम्यक् पूजन का यह फल हो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्म मलिन हूँ जन्म जरा मृतु को कैसे कर पाऊँ क्षय।
निर्मल आत्म ज्ञान जल दो प्रभु जन्म मृत्यु पर पाऊँ जय।।
अजर, अमर, अविकल, अविकारी, अविनाशी अनंत गुण धाम।
नित्य निरंजन भव दुख भंजन ज्ञान स्वभावी सिद्ध प्रणाम।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम के जाए बिन, सच्ची सुख शान्ति नहीं होती।
सम्यक् दर्शन हो जाने पर, फिर भव भ्रान्ति नहीं होती॥

शीतल चंदन ताप मिटाता, किन्तु नहीं मिटता भव ताप।
निज स्वभाव का चांदन दो प्रभु मिटे राग का सब सन्ताप॥अजर

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् संसार ताप विनाशनाय चदनं नि।

उलझा हूं संसार चक्र में कैसे इससे हो उद्धार।
अक्षय तन्दुल रत्नत्रय दो हो जाऊँ भव सागर पार॥ अजर...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्टिन् अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि०।

काम व्यथा से मैं घायल हूँ कैसे करूँ काम मद नाश।
विमल दृष्टि दो ज्ञान पुष्प दो काम भाव हो पूर्ण विनाश॥अजर

ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् काम, वाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

क्षुधा रोग के कारण मेरा तृप्त नहीं हो पाया मन।
शुद्ध भाव नैवेद्य मुझे दो सफल करूँ प्रभु यह जीवन॥
अजर अमर अविकल अविकारी, अविनाशी अनन्त गुण धाम।
नित्य निरंजन भव दुख भंजन ज्ञान स्वभावी सिद्ध प्रणाम॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्।

मोह रूप मिथ्यात महातम अन्तर में छाया घनघोर।
ज्ञान दीप प्रज्वलित करो प्रभु प्रकटे समकित रवि का भोर॥अजर.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् मोहान्धकार विनाशनाय दीपं।

कर्म शत्रु निज सुख के घाता इनको कैसे नष्ट करूँ।
शुद्ध धूप दो ध्यान अग्नि में इन्हें जला भव कष्ट हरूँ॥ अजर.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अष्ट कर्म विध्वंशनाय.धूपम् नि.।

निज चैतन्य स्वरूप न जाना कैसे निज में आऊँगा।
भेद ज्ञान फल दो हे स्वामी स्वयं मोक्ष फल पाऊँगा॥ अजर...

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्ष फल प्राप्तये फलम्। नि.।

सह अस्तित्व समन्वय होगा, संयममय अनुशासन से ।
सत्य अहिंसा अपरिग्रह, अस्तेय शील के शासन से ।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ाऊँ अष्ट कर्म का हो संहार ।
निज अनर्घ पद पाऊँ भगवन् सादि अनन्त परम सुखकार ।।अजर.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि. ।

☸ जयमाला ☸

मुक्तिकन्त भगवन्त सिद्ध को मन वच काया सहित प्रणाम ।
अर्ध चन्द्रसम सिद्ध शिला पर आप विराजे आठों याम ।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय मिटा ।
चार घातिया नष्ट हुए तो फिर अरहन्त रूप प्रगटा ।।
वेदनीय अरु आयु नाम अरु गोत्र कर्म का नाश किया ।
चऊ अघातिया नाश किये तो स्वयं स्वरूप प्रकाश किया ।।
अष्ट कर्म पर विजय प्राप्त कर अष्ट स्वगुण तुमने पाये ।
जन्म मृत्यु का नाश किया निज सिद्ध स्वरूप स्वगुण भाये ।।
निज स्वभाव में लीन विमल चैतन्य स्वरूप अरूपी हो ।
पूर्ण ज्ञान हो पूर्ण सुखी हो पूर्ण बली चिद्रूपी हो ।।
वीतराग हो सर्व हितैषी राग द्वेष का नाम नहीं ।
चिदानन्द चैतन्य स्वभावी कृतकृत्य कुछ काम नहीं ।।
स्वयं सिद्ध हो स्वयं बुद्ध हो स्वयं श्रेष्ठ समकित आगार ।
गुण अनन्त दर्शन के स्वामी तुम अनन्त गुण के भण्डार ।।
तुम अनन्त बल के हो धारी ज्ञान अनन्तानन्त अपार ।
बाधा रहित सूक्ष्म हो भगवन् अगुरुलघु अवगाह उदार ।।
सिद्ध स्वगुण के वर्णन तक की मुझ में प्रभुवर शक्ति नहीं ।
चलूँ तुम्हारे पथ पर स्वामी ऐसी भी तो भक्ति नहीं ।।
देव तुम्हारा पूजन करके हृदय कमल मुसकाया है ।
भक्ति भाव उर में जागा है मेरा मन हर्षाया है ।।

निज में जागरूक रह पंच प्रमादो पर तुम जय पाओ ।
अप्रमत्त बन निज वैभव से सहज पूर्णता को लाओ ।।

तुम गुण का चिन्तवन करे जो स्वयं सिद्ध बन जाता है ।
हो निजात्म में लीन दुखों से छुटकारा पा जाता है ।।
अविनश्वर अविकारी सुखमय सिद्ध स्वरूप विमल मेरा ।
मुझ में है मुझ से ही प्रगटेगा स्वरूप अविकल मेरा ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं परमेष्ठिने पूर्णार्घम् नि० स्वाहा ।

शुद्ध स्वभावी आत्मा निश्चय सिद्ध स्वरूप ।
गुण अनन्तयुत ज्ञानमय है त्रिकाल शिवभूप ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः ।

श्री षोडश कारण पूजन

षोडश कारण पर्व धर्म का करूँ धर्म आराधना ।
मुक्ति सुनिश्चित यदि इस व्रत की हो निजात्म में साधना ।।
दुखी जगत के जीव मात्र का हित हो निज कल्याण हो ।
अविनश्वर लक्ष्मी से परिणय मोक्ष प्रकाश महान हो ।।
पूर्ण ज्ञान कैवल्य अनन्तानंत गुणों का वास हो ।
तीर्थंकर पद दाता सोलह कारण धर्म विकास हो ।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणानि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणानि अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

जो निवृत्ति की परम भक्ति में रहता है तल्लीन सदा।
सिद्ध वधू के दिव्य मुकुट पर होता है आसीन सदा॥

जल की उज्ज्वल निर्मलता से मिथ्या मैल न धो सका।
आकुलता मय जन्म मरण से रहित न अब तक हो सका॥
निर्विकल्प अविकल सुखदायक सोलह कारण भावना।
जय जय तीर्थङ्कर पद दायक सोलह कारण भावना॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो जन्म मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

भाव मरण प्रति समय किया है मैंने काल अनादि से।
भव सन्ताप बढ़ाया चलकर उल्टी चाल अनादि से॥निर्विकल्प..

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्त नहीं हो पाया अब तक पर भावों के जाल से।
यह संसार चक्र मिट जाये धर्म चक्र की चाल से॥ निर्विकल्प...

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

काम वेदना भव पीड़ा मय पर परणति दुखदायिनी।
काम विनाशक निज चेतन पद निज परणति सुखदायिनी॥निर्वि०

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

जग तृष्णा की व्याधि हजारों आकुल करती हैं मुझे।
क्षुधा रोग की माया नागिन भव भव डसती है मुझे॥ निर्विल्प०

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आतम ज्ञान रवि ज्योति प्रकाशित हो अब स्वपर प्रकाशिनी।
शुद्ध परम पद प्राप्ति भावना तम नाशक भव नाशिनी॥निर्वि०

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप वैराग्य न जागा तो फिर तत्त्व मनन कैसा।
निज आतम का भानु न जागा तो फिर निज चिंतन कैसा॥

एक भूल कर्मों की सङ्गति भव वन में उलझा रही।
अग्नि लोह की सङ्गति करके घन की चोटें खा रही॥निर्विकल्प.

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव बिन हुई सदा ही अष्ट कर्म की जीत ही।
महा मोक्ष फल पाने का पुरुषार्थ किया विपरीत ही॥ निर्विकल्प

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम्।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ का अर्थ कभी आया नहीं।
अविचल अविनश्वर अनर्घ पद इसीलिये पाया नहीं॥निर्विकल्प.

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घम्।

☼ जयमाला ☼

भव्य भावना षोडश कारण विमल मुक्ति निर्वाण पथ।
तीर्थंकर पदवी पाने का द्रुत गतिवान प्रयाण रथ॥
रागादिक मिथ्यात्व रहित समकित हो निज की प्रीतिमय।
दोष रहित दर्शन विशुद्धि भावना मुक्ति सङ्गीतमय॥
मन वच काया शुद्धिपूर्वक रत्नत्रय आराध लें।
तप का आदर परम विनय सम्पन्न भावना साध लें॥
पंच व्रत सहित शील स्वगुण परिपूर्ण शीलमय आचरण।
निरतिचार भावना शील व्रत दोष हीन अशरण शरण॥
शास्त्र पठन गुरु नमन पाठ उपदेश स्तवन ध्यानमय।
दो अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना हृदय में ज्ञानमय॥
मित्र भ्रात पत्नी सुत आदिक और विषय संसार के।
इनमे पूर्ण विरक्ति रखें संवेग भावना धार के॥
हम उत्तम मध्यम जघन्य सत् पात्रों को पहिचान ले।
चार दान दे नित्य शक्तितस्त्याग भावना जान लें॥

निज स्वरूप में थिर होना ही है सम्यक् चारित्र प्रधान।
परम ज्योति आनंद पूर्णतः है सम्यक चारित्र महान ।।

मुक्ति प्राप्ति हित ग्रात्म ग्राचरण शक्ति भक्ति अनुरूप हो।
द्वादश विधि से तपश्चरण भावना शक्ति तप रूप हो ।।
इष्ट वियोग ग्रनिष्ट योग उपसर्ग मरण या रोग हो।
साधु समाधि भावना ग्रनुपम कभी न दुखमय योग हो ।।
रोगी मुनि की भक्तिपूर्वक सेवा सुश्रुषा करें।
भव्य भावना वैयावृत्यकरण मन मंजूषा भरें ।।
मन वच काया से विजयी हो करें भक्ति अरिहन्त की।
निर्मल ग्रर्हद भक्ति भावना शुद्ध रूप भगवन्त की ।।
गुरु निर्ग्रन्थ चरण बन्दन पूजन नित विनय प्रणाम हो।
नमस्कार आचार्य भक्ति भावना हृदय वसु याम हो ।।
लोकालोक प्रकाशक जिन श्रुत व्याख्यान अनुरूप हो।
बहु श्रुत भक्ति भावना मन में उपाध्याय मुनि रूप हो ।।
सप्त तत्व पंचास्तिकाय छह द्रव्य आदि सत् जान लें।
जिन आगम का पढ़ना प्रवचन भक्ति भावना मान लें ।।
कार्योत्सर्ग प्रतिक्रमण समता स्वाध्याय वन्दन विमल।
देव स्तुति षट कृत्य भावना आवश्यक निर्मल सरल ।।
जिन ग्रभिषेक नृत्य गीतों वाद्यों से पूजन ग्रर्चना।
श्रुत प्रवचन मार्गप्रभावना जिनालयों की चर्चना ।।
शीलवान चारित्रवान जिन मुनियों का आदर करें।
मृदुल भावना प्रवचनवत्सल मुनि चरणों में शीश धरें ।।
इनके वाह्य आचरण ही से स्वर्ग सम्पदा झिलमिले।
आभ्यन्तर आचरण किया तो मोक्ष लक्ष्मी फल मिले ।।
जितना ग्रंश शुद्धि का होगा उतनी ग्रात्म विशुद्धि रे।
सतत जाग्रत हो निजात्म में मुक्ति प्राप्ति की बुद्धि रे ।।

वीतराग प्रभु की उपासना भव वासना मिटाती है।
विषय भोग भौतिक सुख की याचना सदा भटकाती है।।

पूर्ण शुद्धि होगी निजात्म में तब होगा निर्वाण रे।
ज्ञानानन्दो गुण अनन्तमय स्वयं सिद्ध भगवान रे।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धियादि षोडश कारणेभ्यो पूर्णार्घम् नि० स्वाहा।

सोलह कारण भावना हरे जगत दुख द्वन्द।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर करो सदा आनन्द।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाभ्यो नमः

श्री पंचमेरु पूजन

मध्यलोक में ढाई द्वीप के पंचमेरु को करूँ प्रणाम।
मेरु सुदर्शन विजय, अचल, मन्दिर, विद्युन्माली अभिराम।।
मेरु सुदर्शन एक लाख योजन ऊँचा है महिमावान।
शेष मेरु योजन चौरासी सहस्र उच्च हैं दिव्य महान।।
पांचों मेरु अनादि निधन हैं स्वर्णमयी सुन्दर सुविशाल।
इन पर अस्सी जिन चैत्यालय वन्दू सदा झुकाऊँ भाल।।
इनका पूजन वन्दन करके मैं अनादि अघ तिमिर हरूँ।
मन वच काया शुद्धिपूर्वक श्री जिनवर को नमन करूँ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

यह अथाह भव सागर जल पीकर भी तृषा न शान्त हुई।
जन्म मरण के चक्कर में पड़कर मेरी मति भ्रान्त हुई।।

चिदानंद चैतन्य भाव ही एक जगत में सार है।
आर्त रौद्र ध्यानों से पूरित यह संसार असार है॥

पंचमेरु के अस्सी जिन चैत्यालय को बन्दन करलूँ।
भक्तिभाव से पूजन करके मैं भव सागर दुख हरलूँ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन, विजय, अचल मन्दिर विद्युन्माली, पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

भव दावानल की भीषण ज्वाला में जल जल दुख पाया।
ताप निकंदन निज गुण चन्दन शीतलता पाने आया॥पंचमेरु...

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्वेभ्यो चन्दनम् नि०।

भव समुद्र की चारों गतिमय भंवरों में गोता खाया।
अक्षय पद पाने को हे प्रभु ! कभी न अक्षत गुण भाया॥पंचमेरु०

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अक्षतम् नि०।

काम भाव से भव दुख की श्रृङ्खला बढ़ाता ही आया।
महाशील के सुमन प्राप्त करने को देवशरण आया॥ पंचमेरु...

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्वेभ्यो पुष्पम् नि०।

जग के अनगिनती द्रव्यों को पाकर तृप्त न हो पाया।
इसीलिये निर्लोभ वृत्ति नैवेद्य प्राप्त करने आया॥ पंचमेरु...

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो नैवेद्यम् नि०।

अन्धकार में मार्ग भूलकर भटक भटक अति दुख पाया।
सम्यक् ज्ञान प्रकाश प्राप्त करने को यह दीपक लाया॥पंचमेरु .

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो दीपम् नि०।

विकट जगत जंजाल कर्ममय इसको तोड़ नहीं पाया।
आत्म ध्यान को ध्यान अग्नि में कर्म जलाने मैं आया॥पंचमेरु...

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्वेभ्यो धूपम् नि०।

भव अटवी में अटका अब तक नहीं धर्म का फल पाया।
चिदानन्द चैतन्य स्वभावी मोक्ष प्राप्त करने आया॥ पंचमेरु...

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो फलम् नि०।

एक समय की सामायिक में कितनी शक्ति भरी।
अल्पकाल में मुक्ति प्राप्त हो ऐसी युक्ति खरी॥

क्षमा शील संयम व्रत तप शुचि विनय सत्य उर में लाया।
निज अनन्त सुख पाने को प्रभु मैं वसु द्रव्य अर्घ लाया॥
पंचमेरु के अस्सी जिन चैत्यालय को बन्दन करलूँ।
भक्तिभाव से पूजन करके मैं भव सागर दुख हरलूँ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् नि०।

जम्बूद्वीप सुमेरु सुदर्शन परम पूज्य अति मन भावन।
भू पर भद्रशाल बन पाँच शतक योजन पर नन्दन वन॥
साढ़े बासठ सहस्र योजन ऊँचा है सौमनस सुवन।
फिर छत्तीस सहस्त्र योजन की ऊँचाई पर पाण्डुक बन॥
चारों वन की चार दिशा में एक एक जिन चैत्यालय।
सोलह चैत्यालय हैं अनुपम विनय सहित वन्दू जय जय॥

ॐ ह्रीं जम्बूदीप सुदर्शन मेरु सम्बन्धी षोडश जिन चैत्यालयस्थ जिन विम्बेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

खण्ड घातकी पूर्व दिशा में बिजय मेरु पर्वत पावन।
भू पर भद्रशाल बन पाँच शतक योजन पर नन्दन बन॥
साढ़े पचपन सहस्त्र योजन ऊँचा है सौमनस सुवन।
अट्ठाईस सहस्त्र योजन की ऊँचाई पर पाण्डुक बन॥चारों..

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पूर्व दिशा विजय मेरु सम्बन्धी षोडश जिन चैत्यालयस्थ जिन विम्बेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा।

खण्ड धातकी पश्चिम दिशि में अचल मेरु पर्वत सुन्दर।
विजय मेरु सम इस पर भी हैं सोलह चैत्यालय मनहर॥
प्रातिहार्य आठों वसु मङ्गल द्रव्यों से जिन गृह शोभित।
देव इन्द्र विद्याधर चक्री दर्शन कर होते हर्षित॥ चारों...

वीतराग विज्ञान ज्ञान का रस पीलो तत्काल ।
पाप पुण्य शुभ अशुभ आश्रव के हर डालो जाल ।।

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड पश्चिम दिशा अचल मेरु सम्बन्धी षोडश जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा ।

पुष्करार्ध की पूर्व दिशा में मन्दिर मेरु महासुखमय ।
विजय मेरु सम इसकी रचना सोलह चैत्यालय जय जय ।।
चन्द्र सूर्य सम कान्ति सहित हैं रत्नमयी प्रतिमा से युक्त ।
दस प्रकार के कल्पवृक्ष की मालाओं से है संयुक्त ।। चारों...

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व दिशा मन्दिर मेरु सम्बन्धी षोडश जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा

पुष्करार्ध की पश्चिम दिशि में विद्युन्माली मेरु महान ।
विजय मेरु सम ही रचना है सोलह चैत्यालय छविमान ।
सुर विद्याधर असुर सदा ही पूजन करने आते हैं ।
चारण ऋद्धि धारि मुनि भी दर्शन को आते जाते हैं ।। चारों...

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पश्चिम दिशा विद्युन्माली मेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा ।

☼ जयमाला ☼

एक लाख योजन का जम्बूदीप लोक के मध्य प्रधान ।
चार लाख योजन का सुन्दर द्वीप धातकी खण्ड महान ।।
सोलह लाख सु योजन का है पुष्कर दीप अपूर्व ललाम ।
इनमें पंचमेरु हैं अनुपम परम सुहावन है शुभ नाम ।।
सूर्य चन्द्र देते प्रदक्षिणा करते निशदिन सतत प्रणाम ।
एक मेरु सम्बन्धी सोलह पंचमेरु अस्सी जिन धाम ।।
एक शतक अरु अर्ध शतक योजन लम्बे चौड़े जिन धाम ।
पौन शतक योजन ऊँचे हैं बने अकृत्रिम भव्य ललाम ।।

पुण्य कर्म का पक्षपात अज्ञानी जन को होता है ।
शुद्ध भाव का अवलंबन तो ज्ञानी जन को होता है ॥

एक एक में बिम्ब एक सौ आठ विराजित हैं मनहर ।
आठ सहस्त्र छः सौ चालिस हैं श्री अर्हन्त मूर्ति सुन्दर ॥
धनुष पाँच सौ पद्मासन हैं गून्ज रहा है जय जय गान ।
नृत्य वाद्य गीतों से झंकृत दसों दिशायें महिमावान ॥
तीर्थंकर के जन्मोत्सव की सदा गून्जती जय जयकार ।
धन्य धन्य श्री जिन शासन की महिमा जग में अपरम्पार ॥
नहीं शक्ति हममें जाने की यहीं भाव पूजन करते ।
पुष्पाञ्जलि व्रत की महिमा से भव भव के पातक हरते ॥
पंचमेरु की पूजा करके निज स्वभाव में आ जाऊँ ।
भेद ज्ञान की नवल ज्योति से सम्यक् दर्शन प्रगटाऊँ ॥
सम्यक् ज्ञान चरित्र धार मुनिबन स्वरूप में रम जाऊँ ।
वसु कर्मो का सर्वनाश कर सिद्ध शिला पर जम जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप सम्बन्धी सुदर्शन, विजय, अचल, मन्दिर विद्युन्माली पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो पूर्णार्घम् नि० ।

पंचमेरु जिन धाम की महिमा अगम अपार ।
पुष्पाँजलि व्रत जो करें हो जायें भव पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु जिन चैत्यालयेभ्यो नमः

-: :-

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजन

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर आगम में वर्णित पावन ।
चार दिशा में तेरह तेरह जिन चैत्यालय हैं बावन ॥
एक एक में बिम्ब एक सौ आठ रतनमय है अति भव्य ।
प्रातिहार्य हैं अष्ट मनोहर आठ आठ हैं मङ्गल द्रव्य ॥

आत्म भ्रान्ति के महारोग की औषधि है यथार्थ श्रद्धान।
सम्यक् दर्शन के बिन होता कभी न जीवों का कल्याण ॥

पाँच सहस्र अरु छः सौ सोलह प्रतिमाओं को करूँ प्रणाम।
धनुष पाँच सौ पद्मासन अरिहन्त देव मुद्रा अभिराम ॥
अष्टान्हिका पर्व में इन्द्रादिक सुर जा करते पूजन।
भाव सहित जिन प्रतिमा दर्शन से होता सम्यक् दर्शन ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमा अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि पचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमा अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

समकित जल की पावन धारा निज उर अन्तर में लाऊँ।
मिथ्या भ्रम की धूल हटाऊँ निज स्वरूप को चमकाऊँ ॥
नन्दीश्वर के बावन जिन चैत्यालय बन्दू हर्षाऊँ।
अष्टम द्वीप मनोरम जिन प्रतिमायें पूजूँ सुख पाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिण दिशासुद्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा भाव का शुचिमय चन्दन उर अन्तर में भर लाऊँ।
क्रोध कषाय नष्ट करके मैं शान्ति सिन्धु प्रभु बन जाऊँ ॥नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो भवताप विनाशनाय चन्दनम् नि० स्वाहा।

मार्दव भाव परम उपकारी भाव पूर्ण अक्षत लाऊँ।
मान, कषाय नष्ट करके मैं शुद्धातम के गुण गाऊँ ॥ नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वी द्विपे पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० स्वाहा।

तत्वज्ञान पूर्वक निजात्मा का यथार्थ श्रद्धान करो।
तत्वज्ञान कर महामोक्ष मंगल पथ पर अभियान करो।।

शुद्ध आर्जव भाव पुष्प से सजा हृदय को मैं आऊँ।
सर्वनाश माया कषाय का करूँ सरलता को पाऊँ।। नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० स्वाहा।

सत्य, शौच मय भाव भक्ति नैवेद्य हृदय में भर लाऊँ।
लोभ कषाय नाश करने को सन्तोषामृत पी जाऊँ।।नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० स्वाहा।

द्रव्य भाव संयम तप ज्योति जगा आतम में रम जाऊँ।
मैं अनादि अज्ञान नाश कर सम्यक् ज्ञान रत्न पाऊँ।। नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।

त्याग भाव आकिंचन पाऊँ शुद्ध स्वभाव धूप लाऊँ।
पर विभाव परणति को क्षय कर निज परणति वैभव पाऊँ।।नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि० स्वाहा।

ब्रह्मचर्य का फल पाने को रत्नत्रय पथ पर आऊँ।
निज स्वरूप में चर्या करके महा मोक्ष फल को पाऊँ।। नन्दी०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा।

संवर और निर्जरा द्वारा कर्म रहित मैं हो जाऊँ।।
आश्रव बंध नाश कर स्वामी मैं अनर्घ पदवी पाऊँ।।
नन्दीश्वर के बावन जिन चैत्यालय बन्दू हर्षाऊँ।
अष्टम द्वीप मनोरम जिन प्रतिमायें पूजूँ सुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिण दिशा द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि०।

एक बार भी निज आतम का वैभव देख नहीं पाया।
इसीलिए तो भव अटवी में भ्रम भ्रम कर अति दुख पाया ॥

☼ जयमाला ☼

मध्य लोक में एक लाख योजन का जम्बू द्वीप प्रथम।
द्वीप धातकी खण्ड दूसरा तीजा पुष्करवर अनुपम ॥
चौथा द्वीप वारुणीवर है द्वीप क्षीरवर है पंचम।
षष्टम् घृतवर द्वीप मनोहर द्वीप इक्षुवर है सप्तम ॥
अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर अद्वितीय शोभा धारी।
योजन कोटि एक सौ त्रेसठ लख चौरासी विस्तारी ॥
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशि में हैं अंजन गिरि चार।
इनके भव्य शिखर पर जिन चैत्यालय चारों हैं सुखकार ॥
चहुँ दिशि चार चार वापी हैं लाख लाख योजन जलमय।
इनमें सोलह दधि मुख पर्वत जिन पर सोलह चैत्यालय ॥
सोलह वापी के दो कोणों पर इक इक रतिकर पर्वत।
इन पर हैं बत्तीस जिनालय जिनकी है शोभा शाश्वत ॥
कृष्ण वर्ण अञ्जन गिरि चौरासी सहस्र योजन ऊँचे।
श्वेत वर्ण के दधि मुख पर्वत दस सहस्र योजन ऊँचे ॥
लाल वर्ण के रतिकर पर्वत एक सहस्त्र योजन ऊँचे।
सभी ढोल सम गोल मनोहर पर्वत हैं सुन्दर ऊँचे ॥
चारों दिशि में महा मनोरम कुल जिन चैत्यालय बावन।
सभी अकृत्रिम अति विशाल हैं उन्नत परम पूज्य पावन ॥
जिन भवनों का एक शतक योजन लम्बाई का आकार।
अर्ध शतक चौड़ाई पचहत्तर योजन ऊँचा विस्तार ॥
चौंसठ बन की सुषमा से शोभित है अनुपम नन्दीश्वर।
है अशोक सप्तछद चम्पक आम्र नाम के बन सुन्दर ॥

प्राण जांय पर धर्म न जाए यह जिनकुल की रीत है।
जिन आज्ञा अनुसार चले जो उसे धर्म से प्रीत है।।

इन सब में अवतंस आदि रहते हैं चौंसठ देव प्रबल।
गाते नन्दीश्वर की महिमा अरिहंतों का यश उज्ज्वल।।
देव देवियाँ नृत्य वाद्य गीतों से करते जिन पूजन।
जय ध्वनि से आकाश गुञ्जाते थिरक थिरक करते नर्तन।।
कार्तिक फागुन अरु अषाढ़ में इन्द्रादिक सुर आते हैं।
अन्तिम आठ दिवस पूजन कर मन में अति हर्षाते हैं।।
दो दो पहर एक इक दिशि में आठ पहर करते पूजन।
धन्य धन्य नन्दीश्वर रचना धन्य धन्य पूजन अर्चन।।
ढाई द्वीप तक मनुज क्षेत्र है आगे होता नहीं गमन।
ढाई द्वीप से आगे तो जा सकते हैं केवल सुरगण।।
शक्तिहीन हम इसीलिये करते हैं यहीं भाव पूजन।
नन्दीश्वर की सब प्रतिमाओं को है भाव सहित वन्दन।।
भव भव के अघ मिटें हमारे आत्म प्रतीति जगे मन में।
शुद्ध भाव अभिवृद्धि सहज हो समकित पायें जीवन में।।
यही विनय है यही प्रार्थना यही भावना है भगवन।
नन्दीश्वर की पूजन करके करें आत्मा ही का ध्यान।।
आत्म ध्यान की महाशक्ति से वीतराग अरिहन्त बनें।
घाति अघाति कर्म सब क्षयकर मुक्ति कंत भगवन्त बनें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशासु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो पूर्णार्घ्यम्।

भाव सहित नन्दीश्वर की पूजन से होता है कल्याण।
स्वर्ग मोक्ष पद मिल जाता है धर्म ध्यान से सहज महान।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर संज्ञाय नमः

शुद्धातम के अवलोकन से होती प्रकट शुद्ध पर्याय ।
द्रव्य दृष्टि जब होती है तो होता भेद ज्ञान सुखदाय ।।

श्री दशलक्षण धर्म पूजन

उत्तम क्षमा आत्मा का गुण उत्तम मार्दव विनय स्वरूप ।
उत्तम आर्जव माया नाशक उत्तम शौच लोभहर भूप ।।
उत्तम सत्य स्वभाव ज्ञानमय उत्तम संयम संवर रूप ।
उत्ताम तप निर्जरा कर्म की उत्ताम त्याग स्वरूप अनूप ।।
उत्ताम आकिंचन विरागमय उत्तम ब्रह्मचर्य चिद्रूप ।
धन्य धन्य दश धर्म परम पद दाता सुखमय मोक्ष स्वरूप ।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्म अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

जल स्वभाव शीतल निर्मल पोकर भी प्यास न बुझ पाई ।
जन्म मरण का चक्र मिटाने आज धर्म की सुधि आई ।।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव शौच सत्य संयम तप त्याग ।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्म के दशलक्षण से हो अनुराग ।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दाह निकन्दन चन्दन पाकर भी तो दाह न मिट पाई ।
राग आग की ज्वाल बुझाने आज धर्म की सुधि आई ।।उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ्र अखन्डित तन्दुल पाकर भी निज रुचि न सुहा पाई ।
अजर अमर अक्षय पद पाने आजधर्म की सुधि आई ।। उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्माय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

आत्म भान के बिना न होता है सम्यक् व्यवहार भी।
आत्म ज्ञान के बिना न होता निज आतम से प्यार भी।।

अगणित पुष्प सुवासित पाकर काम व्याधि ना मिट पाई।
अब कन्दर्प दर्प हरने को आज धर्म की सुधि आई।। उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्माय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

जड़ की रुचि के कारण अब तक निज की तृप्ति न हो पाई।
सहज तृप्त चेतन पद पाने आज धर्म की सुधि आई।। उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्माय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य नि०।

मिथ्या भ्रम की चकाचौंध में दृष्टि शुद्ध ना हो पाई।
मोह तिमिर का अन्त कराने आज धर्म की सुधि आई।। उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि०।

आर्त्त रौद्र ध्यानों में रहकर धर्म ध्यान छवि ना भाई।
अष्ट कर्म विध्वंस कराने आज धर्म की सुधि आई ।। उत्तम

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्मांगाय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

राग हेय परिणति फल पाकर निज परिणति ना मिल पाई।
फल निर्वाण प्राप्त करने को आज धर्म की सुधि आई।। उत्तम०

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्मांगाय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।

चौरासी के क्रूर चक्र में उलझा शान्ति न मिल पाई।
निज अमरत्व प्राप्त करने को आज धर्म की सुधि आई।।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव शौच सत्य संयम तप त्याग।
आकिंचन्य ब्रह्मचर्य धर्म के दशलक्षण से हो अनुराग।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्मांगाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि०।

उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा धर्म है सुख का सागर तीन लोक में सार।
जन्म मरण दुख का अभाव कर शीघ्र नाश करता संसार।।

रागादिक हिंसादि भाव हैं यह दृढ़ निश्चय लो उरधार ।
रागादिल भव दुख के कारण रागादिक से है संसार ।।

क्रोध कषाय विनाशक दुर्गति नाशक मुनियों द्वारा पूज्य ।
व्रत संयम को सफल बनाता सुगति प्रदाता है अति पूज्य ।।
जहां क्षमा है वहीं धर्म है स्वपर दया का मूल महान ।
जय जय उत्तम क्षमा धर्म की जो है जग में श्रेष्ठ प्रधान ।।
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम मार्दव

उत्तम मार्दव धर्म ज्ञानमय वसु मद रहित परम सुखकार ।
मान कषाय नष्ट करता है विनय गुणों का है भण्डार ।
विनय बिना तत्वों का हो सकता न कभी सम्यक् श्रद्धान ।
दर्शन ज्ञान चरित्र विनय तप बिना न होता सम्यक् ज्ञान ।
जहां मार्दव वहीं धर्म है वही मोक्ष नगरी का द्वार ।
उत्तम मार्दव धर्म हमारा विनय भाव की जय-जयकार ।
ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घम् नि० स्वाहा ।

उत्तम आर्जव

उत्तम आर्जव धर्म कुटिलता से विरहित ऋजुता से पूर्ण ।
निज आतम का परम मित्र है करता माया शल्य विचूर्ण ।।
लेश मात्र भी मायाचारी कुगति प्रदायक अति दुखकार ।
सरल भाव चेतन गुणधारी टंकोत्कीर्ण महा सुखकार ।।
शिवमय शाश्वत मोक्ष प्रदाता मङ्गलमय अनमोल परम ।
उत्तम आर्जव धर्म आत्म का अभय रूप निश्चल अनुपम ।।
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यम् नि० ।

उत्तम शौच

उत्तम शौच धर्म सुखकारी मन वच काया करता शुद्ध ।
लोभ कषाय नाश कर देता समकित होता परम विशुद्ध ।।

सकल जगत के नो पदार्थ में सारभूत है आत्मा ।
अलख अरूपी अमित तेजमय ज्ञानभूत है आत्मा ।।

ऋद्धि सिद्धि का लोभ न किंचित इसके कारण हो पाता ।
जो सन्तोषामृत पीता है वही आत्मा को ध्याता ।।
शौच धर्म पावन मङ्गलमय से हो जाता है निर्वाण ।
उत्तम शौच धर्म ही जग में करता है सबका कल्याण ।।
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यम् नि० ।

उत्तम सत्य

उत्तम सत्य धर्म हितकारी निज स्वभाव शीतल पावन ।
वचन गुप्ति के धारी मुनिवर ही पाते हैं मुक्ति सदन ।।
सब धर्मों में यह प्रधान है भव तम नाशक सूर्य समान ।
सुगति प्रदायक भव सागर से पार उतरने को जलयान ।।
सत्य धर्म से अणुव्रत और महाव्रत होते है निर्दोष ।।
जय जय उत्तम सत्य धर्म त्रिभुवन में गूञ्ज रहा जयघोष ।।
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यम् नि० ।

उत्तम संयम

उत्तम संयम तीन लोक में दुर्लभ सहज मनुज गति में ।
दो क्षण को पाने की क्षमता देवों में ना सुरपति में ।।
पंचेंद्रिय मन वश करना त्रस स्थावर की रक्षा करना ।
अनुकम्पा आस्तिक्य प्रशम संवेगधार मुनिपद धरना ।।
धन्य धन्य संयम की महिमा तीर्थङ्कर तक अपनाते ।
उत्ताम संयम धर्म जयति जय हम पूजन कर हर्षाते ।।
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यम् नि० ।

उत्तम तप

उत्ताम तप है धर्म परम पावन स्वरूप का मनन जहाँ ।
यही सुतप है अष्ट कर्म की होती है निर्जरा यहाँ ।।

प्रथम अनादिकाल के मिथ्या भ्रम को ध्वंस करो।
पीछे तुम रागादिक भाव का गढ़ विध्वंस करो ॥

पंचेन्द्रिय का दमन सर्व इच्छाओं का निरोध करना।
सम्यक् तप धर निज स्वभाव से भाव शुभाशुभ को हरना॥
धन्य धन्य बाह्यान्तर तप द्वादश विधि धन्य धन्य मुनिराज।
उत्तम तप जो धारण करते हो जाते हैं श्री जिनराज॥
ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यम् नि०।

उत्तम त्याग

उत्तम त्याग धर्म है अनुपम पर पदार्थ का निश्चय त्याग।
अभय शास्त्र औषधि अहार है चारों दान सरल शुभ राग॥
सरल भाव से प्रेमपूर्वक करते हैं जो चारों दान।
एक दिवस गृह त्याग साधु हो करते हैं निज का कल्याण॥
अहोदान की महिमा तीर्थङ्कर प्रभु तक लेते हैं आहार।
उत्तम त्याग धर्म की जय जय जो है स्वर्ग मोक्ष दातार॥
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यम् नि०।

उत्तम आकिंचन

उत्तम आकिंचन है धर्म स्वरूप ममत्व भाव से दूर।
चौदह अन्तरंग दश बाहर के हैं जहां परिग्रह चूर॥
तृष्णाओं को जीता पर द्रव्यों से राग नहीं किंचित।
सर्व परिग्रह त्याग मुनीश्वर विचरें वन में आत्माश्रित॥
परम ज्ञानमय परम ध्यानमय सिद्ध स्वपद का दाता है।
उत्तम आकिंचन व्रत जग में श्रेष्ठ धर्म विख्याता है॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः अर्घ्यम् नि०।

उत्तम ब्रम्हचर्य

उत्ताम ब्रह्मचर्य दुर्धर व्रत है सर्वोत्कृष्ट जग में।
काम वासना नष्ट किये बिन नहीं सफलता शिवमग में॥

अनतानुबंधी के क्षय बिन कैसा व्रत संयम ।
समकित के बिन कैसे जा सकता है मिथ्यातम ।।

विषय भोग अभिलाषा तज जो आत्म ध्यान में रम जाते।
शील स्वभाव सजा दुर्मतिहर काम शत्रु पर जय पाते ।।
परम शील की पवित्र महिमा ऋषि गणधर वर्णन करते ।
उत्तम ब्रह्मचर्य के धारी हो भव सागर से तिरते ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यम नि० ।

☼ जयमाला ☼

उत्तम क्षमा धर्म को धारूँ क्रोध कषाय विनाश करूँ ।
पर पदार्थ को इष्ट अनिष्ट न मानूँ आत्म प्रकाश करूँ ।।
उत्तम मार्दव धर्म ग्रहण कर विनय स्वरूप विकास करूँ ।
पर कर्तृत्व मानता त्यागूँ अहङ्कार का नाश करूँ ।।
उत्तम आर्जव धर्मधार माया कषाय संहार करूँ ।
कपट भाव से रहित शुद्ध आतम का सदा विचार करूँ ।।
उतम शौच धर्म धारण कर लोभ कषाय विनष्ट करूँ ।
शुचिमय चेतन से अशुद्ध ये चार घातिया कर्म हरूँ ।।
उतम सत्य धर्म से निर्मल निज स्वरूप को सत्य करूँ ।
हित मित प्रिय सच बोलूँ नित निज परिणित के सङ्ग नृत्य करूँ।।
उतम संयम धर्म सभी जीवों के प्रति करुणा धारूँ ।
समिति गुप्ति व्रत पालन करके निज आतम गुण विस्तारूँ ।।
उतम तप धर शुक्ल ध्यान से आठों कर्मो को जारूँ ।
अन्तरङ्ग बहिरङ्ग तपों से निज आतम को उजियारूँ ।।
उतम त्याग पाँच पापों का सर्व देश में त्याग करूँ ।
योग्य पात्र को योग्य दान दे उर में सहज विराग भरूँ ।।

है संयोग शरीर आतमा का पर दोनों भिन्न हैं।
एक क्षेत्र अवगाही रहकर निज से सदा अभिन्न हैं।।

उत्तम आकिंचन रागादिक भावों का परिहार करूँ।
सर्व परिग्रह से विमुक्त हो मुनिपद अङ्गीकार करूँ।।
उतम ब्रह्मचर्य उर धारूँ आत्म ब्रह्म में लीन रहूं।
कामबाण विध्वंस करूँ मैं शील स्वभावाधीन रहूँ।।
दशलक्षण व्रत की महिमा का नित प्रति जय जय गान करूँ।
दश धर्मों का पालन करके महामोक्ष निर्वाण वरूँ।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशधर्मेभ्यो पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दशलक्षण धर्म की महिमा अगम अपार।
जो भी इनको धारते वे होते भव पार।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा मार्दवार्जव शौच सत्य संयम तपस्त्यागाकिंचन्य ब्रह्मचर्य धर्माङ्गाय नमः।

—:o:—

श्री रत्नत्रय धर्म पूजन

जय जय सम्यक्दर्शन पावन मिथ्या भ्रमनाशक श्रद्धान।
जय जय सम्यक्ज्ञान तिमिर हर जय जय वीतराग विज्ञान।।
जय जय सम्यक्चरित सु निर्मल मोह क्षोभ हर महिमावान।
अनुपम रत्नत्रय धारण कर मोक्ष मार्ग पर करूँ प्रयाण।।

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम।
ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्म अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

सम्यक् सरित सलिल जल द्वारा मिथ्या भ्रम प्रभु दूर हटाव।
जन्म मरण का क्षय कर डालूँ साम्य भाव जल मुझे पिलाव।।

कष्टों से भरपूर सर्वथा यह संसार असार है।
निज स्वभाव के द्वारा मिलता शिव सुख अपरंपार है॥

दर्शन ज्ञान चरित्र साधना से पाऊँ निज शुद्ध स्वभाव।
रत्नत्रय की पूजन करके राग द्वेष का करूँ अभाव॥

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि०।

शुभ भावों का चन्दन घिस-२ निज से किया सदा अलगाव।
भव ज्वाला शीतल हो जाये ऐसी आत्म प्रतीत जगाव॥दर्शन०

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्म संसारताय विनाशनाय चन्दनम् नि०।

भव समुद्र की भंवरों में फंस टूटी अब तक मेरी नाव।
पुण्योदय से तुमसा नाविक पाया मुझको पार लगाव॥ दर्शन०

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० स्वाहा।

काम क्रोध मद मोह लोभ से मोहित हो करता पर भाव।
दृष्टि बदल जाये तो सृष्टि बदल जाये यह सुमति जगाव॥दर्शन०

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० स्वाहा।

पुण्य भाव की रुचि में रहता इच्छाओं का सदा कुभाव।
क्षुधा रोग हरने को केवल निज की रुचि ही श्रेष्ठ उपाव॥दर्शन०

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

ज्ञान ज्योति बिन अन्धकार में किये अनेकों विविध विभाव।
आत्म ज्ञान की दिव्य विभा से मोह तिमिर का करूँ अभाव॥दर्शन

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

घाति कर्म ज्ञानावरणादिक निज स्वरूप घातक दुर्भाव।
ध्रुव स्वभावमय शुद्ध दृष्टि दो अष्ट कर्म से मुझे बचाव॥दर्शन

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०स्वाहा।

निज श्रद्धान ज्ञान चारित मय निज परिणति से पा निज ठाँव।
महामोक्ष फल देने वाले धर्म वृक्ष की पाऊँ छाँव॥ दर्शन०

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय मोक्षफल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा।

भावलिंग बिन द्रव्यलिंग का तनिक नहीं कुछ मूल्य है।
अविरत चौथा गुणस्थान भी शिव पथ में बहु मूल्य है।।

दुर्लभ नर तन फिर पाया है चूक न जाऊं अन्तिम दाँव।
निज अनर्घ पद पाकर नाश करूँगा मैं अनादि का घाव।।
दर्शन ज्ञान चरित्र साधना से पाऊँ निज शुद्ध स्वभाव।
रत्नत्रय की पूजन करके राग द्वेष का करूँ अभाव।।

ॐ ह्रीं सम्यक् रत्नत्रय धर्माय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० स्वाहा।

सम्यक् दर्शन

आत्म तत्व की प्रतीति निश्चय सप्त तत्व श्रद्धा व्यवहार।
सम्यक् दर्शन से हो जाते भव्य भव जीव सागर पार।।
विपरीताभिनिवेश रहित अधिगमज निसर्गज समकित सार।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम होता है यह तीन प्रकार।।
आर्ष, मार्ग, बीज, उपदेश, सूत्र, संक्षेप, अर्थ, विस्तार।
समकित है अवगाढ़ और परमावगाढ़ दश भेद प्रकार।।
जिन वर्णित तत्वों में शङ्का लेश नहीं निःशङ्कित अङ्ग।
सुर पद या लौकिक सुख बांछा लेश नहीं निःकांक्षित अङ्ग।।
अशुचि पदार्थों में न ग्लानि हो शुचिमय निर्विचिकित्सा अङ्ग।
देव शास्त्र गुरु धर्मात्माओं में रुचि अमूढ़ दृष्टि अङ्ग।।
पर दोषों को ढकना स्वगुण वृद्धि करना उपगूहन अङ्ग।
धर्म मार्ग से विचलित को थिर रखना स्थितिकरण सु अङ्ग।।
साधर्मी में गौ बछड़े सम पूर्ण प्रीति है वात्सल अङ्ग।
जिन पूजा तप दया दान मन से करना प्रभावना अङ्ग।।
आठ अङ्ग पालन से होता है सम्यक् दर्शन निर्मल।
सम्यक् ज्ञान चरित्र उसी के कारण होता है उज्ज्वल।।
शङ्काकांक्षा विचिकित्सा अरु मूढ़ दृष्टि अन उपगूहन।
अस्थितिकरण अवात्सल्य अप्रभावना बसु दोष सघन।।

दृष्टि अपेक्षा से तो सम्यक् दृष्टि सदा ही मुक्त है।
शुद्ध त्रिकाली ध्रुव स्वरूप निज गुण अनंत से युक्त है॥

कुगुरु कुदेव कुशास्त्र और इनके सेवक छः अनायतन।
देव मूढ़ता गुरू मूढ़ता लोक मूढ़ता तीन जघन॥
जाति रूपकुल ऋद्धि तपस्या पूजा और ज्ञान मद आठ।
मूल दोष सम्यक् दर्शन के यह पच्चीस तजों मद आठ॥
जय जय सम्यक् दर्शन आठों अङ्ग सहित अनुपम सुखकार।
यही धर्म का सुदृढ़ मूल है इसकी महिमा अपरम्पार॥
ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक् दर्शनाय अनघ पद प्राप्तये अर्घमं नि० स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान

निज अभेद का ज्ञान सुनिश्चय आठ भेद सब हैं व्यवहार।
सम्यक् ज्ञान परम हितकारी शिव सुख दाता मङ्गलकार॥
अक्षर पद वाक्यों का शुद्धोच्चारण है व्यञ्जन आचार।
शब्दों के यथार्थं अर्थ का अवधारण है अर्थाचार॥
शब्द अर्थ दोनों का सम्यक् जान पना है उभयाचार।
योग्य काल में जिन श्रुत का स्वाध्याय कहाता कालाचार॥
नम्र रूप रह लेश न उद्धत होना ही है विनयाचार।
सदा ज्ञान का आराधन, स्मरण सहित उपध्यानाचार॥
शास्त्रों के पाठी अरु श्रुत का आदर है बहु मानाचार।
नहीं छुपाना शास्त्र और गुरु नाम अनिन्हव है आचार॥
आठ अङ्ग हैं यही ज्ञान के इनसे दृढ़ हो सम्यक् ज्ञान।
पाँच भेद हैं मति श्रुत अवधि मन पर्यय अरु केवल ज्ञान॥
मति होता है इन्द्रिय मन से तीन शतक चौरासी भेद।
श्रुत के प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं चउ अनुयोग सु भेद॥
द्वादशांग चौदह पूरब परिकर्म चूलिका प्रकीर्णक।
अक्षर और अनक्षरात्मक भेद अनेकों हैं सम्यक्॥

केवल निज परमात्म तत्त्व की श्रद्धा ही कर्त्तव्य है।
आत्म तत्त्व श्रद्धानी का ही तो उज्जवल भवितव्य है॥

अवधि ज्ञान त्रय देशावधि परमावधि सर्वावधि जानों।
भव प्रत्यय के तीन और गुण प्रत्यय के छह पहिचानों॥
मनःपर्यय ऋजुमति विपुलमति उपचार अपेक्षा से जानों।
नय प्रमाण से ज्ञान ज्ञान प्रत्यक्ष परोक्ष पृथक् मानों॥
जय जय सम्यक् ज्ञान अष्ट अङ्गों से युक्त मोक्ष सुखकार।
तीन लोक में विमल ज्ञान की गूञ्ज रही है जय जयकार।
ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञानाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० स्वाहा।

सम्यक् चारित्र

निज स्वरूप में रमण सुनिश्चय दो प्रकार चारित व्यवहार।
श्रावक त्रेपन क्रिया साधु का तेरह विधि चारित्र अपार॥
पंच उदम्बर त्रय मकार तज, जीव दया निशि भोजन त्याग।
देव वन्दना जल गालन निशि भोजी त्यागी श्रावक ज्ञान॥
दर्शन ज्ञान चरित्रमयी ये त्रेपन क्रिया सरल पहिचान।
पाक्षिक नैष्ठिक साधक तीनों, श्रावक के हैं भेद प्रधान॥
परम अहिंसा षट कायक के जीवों की रक्षा करना।
परम सत्य है हित मित प्रिय वच सरल सत्य उर में धरना॥
परम अचौर्य, बिना पूछे तृण तक भी नहीं ग्रहण करना।
पंच महाव्रत यही साधु के पूर्ण देश पालन करना॥
ईर्या समिति सु प्रासुक भू पर चार हाथ भू लख चलना।
भाषा समिति चार विकथाओं से विहीन भाषण करना॥
श्रेष्ठ ऐषणा समिति अनुद्देषिक आहार शुद्धि करना।
है आदान निक्षेपण संयम के उपकरण देख धरना॥
प्रतिष्ठापना समिति देह के मल भू देख त्याग करना।
पंच समिति पालन कर अपने राग द्वेष को क्षय करना॥

वस्तु त्रिकाली निवारण निर्दोष सिद्ध सम शुद्ध है।
द्रव्य दृष्टि बनने वाला ही होता परम विशुद्ध है।।

मनोगुप्ति है सब विभाव भावों का हो मन से परिहार।
वचन गुप्ति है आत्म चिंतवन ध्यान अध्ययन मौन संवार।।
काय गुप्ति है काय चेष्टा रहित भाव मय कायोत्सर्ग।
तीन गुप्ति धर साधु मुनीश्वर पाते हैं शिवमय अपवर्ग।।
षट आवश्यक द्वादश तप पंचेन्द्रिय का निरोध अनुपम।
पंचाचार विनय आराधन द्वादश व्रत आदिक सुखतम।।
अट्ठाईस मूल गुण धारण सप्त भयों से रहना दूर।
निज स्वभाव आश्रय से करना पर विभाव को चकनाचूर।।
निरतिचार तेरह प्रकार का है चारित्र महान् प्रधान।
इसके पालन से होता है सिद्ध स्वपद पावन निर्वाण।।
श्रेष्ठ धर्म है श्रेष्ठ मार्ग है श्रेष्ठ साधु पद शिव सुखकार।
सम्यक् चारित बिना न कोई हो सकता भव सागर पार।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विधि सम्यक् चारित्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि०।

☆ जयमाला ☆

अष्ट अङ्गयुत निर्मल सम्यक् दर्शन मैं धारण करलूँ।
आठ अङ्गयुत निर्मल सम्यक् ज्ञान आतमा में वरलूँ।।
तेरह विधि सम्यक् चारित के मुक्ति भवन में पग धरलूँ।
श्री अरहंत सिद्ध पद पाऊँ सादि अनन्त सौख्य भरलूँ।।
निज स्वभाव का साधन लेकर मोक्ष मार्ग पर आ जाऊँ।
शुद्ध भाव धर भाव शुभाशुभ परिणामों पर जय पाऊँ।।
एक शुद्ध निज चेतन शाश्वत दर्शन ज्ञान स्वरूपी जान।
ध्रुव टंकोत्कीर्ण चिन्मय चित्चमत्कार चिद्रूपी मान।।
इसका ही आश्रय लेकर मैं सदा इसी के गुण गाऊँ।
द्रव्य दृष्टि बन निज स्वरूप की महिमा से शिव सुख पाऊँ।।

जो चारित्र भ्रष्ट है वह तो एक दिवस तर सकता है।
पर श्रद्धा से भ्रष्ट कभी भव पार नहीं कर सकता है॥

रत्नत्रय को वन्दन करके शुद्धात्म का ध्यान करूँ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित से परम स्वपद निर्वाण वरूँ॥

ॐ ह्री सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र मयीं रत्नत्राय पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय व्रत श्रेष्ठ की महिमा अगम अपार।
जो व्रत को धारण करे हो जाये भव पार॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

जाप्य- ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः।

— ✿ —

श्री वर्तमान चौबीसी पूजन

भरत क्षेत्र की वर्तमान जिन चौबीसी को करूँ नमन।
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर के पद पंकज में वन्दन॥
भक्ति भाव से नमस्कार कर विनय सहित करता पूजन।
भव सागर से पार करो प्रभु यही प्रार्थना है भगवन॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिन समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिन समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

आत्म ज्ञान वैभव के जल से यह भव तृषा बुझाऊँगा।
जन्म जरा हर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर के नित चरण पखारूँगा।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर अपनी ओर निहारूँगा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासी के चक्कर से बचना है तो निज ध्यान करो।
नव तत्वों की श्रद्धापूर्वक स्वपर भेद विज्ञान करो॥

आत्म ज्ञान वैभव के चन्दन से भवताप नशाऊँगा।
भव बाधा हर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।

आत्म ज्ञान वैभव के अक्षत से अक्षय पद पाऊँगा।
भव समुद्र तिर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० स्वाहा।

आत्म ज्ञान वैभव के पुष्पों से मैं काम नशाऊँगा।
शीलोदधि पा चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

आत्म ज्ञान वैभव के चरु ले क्षुधा व्याधि हर पाऊँगा।
पूर्ण तृप्ति पा चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर के नित चरण पखारूँगा।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर अपनी ओर निहारूँगा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

आत्म ज्ञान वैभव दीपक से भेद ज्ञान प्रगटाऊँगा।
मोह तिमिर हर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

आत्म ज्ञान वैभव की निज में शुचिमय धूप चढ़ाऊँगा।
अष्ट कर्म हर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

आत्म ज्ञान वैभव के फल से शुद्ध मोक्ष फल पाऊँगा।
राग द्वेष हर चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥ वृष०

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा।

आत्म ज्ञान वैभव का निर्मल अर्घ अपूर्व बनाऊँगा।
पा अनर्घ पद चिदानन्द चिन्मय की ज्योति जगाऊँगा॥

भेदज्ञान के बिना न मिलता मिथ्या भ्रम का अंतरे ।
भेदज्ञान से सिद्ध हुए हैं जीव अनंतानंतरे ॥

वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर के नित चरण पखारूँगा ।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर अपनी ओर निहारूँगा ॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

☼ जयमाला ☼

भव्य दिगम्बर जिन प्रतिमा नासाग्र दृष्टि निज ध्यानमयी ।
जिन दर्शन पूजन अघ नाशक भव भव में कल्याणमयी ॥
वृषभदेव के चरण पखारूँ मिथ्या तिमिर विनाश करूँ ।
अजित नाथ पद वन्दन करके पंच पाप मल नाश करूँ ॥
सम्भवजिन का दर्शन करके सम्यक् दर्शन प्राप्त करूँ ।
अभिनन्दन प्रभु पद अर्चन कर सम्यक् ज्ञान प्रकाश करूँ ॥
सुमति नाथ का सुमिरण करके सम्यक् चारित हृदय धरूँ ।
श्री पद्म प्रभु का पूजन कर रत्नत्रय का वरण करूँ ॥
श्री सुपार्श्व की स्तुति करके मोह ममत्व अभाव करूँ ।
चन्दा प्रभु के चरण चित्त धर चार कषाय कुभाव हरूँ ॥
पुष्पदन्त के पद कमलों में बारम्बार प्रणाम करूँ ।
शीतल जिनका सुयश गान कर शाश्वत शीतल धाम वरूँ ॥
प्रभु श्रेयांस नाथ को वन्दूं श्रेयस पद की प्राप्ति करूँ ।
वासु पूज्य के चरण पूज कर मैं अनादि की भ्रान्ति हरूँ ॥
विमल जिनेश मोक्ष पद दाता पंच महाव्रत ग्रहण करूँ ।
श्री अनन्त प्रभु के पद वन्दूं पर परणति का हरण करूँ ॥
धर्मनाथ पद मस्तक धर कर निज स्वरूप का ध्यान करूँ ।
शान्तिनाथ की शान्त मूर्ति लख परमशान्त रस पान करूँ ॥
कुन्थनाथ को नमस्कार कर शुद्ध स्वरूप प्रकाश करूँ ।
अरहनाथ प्रभु सर्वदोष हर अष्ट कर्म अरि नाश करूँ ॥

जीव स्वयं ही कर्म बांधता कर्म स्वयं फल देता है।
जीव स्वयं पुरुषार्थ शक्ति से कर्म बंध हर लेता है।।

मल्लिनाथ की महिमा गाऊँ मोह मल्ल को चूर करूँ।
मुनिसुव्रत को नित प्रति ध्याऊँ दोष अठारह दूर करूँ।।
नमि जिनेश को नमन करूँ मैं निज परणति में रमण करूँ।
नेमिनाथ का नित्य ध्यान धर भाव-शुभाशुभ शमन करूँ।।
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणाम्बुज दर्शन कर भव भार हरूँ।
महावीर के पथ पर चलकर मैं भव सागर पार करूँ।।
चौबीसों तीर्थङ्कर प्रभु का भाव सहित गुणगान करूँ।
तुम समान निज पद पाने को शुद्धातम का ध्यान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषादि वीरांतेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० स्वाहा।

श्री चौबीस जिनेश के चरण कमल उर धार।
मन, वच, तन जो पूजते वे होते भव पार।।

❋ इत्याशीर्वादः ❋

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नमः

❋❋❋

श्री ऋषभदेव पूजन

जय आदिनाथ जिनेन्द्र जय जय प्रथम जिन तीर्थङ्करम्।
जय नाभि सुत मरुदेवि नन्दन ऋषभ प्रभु जगदीश्वरम्।।
जय जयति त्रिभुवन तिलक चूड़ामणि वृषभ विश्वेश्वरम्।
देवाधि देव जिनेश जय जय महाप्रभु परमेश्वरत।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

समकित जल दो प्रभु आदि निर्मल भाव भाव भरूँ।
दुख जन्म मरण मिट जाय जल से धार करूँ।।

पुण्य मार्ग तो सदा बहिर्मुख धर्म मार्ग अंतर्मुख है।
पुण्यों का फल जगत भ्रमण दुख और धर्म फल शिव सुख है ।।

जय ऋषभदेव जिनराज शिव सुख के दाता ।
तुम सम हो जाता है स्वयं को जो ध्याता ।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

समकित चन्दन दो नाथ भव सन्ताप हरूँ ।
चरणों में मलय सुगन्ध हे प्रभु भेंट करूँ ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

समकित तन्दुल की चाह मन में मोद भरे ।
अक्षत से पूजूं देव अक्षय पद पद सँवरे ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

समकित के पुष्प सुरम्य दे दो हे स्वामी ।
यह काम भाव मिट जाय हे अन्तर्यामी ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पमं नि० ।

समकित चरु करो प्रदान मेरी भूख मिटे ।
भव भव की तृष्णा ज्वाल उर से दूर हटे ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

समकित दीपक की ज्योति मिथ्यातम भागे ।
देखूँ निज सहज स्वरूप निज परणति जागे ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

समकित की धूप अनूप कर्म विनाश करे ।
निज ध्यान अग्नि के बीच आठों कर्म जरे ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् नि० स्वाहा ।

समकित फल मोक्ष महान् पाऊं आदि प्रभो ।
हो जाऊँ सिद्ध समान सुखमय ऋषभ विभो ।। जय ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा ।

राग आग में जल जल तूने कष्ट अनंत उठाए है।
भाव शुभाशुभ के बंधन में आंसू सदा बहाए हैं॥

वसु द्रव्य अर्घ जिनदेव चरणों में अर्पित।
पाऊँ अनर्घ पद नाथ अविकल सुख गर्भित॥
जय ऋषभदेव जिनराज शिव सुख के दाता।
तुम सम हो जाता है स्वयं को जो ध्याता॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० स्वाहा।

श्री पंच कल्याणक

शुभ आषाढ़ कृष्ण द्वितिया को मरुदेवी उर में आये।
देवों ने छह मास पूर्व से रत्न अयोध्या बरसाये॥
कर्म भूमि के प्रथम जिनेश्वर तज सरवार्थ सिद्धि आये।
जय जय ऋषभनाथ तीर्थङ्कर तीन लोक ने सुख पाये॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितिया दिने गर्भ मङ्गल प्राप्ताये ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नवमी को राजा नाभिराय गृह जन्म लिया।
इन्द्रादिक ने गिरि सुमेरु पर क्षीरोदधि अभिषेक किया॥
नरक त्रियंच सभी जीवों ने सुख अन्तमुहूर्त पाया।
जय जय ऋषभनाथ तीर्थङ्कर जग में पूर्ण हर्ष छाया॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवमी दिने जन्म मङ्गल प्राप्ताये ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नवमी को ही वैराग्य भाव उर छाया था।
लौकान्तिक सुर इन्द्रादिक ने तप कल्याण मनाया था॥
पंच महाव्रत धारण करके पंच मुष्टि कच लोच किया।
जय प्रभु ऋषभदेव तीर्थङ्कर तुमने मुनि पद धार लिया॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवमी दिने तप मङ्गल प्राप्ताये ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म स्वरुप अनूप अनूठा इसकी महिमा अपरंपार ।
इसका अवलंबन लेते ही मिट जाता अनंत संसार ।।

एकादशी कृष्ण फागुन को कर्म घातिया नष्ट हुए ।
केवल ज्ञान प्राप्त कर स्वामी वीतराग उत्कृष्ट हुए ।।
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य सुख पूर्ण चतुष्टय को पाया ।
जय प्रभु ऋषभदेव जगती ने समवशरण लख सुख पाया ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदी एकादशी ज्ञान मङ्गल प्राप्ताये ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्धम् निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ बदी की चतुदशी को गिरि कैलाश हुआ पावन ।
आठों कर्म विनाशे पाया परम सिद्ध पद मन भावन ।।
मोक्ष लक्ष्मी पाई गिरि कैलाश शिखर, निर्वाण हुआ ।
जय जय ऋषभदेव तीर्थङ्कर भव्य मोक्ष कल्याण हुआ ।।

ॐ ह्रीं माघ वदी चतुर्दशी मोक्ष मङ्गल प्राप्ताये ऋअभदेव जिनेन्द्राय अर्धम निर्वपामीति स्वाहा ।

☼ जयमाला ☼

जम्बू दीप सु भरत क्षेत्र में नगर अयोध्यापुरी विशाल ।
नाभिराय चौदहवें कुलकर के सुत मरुदेवी के लाल ।।
सोलह स्वप्न हुए माता को पन्द्रह मास रत्न बरसे ।
तुम आये सरवार्थ सिद्धि से माता उर मङ्गल सरसे ।।
मति श्रुत अवधिज्ञान के धारी जन्मे हुए जन्म कल्याण ।
इन्द्र सुरों ने हर्षित पाण्डुक शिला किया अभिषेक महान ।।
राज्य अवस्था में तुमने जन जन के कष्ट मिटाये थे ।
असि मसि कृषि वाणिज्य शिल्प विद्या षट् कर्म सिखाये थे ।।
एक दिवस जब नृत्य लीन सुरि नीलांजना विलीन हुई ।
है पर्याय अनित्य आयु उसकी पल भर में क्षीण हुई ।।
तुमने वस्तु स्वरूप विचारा जागा उर वैराग्य आधार ।
कर चिंतवन भावना द्वादश त्यागा राज्य और परिवार ।।

मोह कर्म का जब उपशम हो भेद ज्ञान कर लो।
भाव शुभाशुभ हेय जानकर संवर आदर लो।।

लौकान्तिक देवों ने आकर किया आपका जय जयकार।
आश्रव हेय जानकर तुमने लिया हृदय में संवर धार।।
बन सिद्धार्थ गये वट तरु नीचे वस्त्रों को त्याग दिया।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहकर मौन हुए तप ग्रहण किया।।
स्वयं बुद्ध बन कर्म भूमि में प्रथम सुजिन दीक्षाधारी।
ज्ञान मनः पर्यय पाया धर पंच महाव्रत सुखकारी।।
धन्य हस्तिनापुर के राजा श्रेयाँस ने दान दिया।
एक वर्ष पश्चात इक्षुरस से तुमने पारणा किया।।
एक सहस्र वर्ष तप कर प्रभु शुक्ल ध्यान में हो तल्लीन।
पाप पुण्य आश्रव विनाश कर हुए आत्म रस में लवलीन।।
चार घातिया कर्म विनाशे पाया अनुपम केवल ज्ञान।
दिव्य ध्वनि के द्वारा तुमने किया सकल जग का कल्याण।।
चौरासी गणधर थे प्रभु के पहले वृषभसेन गणधर।
मुख्य आर्यिका श्री ब्राह्मी श्रोता मुख्य भरत नृपवर।।
भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में नाथ आपका हुआ विहार।
धर्मचक्र का हुआ प्रवर्तन सुखी हुआ सारा संसार।।
अष्टापद कैलाश धन्य हो गया तुम्हारा कर गुणगान।
बने अयोगी कर्म अघातिया नाश किये पाया निर्वाण।।
आज तुम्हारे दर्शन करके मेरे मन आनन्द हुआ।
जीवन सफल हुआ हे स्वामी नष्ट पाप दुख द्वन्द हुआ।।
यही प्रार्थना करता हूँ प्रभु उर में ज्ञान प्रकाश भरो।
चारों गतियों के भव सङ्कट का, हे जिनवर! नाश करो।।
तुम सम पद पा जाऊँ मैं भी यही भावना भाता हूँ।
इसीलिये यह पूर्ण अर्घ चरणों में नाथ चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं ऋषभदेव जिनेन्द्राय महार्घ्यम् नि०।

निज तत्वोपलब्धि के बिन सम्यक्त्व नहीं होता।
सम्यक्त्वोपलब्धि के बिन सिद्धत्व नहीं होता॥

वृषभ चिह्न शोभित चरण ऋषभदेव उर धार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः।

-:-

श्री पद्मप्रभ जिन पूजन

जय जय पद्म जिनेश पद्मप्रभ पावन पद्माकर परमेश।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर पद्मनाथ प्रभु पूज्य महेश॥
भवदुख हर्ता मंगलकर्त्ता षष्टम तीर्थङ्कर पद्मेश।
हरो अमंगल प्रभु अनादि का पूजन का है यह उद्देश॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

शुद्ध भाव का धवल नीर लेकर जिन चरणों में आऊँ।
जन्म मरण की व्याधि मिटाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ॥
परम पूज्य पावन परमेश्वर पद्मनाथ प्रभु को ध्याऊँ।
रोग शोक संताप क्लेश हर मंगलमय शिवपद पाऊँ।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव का शीतल चंदन ले प्रभु चरणों में आऊँ॥
भव आताप व्याधि को नाशूँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनम् नि०।

शुद्ध भाव के उज्ज्वल अक्षत ले जिन चरणों में आऊँ।
अक्षय पद अखंड मैं पाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतम् नि०।

जड़ को जड़ समझे बिन चेतन ज्ञान नहीं होता ।
पूर्ण शुद्धता हुए बिना कल्याण नहीं होता ॥

शुद्ध भाव के पुष्प सुरभिमय ले प्रभु चरणों में आऊँ ।
कामवाण की व्याधि नशाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

शुद्ध भाव के पावन चरु लेकर प्रभु चरणों में आऊँ ।
क्षुधा व्याधि का बीज मिटाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

शुद्ध भाव की ज्ञान ज्योति लेकर प्रभु चरणों में आऊँ ।
मोहनीय भ्रम तिमिर नशाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

शुद्ध भाव की धूप सुगंधित ले प्रभु चरणों में आऊँ ।
अष्टकर्म विध्वंस करूँ मैं नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० स्वाहा ।

शुद्ध भाव सम्यक्त्व सुफल पाने प्रभु चरणों में आऊँ ।
शिवमय महामोक्ष फल पाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताये फलम् नि० स्वाहा ।

शुद्ध भाव का अर्घ अष्टविध ले प्रभु चरणों में आऊँ ।
शाश्वत निज अनर्घ पद पाऊँ नाचूँ गाऊँ हर्षाऊँ ॥ परम०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घम् नि० स्वाहा ।

श्री पंच कल्याणक

शुभदिन माघ कृष्ण षष्ठी को मात सुसीमा हर्षाए ।
उपरिम ग्रैवेयक विमान प्रीतिकर तज उर में आए ॥
नव बारह योजन नगरी रच रत्न इन्द्रने बरसाए ।
जयश्री पद्मनाथ तीर्थङ्कर जगती ने मंगल गाए ॥

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण षष्ठीं दिने गर्भा गम मंगल प्राप्ताये श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

पण्य धूल के लिए बावरे हीरा जनम गंवाता ।
रत्नराख के लिए जलाता फिर भवभव पछताता ।।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को कौशाम्बी में जन्म लिया ।
गिरि सुमेरु पर इन्द्रादिक ने क्षीरोदधि से नव्हन किया ।।
राजा धरणराज आँगन में सुर सुरपति ने नृत्य किया ।
जय जय पद्मनाथ तीर्थङ्कर जग ने जय जय नाद किया ।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णात्रयोदश्याम् तपो मंगल प्राप्ताये श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को तुमको जाति स्मरण हुआ ।
जागा उर वैराग्य तभी लौकान्तिक सुर आगमन हुआ ।।
तरु प्रियंगु मनहर वन में दीक्षा धारी तप ग्रहण हुआ ।
जय जय पद्मनाथ तीर्थङ्कर अनुपम तप कल्याण हुआ ।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णात्रयोदश्याम् तपो मंगल प्राप्ताये श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मनोहर कर्म घाति अवसान किया ।
कौशाम्बी वन शुक्ल ध्यान धर निर्मल केवल ज्ञान लिया ।।
समवशरण में द्वादश सभा जुड़ी अनुपम उपदेश दिया ।
जय जय पद्मनाथ तीर्थङ्कर जग को शिव संदेश दिया ।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल पूर्णिमायां ज्ञान मंगल प्राप्ताये श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

मोहन कूट शिखर सम्मेदाचल से योग विनाश किया ।
फागुन कृष्ण चतुर्थी को प्रभु भव बंधन का नाश किया ।।
अष्टकर्म हर ऊर्ध्व गमन कर सिद्ध लोक आवास लिया ।
जयति पद्म प्रभु जिन तीर्थेश्वर शाश्वत आत्म विकास किया ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्थ्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताये श्री पदमप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

देह अपावन जड़ पुद्गल है तू चेतन चिद्रूपी।
शुद्धबुद्ध अविरुद्ध निरंजन नित्य अनूप अरूपी॥

☼ जयमाला ☼

परम श्रेष्ठ पावन परमेष्ठी पुरुषोत्तम प्रभु परमानंद।
परम ध्यानरत परमब्रह्ममय प्रशान्तात्मा पद्मानंद॥
जय जय पद्मनाथ तीर्थङ्कर जय जय जय कल्याण मयी।
नित्य निरंजन जनमन रंजन प्रभु अनंत गुण ज्ञान मयी॥
राजपाट अतुलित वैभव को तुमने क्षण में ठुकराया।
निज स्वभाव का अवलंबन ले परम शुद्ध पद को पाया॥
भव्य जनों को समवशरण में वस्तुतत्त्व विज्ञान दिया।
चिदानंद चैतन्य आत्मा परमात्मा का ज्ञान दिया॥
गणधर एक शतक ग्यारह थे मुख्य वज्रचामर ऋषिवर।
प्रमुख रात्रिषेणा सुआर्या श्रोता पशुनर सुर मुनिवर॥
सात तत्त्व छह द्रव्य बताए मोक्षमार्ग संदेश दिया।
तीन लोक के भूले भटके जीवों को उपदेश दिया॥
निःशंकादिक अष्ट अंग सम्यक् दर्शन के बतलाए।
अष्ट प्रकार ज्ञान सम्यक् बिन मोक्षमार्ग ना मिलपाए॥
तेरह विधि सम्यक् चारित का सत्स्वरूप है दिखलाया।
रत्नत्रय ही पावन शिव पथ सिद्ध स्वपद को दर्शाया॥
हे प्रभु यह उपदेश ग्रहणकर मैं निज का कल्याण करूँ।
निज स्वरूप की सहज प्राप्ति कर पद निर्ग्रंथ महान वरूँ॥
इष्ट अनिष्ट संयोगों में मैं कभी न हर्ष विषाद करूँ।
साम्यभाव धर उर अंतर में भव का वाद विवाद हरूँ॥
तीन लोक में सार स्वयं के आत्मद्रव्य का भान करूँ।
पर पदार्थ की ममता त्यागूं सुखमय भेद विज्ञान करूँ॥

सम्यक दर्शन ज्ञान चरित रत्नत्रय अपना लो।
अष्टम वसुधा पंचम गति में सिद्ध स्वपद पा लो।।

द्रव्य भाव पूजन करके मैं आत्म चिंतवन मनन करूँ।
नित्य भावना द्वादश भाऊँ रागद्वेष का हनन करूँ।।
तुव पूजन से पुण्यसातिशय हो भव भव तुमको पाऊँ।
जब तक मुक्ति स्वपद ना पाऊँ तब तक चरणों में आऊँ।।
संवर और निर्जरा द्वारा पाप पुण्य सब नाश करूँ।
प्रभु नव केवल लब्धि रमा पा आठों कर्म विनाश करूँ।।
तुम प्रसाद से मोक्ष लक्ष्मी पाऊँ निज कल्याण करूँ।
सादि अनंत सिद्ध पद पाऊँ परम शुद्ध निर्वाण वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष पंच कल्याण प्राप्ताये पूर्णार्घ्यम निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चिन्ह शोभित चरण, पद्मनाथ उरधार।
मन वच तन जो पूजते, वे होते भव पार।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य ॐ ह्रीं श्री पदमप्रभ जिनेन्द्रायनमः नि० स्वाहा।

— ☼ —

श्री चंद्रप्रभ जिन पूजन

महासेन नृपनंद चंद्रप्रभ चंद्रनाथ जिनवर स्वामी।
मात लक्ष्मणा के प्रियनंदन जग उद्धारक प्रभु नामी।।
निज आत्मानुभूति से पाई मोक्ष लक्ष्मी सुखधामी।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी करुणामय शिव पुरगामी।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्र अवतर अतवर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

पुष्पांजलि क्षिपामि

इस भव वन में उलझे रहते तो जिनवर अरहंत न होते ।
ज्ञाता दृष्टा शुद्ध स्वरूपी मुक्तिकंत भगवंत न होते ।।

तनकी प्यास बुझाने वाला यह निर्मल जल लाया हूँ ।
आत्मज्ञान की प्यास बुझाने प्रभु चरणों में आया हूँ ।।
चंद्र जिनेश्वर चंद्रनाथ चंद्रेश्वर चंदा प्रभु स्वामी ।
रागद्वेष परिणति के नाशक मंगलमय अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय त्रिविधताय विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तन का ताप मिटाने वाला शीतल चंदन लाया हूँ ।
राग आग की दाह मिटाने प्रभु चरणों में आया हूँ ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनम् नि० ।

परम शुद्ध अक्षय पद पाने उज्ज्वल अक्षत लाया हूँ ।
भव समुद्र से पार उतरने प्रभु चरणों में आया हूँ ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतम् नि० स्वाहा ।

कामवाण से घायल होकर पुष्प मनोहर लाया हूँ ।
महाशील शीलेश्वर बनने प्रभु चरणों में आया हूँ ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसाय पुष्पम् नि० स्वाहा ।

पर द्रव्यों से भूख न मिट पाई तो प्रभु चरु लाया हूं ।
आत्म तत्त्व की भूख मिटाने प्रभु चरणों में आया हूं ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

अन्धकारतम हरने वाला दीप प्रभामय लाया हूं ।
आत्म दीप की ज्योति जलाने प्रभु चरणों में आया हूं ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

पर परिणति का धुवां उड़ाने धूप सुगंधित लाया हूं ।
अष्ट कर्मअरि पर जय पाने प्रभु चरणों में आया हूं ।। चंद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० स्वाहा ।

जिनवाणी में निश्चय नय भूतार्थ बताया।
अभूतार्थ व्यवहार कथन उपचार जताया।।

पर विभाव फल से पीड़ित होकर नूतन फल लाया हूं।
अपना सिद्ध स्वपद पाने को प्रभु चरणों में आया हूं।। चांद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताये फलम् नि० स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ मनोरम हर्षित होकर लाया हूं।
चिदानन्द चिन्मय पद पाने प्रभु चरणों में आया हूं।। चांद्र०

ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यम् नि०।

श्री पंच कल्याणक

चैत्र कृष्ण पंचमी मात उर वैजयंत तज कर आए।
सोलह स्वप्न हुए माता को रत्न सुरों ने बरसाए।।
मात लक्ष्मणा स्वप्न फलों को जान हृदय में हर्षाए।
हुआ गर्भ कल्याण महोत्सव घर घर में आनंद छाए।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण पंचम्यां गर्भ मंगल प्राप्ताये श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि०।

पौष कृष्ण एकादशमी को चांद्रनाथ का जन्म हुआ।
मेरु सुदर्शन पर मंगल उत्सव कर सुरपति धन्य हुआ।।
चांद्रपुरी में बजी बधाई तीन लोक में सुख छाया।
महासेन राजा के गृह में देवों ने मंगल गाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्याम् जन्म मंगल प्राप्ताये श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशमी को राज्य आदि सब छोड़ दिया।
यह संसार असार जानकर तप से नाता जोड़ दिया।।
पंच महाव्रत धारण करके वस्त्राभूषण त्याग दिए।
तप कल्याण मनाया देवों ने जिनवर अनुराग लिए।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां निःक्रमण महोत्सव मंडिताय श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

निश्चयनय भूतार्थ आश्रय उपादेय है।
अभूतार्थ व्यवहार कथन तो अरे हेय है ॥

तीन मास छद्मस्थ रहे प्रभु उग्र तपस्या में हो लीन।
प्रतिमा योग धार चांदा प्रभु शुक्ल ध्यान में हुए स्वलीन॥
ध्यान अग्नि से त्रेसठ कर्म प्रकृतियों का बल नाश किया।
फागुन कृष्ण सप्तमी के दिन केवल ज्ञान प्रकाश लिया॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्त्यां केवल ज्ञान मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

शेष प्रकृति पच्चासी का भी अन्त समय अवसान किया।
फागुन शुक्ल सप्तमी के दिन प्रभु ने पद निर्वाण लिया॥
ललित कूट सम्मेद शिखर से चांदा प्रभु जिन मुक्त हुए।
ऊर्ध्व गमन कर सिद्ध लोक में मुक्ति रमा से युक्त हुए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्त्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताये चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

(जयमाला)

चंद्र चिन्ह चिन्हित चरण चंद्रनाथ चित धार॥
चिंतामणि श्री चंद्रप्रभ चंद्रामृत दातार॥

चंद्रपुरी के न्यायवान श्री महासेन राजा बलवान।
देवि लक्ष्मणा रानी उर से जन्मे चंद्रनाथ भगवान॥
इन्द्रशची सुर किन्नर यक्ष सभी नें गाए मंगलगान।
तीर्थङ्कर का जन्म जानकर धरती में भी आए प्राण॥
बड़े हुए प्रभु राजकाज में न्याय पूर्वक लीन हुए।
जग के भौतिक भोग भोगते सिंहासन आसीन हुए॥
इक दिन नभ में बिजली चमकी, नष्ट हुई तो किया विचार।
नाशवान पर्याय जान छाया तत्क्षण वैराग्य अपार॥
वन सर्वार्थ नागतरु नीचे परिजन परिकर धन सब त्याग।
पंच मुष्टि से केश लोचकर किया महाव्रत से अनुराग॥

मिथ्यातत्व जगत में भ्रमण कराता है ।
सम्यक्त्व मुक्ति से रमण कराता है ॥

हुए तपस्यालीन आत्मा का ही प्रतिपल करते ध्यान ।
शाश्वत निज स्वरूप आश्रय ले पाया तुमने केवल ज्ञान ॥
थे तिरानवे गणधर जिनमें प्रमुख दत्त स्वामी ऋषिवर ।
मुख्य आर्यिका वरुणा, श्रोता दानवीर्य आदिक सुरनर ॥
समवशरण में तुमने प्रभुवर वस्तु तत्त्व उपदेश दिया ।
उपादेय है एकआत्मा यह अनुपम संदेश दिया ॥
ज्ञाता दृष्टाबने जीव तो रागद्वेष मिट जाता है ।
जो निजात्मा में रहता है वही परम पद पाता है ॥
हो अयोग केवली आपने हे स्वामी पाया निर्वाण ।
अर्ध चांद्र सम सिद्ध शिला पर पहुँचे चांदा प्रभु भगवान ॥
अर्घ चांद्र शोभित चरणों में अष्टम तीर्थङ्कर स्वामी ।
जन्म मरण का चक्र मिटाने आया हूं अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं चंदप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पंच कल्याण प्राप्ताये पूर्णार्घ्यंम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चांदा प्रभु के पद कमल भाव सहित उरधार ।
मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री चंदप्रभ जिनेन्द्राय नमः

— ❂ —

श्री शीतलनाथ जिन पूजन

जय प्रभु शीतजनाथ शील के सागर शील सिन्धु शीलेश ।
कर्म जाल के शीतल कर्ता केवल ज्ञानी महा महेश ॥
त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव ध्रुव के आश्रय से हुए जिनेश ।
मुझको भी निज सम शीतल कर दो है विनय यही परमेश ॥

आत्म ज्ञान वैभव यदि हो तो सदाचार शोभा पाता है ।
पंचपरावर्त्तन अभाव कर चेतन मुक्ति गीत गाता है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

निर्मल उज्ज्वल जलधार चरणों में सोहे ।
यह जन्म रोग मिट जाय निज में मन मोहे ।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी ।
हे शील सिन्धु शीलेश सब सङ्कट हारी ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन सी सरस सुगन्ध मुझ में भी आये ।
भव ताप दूर हो जाय शीतलता छाये ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दम् नि० ।

निज अक्षय पद का भान करने आया हूँ ।
हर्षित हो शुभ्र अखण्ड तन्दुल लाया हूँ ।। हे शीतल०

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

कन्दर्प काम के पुष्प अब मैं दूर करूँ ।
पर परिणति का व्यापार प्रभु चकचूर करूँ ।। हे शीतल०

ॐ ह्री श्रींशीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

चरु सेवन रुचि दुखकार भव पीड़ा दायक ।
है क्षुधा रहित निज रूप सुखमय शिवनायक ।। हे शीतल०

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम नि० ।

अज्ञान तिमिर घन घोर उर में आया है ।
रवि सम्यक् ज्ञान प्रकाश मुझको भाया है ।। हे शीतल०

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

देह तो अपनी नहीं है देह से फिर मोह कैसा ।।
जड़ अचेतन रूप पुद्गल द्रव्य से व्यामोह कैसा ।।

चारों कषायों का सङ्ग हे प्रभु हट जाये ।
हो कर्म का चक्र का ध्वंस भव दुख मिट जाये ।। हे शीतल०
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि० ।
निर्वाण महा फल हेतु चरणों में आया ।
दुख रूप राग को जान अब निज गुण गाया ।। हे शीतल०
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० ।
आत्मानुभूति की प्रीति निज में है जागी ।
पाऊँ अनर्घ पद नाथ मिथ्या मति भागी ।।
हे शीतलनाथ जिनेश शीतलता धारी ।
हे शील सिन्धु शीलेश सब सङ्कट हारी ।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घम् नि० ।

श्री पंच कल्याणक

चैत्र कृष्ण अष्टमी स्वर्ग अच्युत को तज कर तुम आये ।
दिक्कुमारियों ने हर्षित हो मात सुनन्दा गुण गाये ।।
इन्द्र आज्ञा से कुबेर नगरी रचना कर हर्षाये ।
शीतल जिन के गर्भोत्सव पर रत्न सुरों ने बरसाये ।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा अष्टमी गर्भ कल्याणक प्राप्ताये अर्घम् नि० स्वाहा ।

भद्दिलपुर में राजा दृढ़रथ के गृह तुमने जन्म लिया ।
माघ कृष्ण द्वादशी इन्द्र सुर ने निज जीवन धन्य किया ।।
गिरि सुमेरु पर पाण्डुक वन में क्षीरोदधि से हवन किया ।
एक सहस्र अष्ट कलशों से हर्षित हो अभिषेक किया ।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म मङ्गल मण्डिताय अर्घम् नि० स्वाहा ।

ज्ञायक स्वभाव के सन्मुख हो पुरुषार्थ जीव जब करता है।
जड़ कर्मों की छाया तक को अंतर्मुहूर्त में हरता है।।

शरद् मेघ परिवर्तन लख कर उर छाया वैराग्य महान।
लौकान्तिक देवों ने आकर किया आपका तप कल्याण।।
सकल परिग्रह त्याग तपस्या करने वन को किया प्रयाण।
माघ कृष्ण द्वादशी सहेतुक वन में गूञ्जा जय जय गान।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याणक प्राप्ताये अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

पौष कृष्ण की चतुर्दशी को पाया स्वामी केवल ज्ञान।
समवशरण की रचना कर देवों ने गाये मङ्गल गान।।
सकल विश्व को वस्तु तत्व उपदेश आपने दिया महान।
भद्दिलपुर में गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान हुए चारों कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याणक प्राप्ताये अर्घ्यमं नि० स्वाहा।

आश्विन शुक्ल अष्टमी को हर अष्ट कर्म पाया निर्वाण।
विद्युत कूट श्री सम्मेद शिखर पर हुआ मोक्ष कल्याण।।
शेष प्रकृति पच्चासी हर कर कर्म अघाति अभाव किया।
निज स्वभाव के साधन द्वारा मोक्ष स्वरूप स्वभाव लिया।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष कल्याणक प्राप्ताये अर्घम् नि० स्वाहा।

☼ जयमाला ☼

जय जय शीतलनाथ शीलमय शील पुञ्ज शीतल सागर।
शुद्ध रूप जिन शुचिमय शीतल शील निकेतन गुण आगर।।
दशम् तीर्थङ्कर हे जिनवर परम पूज्य शीतल स्वामी।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ विनय सुनो त्रिभुवन नामी।।
साम्य भाव के द्वारा तुमनें निज स्वरूप का वरण किया।
पंच महाव्रत धारण कर प्रभु पर विभाव का हरण किया।।

कर्म बंध का रूप जानकर शुद्धातम का ज्ञान करो।
पाप पुण्य की प्रकृति विनाशो निज स्वरूप का ध्यान करो॥

पुरी अरिष्ट पुनर्वसु नृप ने विधिपूर्वक आहार दिया।
प्रभु कर में पय धारा दे भव सिन्धु सेतु निर्माण किया॥
तीन वर्ष छद्मस्थ मौन रह आतम ध्यान में लीन हुए।
चार घातिया का विनाश कर केवल ज्ञान प्रवीण हुए॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी अन्तराय अरु मोह रहित।
दोष अठारह रहित हुए तुम छयालीस गुण से मण्डित॥
क्षुधा तृषा, रति, खेद, स्वेद, अरु जन्म जरा चिन्ता विस्मय।
राग, द्वेष, मद, मोह, रोग, निद्रा, विषाद अरु मरण न भय॥
शुद्ध बुद्ध अरहंत अवस्था पाई तुम सर्वज्ञ हुए।
देव अनन्त चतुष्टय प्रगटा निज में निज मर्मज्ञ हुए॥
इक्यासी गणधर थे प्रभु के प्रमुख कुन्थ ज्ञानी गणधर।
मुख्य आर्यिका श्रेष्ठ धारिणी श्रोता थे नृप सीमंधर॥
तुम दर्शन करके हे स्वामी आज मुझे निज भान हुआ।
सिद्ध समान सदा पद मेरा अनुपम निर्मल ज्ञान हुआ॥
भक्ति भाव से पूजा करके यही कामना करता हूँ।
राग द्वेष परणति मिट जाये यही भावना करता हूँ॥
निर्विकल्प आनन्द प्राप्ति की आज हृदय में लगी लगन।
सम्यक् पूजन फल पाने को तुम चरणों में हुआ मगन॥
निज चैतन्य सिंह अब जागे मोह कर्म पर जय पाऊँ।
निज स्वरूप अवलम्बन द्वारा शाश्वत शीतलता पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम्।

कल्पवृक्ष शोभित चरण शीतल जिन उर धार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

—:—

नरक त्रियंच देव नर गति के काटे चक्र अनंती बार।
रहा सदा पर्याय दृष्टि ही ध्रुव का किया नहीं सत्कार ॥

श्री वासु पूज्यदेव पूजन

जय श्री वासुपूज्य तीर्थङ्कर सुर नर मुनि पूजित जिनदेव।
ध्रुव स्वभाव निज का अवलम्बन लेकर सिद्ध हुए स्वयमेव ॥
घाति अघाति कर्म सब नाशे तीर्थङ्कर द्वादशम् सुदेव।
पूजन करता हूँ अनादि की मेटो प्रभु मिथ्यात्व कुटेव ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

जल से तन बार बार धोया पर शुचिता कभी नहीं आई।
इस हाड-माँस मय चर्म देह का जन्म-मरण अति दुखदाई ॥
त्रिभुवन पति वासु पूज्य स्वामी प्रभु मेरी भव बाधा हरलो।
चारों गतियों के सङ्कट हर हे प्रभु मुझको निज सम करलो ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय त्रिविध ताप ताप विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शीतलता पाने को मैं चन्दन चर्चित करता आया।
भव चक्र एक भी घटा नहीं सन्ताप न कुछ कम हो पाया ॥ त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।

मुक्ता सम उज्ज्वल तन्दुल से नित देह पुष्ट करता आया।
तन की जर्जरता रुकी नहीं भव कष्ट व्यर्थ भरता आया ॥ त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतम् नि०।

पुष्पों की सुरभि सुहाई प्रभु पर निज की सुरभि नहीं भाई।
कंदर्प दर्प की चिर पीड़ा अब तक न शमन प्रभु हो पाई ॥ त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

षट्रस मय विविध-२ व्यञ्जन जी भर-भर कर मैंने खाये ॥
भव भूख तृप्त ना हो पाई दुख क्षुधा रोग के नित पाये ॥ त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

श्री जिनराज मुझे निज समान कर लीजे।
एक बस वीतरागता प्रदान कर दीजे ॥

दीपक नित ही प्रज्ज्वलित किये अंतर तम अब तक मिटा नहीं।
मोहान्धकार भी गया नहीं अज्ञान तिमिर भी हटा नहीं ॥ त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

शुभ अशुभ कर्म बन्धन भाया संवर का तत्त्व कभी न मिला।
निर्जरित कर्म कैसे हों जब दुखमय आश्रव का द्वार खुला ॥त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

भौतिक सुख की इच्छाओं का मैंने अब तक सम्मान किया।
निर्वाण मुक्ति फल पाने को मैंने न कभी निज ध्यान किया ॥त्रिभु०

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताये अर्घ्यम् नि०।

जब तक अनर्घ पद मिले नहीं तब तक मैं अर्घ चढ़ाऊँगा।
निज पद मिलते ही हे स्वामी फिर कभी नहीं मैं आऊँगा ॥
त्रिभवन पति वासु पूज्य स्वामी प्रभु मेरी भव बाधा हरलो।
चारों गतियों के सङ्कट हर हे प्रभु मुझको निज सम करलो ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

श्री पंच कल्याणक

त्यागा महा शुक्र का वैभव, माँ विजया उर में आये।
शुभ आषाढ़ कृष्ण षष्ठी को देवों ने मङ्गल गाये ॥
चम्पापुर नगरी की रचना, नव बारह योजन विस्तृत।
वास पूज्य के गर्भोत्सव पर हुए नगर वासी हर्षित ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्टयां गर्भ मङ्गल प्राप्ताये श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

फागुन कृष्णा चतुर्दशी को नाथ आपने जन्म लिया।
नृप वसुपूज्य पिता हर्षाये भरत क्षेत्र को धन्य किया ॥

जिसे सम्यक्त्व होता है उसे ही ज्ञान होता है।
उसे चारित्र होता है उसे निर्वाण होता है।।

गिरि सुमेरु पर पाण्डुक वन में हुआ जन्म कल्याण महान।
वासुपूज्य का क्षीरोदधि से हुआ दिव्य अभिषेक प्रधान।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म मङ्गल प्राप्ताये श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

फागुन कृष्णा चतुर्दशी को वन की ओर प्रयाण किया।
लौकान्तिक देवर्षि सुरों ने आकर तप कल्याण किया।।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहकर प्रभु ने मुनि पद ग्रहण किया।
वासु पूज्य ने ध्यान लीन हो इच्छाओं का दमन किया।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मङ्गल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

माघ शुक्ल की दोज मनोरम वासुपूज्य को ज्ञान हुआ।
समवशरण में खिरी दिव्य ध्वनि जीवों का कल्याण हुआ।।
नाश किये घन घाति कर्म सब केवल ज्ञान प्रकाश हुआ।
भव्यजनों के हृदय कमल का प्रभु से पूर्ण विकास हुआ।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ला द्वितीयां ज्ञान साम्राज्य प्राप्ताये श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

अंतिम शुक्ल ध्यान धर प्रभु ने कर्म अघाति किये चकचूर।
मुक्ति वधू के कंत हो गये योग मात्र कर निज से दूर।।
भादव शुक्ल चतुर्दशी चम्पापुर से निर्वाण हुआ।
मोक्ष लक्ष्मी वासु पूज्य ने पाई जय जय गान हुआ।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ला चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गल प्राप्ताये श्री वासुपूज्य जिनेद्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

✡ जयमाला ✡

वासु पूज्य विद्या निधि विघ्न विनाशक वागीश्वर विश्वेश।
विश्व विजेता विश्व ज्योति विज्ञानी विश्व देव विविधेश।।

पराए द्रव्य को अपना समझ कर दुख उठाता है।
जगत की मोह ममता में स्वयं को भूल जाता है।

चम्पापुर के महाराज वसुदेव पिता विजया माता।
तुमको पाकर धन्य हुए हे वासुपूज्य मङ्गल दाता॥
अष्ट वर्ष की अल्प आयु में तुमने अणुव्रत धार लिया।
यौवन वय में ब्रह्मचर्य आजीवन अङ्गीकार किया॥
पंच मुष्टि कचलोच किया सब वस्त्राभूषण त्याग दिये।
विमल भावना द्वादश भाई पंच महाव्रत ग्रहण किये॥
स्वयं बुद्ध हो नमःसिद्ध कह पावन सँयम अपनाया।
मति, श्रुति, अवधि जन्म से था अब ज्ञान मनः पर्यय पाया॥
एक वर्ष छद्मस्थ मौन रह आत्म साधना की तुमने।
उग्र तपस्या के द्वारा हो कर्म निर्जरा की तुमने॥
श्रेणीक्षपक चढ़े तुम स्वामी मोहनीय का नाश किया।
पूर्ण अनन्त चतुष्टय पाया पद अरहन्त महान् लिया॥
विचरण करके देश देश में मोक्ष मार्ग उपदेश दिया।
जो स्वभाव का साधन साधे सिद्ध बने सन्देश दिया॥
प्रभु के छ्यासठ गणधर जिनमें प्रमुख श्री मन्दिर ऋषिवर।
मुख्य आर्यिका वरसेना थीं नृपति स्वयंभू श्रोतावर॥
प्रायश्चित व्युत्सर्ग, विनय, वैय्यावृत स्वाध्याय अरु ध्यान।
अन्तरंग तप छह प्रकार का तुमने बतलाया भगवान॥
कहा बाह्य तप छः प्रकार ऊनोदर कायक्लेश, अनशन।
रस परित्याग सुव्रतपरिसंख्या, विविक्त शय्यासन पावन॥
ये द्वादश तप जिन मुनियों को पालन करना बतलाया।
अणुव्रत शिक्षाव्रत गुणव्रत द्वादश व्रत श्रावक का गाया॥
चम्पापुर में हुए पंच कल्याण आपके मङ्गलमय।
गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याण भव्य जन को सुखमय॥

पुण्य से ही निर्जरा होती अगर तो ।
हो गया होता अभी तक मोक्ष कबका ।।

परम पूज्य चम्पापुर की पावन भू को शत-शत वन्दन ।
वर्तमान चौबीसी के द्वादशम् जिनेश्वर नित्य नमन ।।
मैं अनादि से दुखी, मुझे भी निज बल दो भव वास हरूँ ।
निज स्वरूप का अवलम्बन ले अष्ट कर्म अरि नाश करूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष कल्याण प्राप्ताये अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

महिष चिह्न शोभित चरण, वासु पूज्य उर धार ।
मन, वच, तन जो पूजते, वे होते भव पार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः ।

-:-

श्री अनन्तनाथ जिन पूजन

जय जय जयति अनन्तनाथ प्रभु शुद्ध ज्ञानाधारी भगवान् ।
परम पूज्य मङ्गलमय प्रभुवर गुण अनन्तधारी भगवान् ।।
केवलज्ञान लक्ष्मी के पति भवभय दुखहारी भगवान् ।
परम शुद्ध अव्यक्त अगोचर भव भव सुखकारी भगवान् ।।
जय अनन्त प्रभु अष्ट कर्म विध्वंसक शिवकारी भगवान् ।
महा मोक्ष पति परम वीतरागी जग हितकारी भगवान् ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवोष्ट ।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

मैं अनादि से जन्म मरण की ज्वाला में जलता आया ।
सागर जल से बुझी न ज्वाला तो यह सम्यक् जल लाया ।।
जय जिनराज अनन्तनाथ प्रभु तुम दर्शन कर हर्षाया ।
गुण अनन्त पाने को पूजन करने चरणों में आया ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य से संवर अगर होता तनिक भी।
तो भ्रमण का कष्ट फिर मिलता न भव का ।।

भव पीड़ा के दुष्कर बन्धन से न मुक्त प्रभु हो पाया।
भवाताप की दाह मिटाने मलयागिरि चन्दन लाया ।।जय ०

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दम् नि०।

पर भावों के महाचक्र में फँसकर नित गोता खाया।
भव समुद्र से पार उतरने निज अखण्ड तन्दुल लाया ।। जय०

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेद्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि०।

कामवाण की महा व्याधि से पीड़ित हो अति दुख पाया।
सुदृढ़ भक्ति नौका में चढ़ कर शील पुष्प पाने आया ।। जय०

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

विविध भाँति के षटरस व्यञ्जन खाकर तृप्त न हो पाया।
क्षुधा रोग से विनिर्मुक्त होने नैवेद्य भेंट लाया ।। जय०

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम नि०।

पर परिणति के रूप जाल में पड़ निज रूप न लख पाया।
मिथ्या भ्रम हर ज्ञान ज्योति पाने को नवल दीप लाया ।। जय०

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।

नरक त्रियंच देव नर गति में भव अनन्त धर पछताया।
चहुँगति का अभाव करने को निर्मल शुद्ध धूप लाया ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म बिध्वंशनाय धूपम् नि०।

भाव शुभाशुभ दुख के कारण इनसे कभी न सुख पाया।
संवर सहित निर्जरा द्वारा मोक्ष सुफल पाने आया ।। जय०

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताये फलम् नि०।

देह भोग संसार राग में रहा विराग नहीं भाया।
सिद्ध शिला सिंहासन पाने अर्घ सुमन लेकर आया ।।

समकित का दीप जला अंधियारा दूर हुआ ।
अज्ञान तिमिर नाशा भ्रम तम चकचूर हुआ ।।

जय जिनराज अनन्तनाथ प्रभु तुम दर्शन कर हर्षाया ।
गुण अनन्त पाने को दर्शन करने चरणों में आया ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० ।

श्री पंच कल्याणक

कार्तिक कृष्णा एकम् के दिन हुआ गर्भ कल्याण महान ।
माता जय श्यामा उर आये पुष्पोत्तर का त्याग विमान ।।
नव बारह योजन की नगरी रची अयोध्या श्रेष्ठ प्रधान ।
जय अनन्त प्रभु मणि वर्षा की पन्द्रह मास सुरों ने आन ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण प्रतिप्रदा गर्भ कल्याणक संयुक्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नगर अयोध्या सिंहसेन नृप के गृह गूञ्जी शहनाई ।
ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश को जन्मे सारी जगती हर्षायी ।।
ऐरावत पर गिरि सुमेरु ले जा सुरपति ने न्हवन किया ।
जय अनन्त प्रभु सुर सुरांगनाओं ने मङ्गल नृत्य किया ।।

ॐ ह्रीं श्री अतन्तनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी जन्म कल्याण मण्डिताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

उल्कापात देखकर तुमको एक दिवस वैराग्य हुआ ।
ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश को स्वामी राज्य पाट का त्याग हुआ ।।
गये सहेतुक वन में तरु अश्वत्थ निकट दीक्षा धारी ।
जय अनन्त प्रभु नग्न दिगम्बर वीतराग मुद्रा धारी ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी तप कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

एक मास तक प्रतिमा योग धार कर शुक्ल ध्यान किया ।
चार घातिया कर्म नाश कर तुमने केवल ज्ञान लिया ।।

जिय कब तक उलझेगा संसार विजल्पो में ।
कितने भवबीत चुके संकल्प विकल्पों में ॥

चैत्र मास की कृष्ण अमावस्या को शिव सन्देश दिया ।
जय अनन्त जिन भव्य जनों को परम श्रेष्ठ उपदेश दिया ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्याम ज्ञा
कल्याणक प्राप्ताये अर्घम् नि० स्वाहा ।

चैत्र कृष्ण की श्रेष्ठ अमावस्या तुमने निर्वाण लिया ।
कूट स्वयंभू सम्मेदाचल देवों ने जयगान किया ॥
हो अयोग केवली योग का प्रथम समय में अन्त किया ।
जय अनन्त प्रभु निज सिद्धत्व प्रगट कर पद भगवन्त लिया ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्णा अमावस्याम् मो
मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

☼ जयमाला ☼

चतुर्दशम् तीर्थङ्कर स्वामी पूज्य अनन्तनाथ भगवान् ।
दिव्य ध्वनि के द्वारा तुमने किया भव्य जन का कल्याण ॥
थे पचास गणधर जिनमें पहिले गणधर थे जय मुनिवर ।
सर्वश्री थी मुख्य आर्यिका श्रोता भव्य जीव सुर नर ॥
चौदह जीव समास मार्गणा चौदह तुमने बतलाये ।
चौदह गुण स्थान जीवों के परिणामों के दर्शाये ॥
बादर सूक्ष्म जीव एकेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तक ।
दो इन्द्रिय त्रय इन्द्रिय चतुइन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक ॥
संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक ।
येही चौदह जीव समास जीव के जग में परिचायक ॥
गति इन्द्रिय कषाय अरु लेश्या वेद योग संयम सम्यक्त्व ।
काय अहार ज्ञान दर्शन अरु हैं संज्ञीत्व और भव्यत्व ॥

आत्म सूर्य को जो प्रगटाये उसे धर्म कहते है।
भव बंधन में जो उलझाए उसे कर्म कहते है॥

यह चौदह मार्गणा जीव की होती है इनसे पहचान।
पंचानवे भेद हैं इनके जीव सदा हैं सिद्ध समान॥
गति हैं चार पाँच हैं इन्द्रिय छह लेश्या पच्चीस कषाय।
वेद तीन सम्यकत्व भेद छह पन्द्रह योग और षट काय॥
दो आहार चार दर्शन हैं, संयम सात अष्ट हैं ज्ञान।
दो संज्ञीत्व और हैं दो भव्यत्व मार्गणा भेद प्रधान॥
गुण स्थान मार्गणा व जीव समास सभी व्यवहार कथन।
निश्चय से यह नहीं जीव के इन सबसे अतीत चेतन॥
मूल प्रकृतियाँ कर्म आठ ज्ञानावरणादिक होती हैं।
उत्तर प्रकृति एक सौ अड़तालीस कर्म की होती हैं॥
गुण स्थान मिथ्यात्व प्रथम में एक शतक सत्रह का बन्ध।
दूजे सासादन में होता एक शतक व एक का बन्ध॥
मिश्र तीसरे गुण स्थान में प्रकृति चौहत्तर का हो बन्ध।
चौथे अविरत गुण स्थान में प्रकृति सतत्तर का हो बन्ध॥
पंचम देश विरत में होता सड़सठ कर्म प्रकृति का बन्ध।
गुण स्थान षष्ठम् प्रमत्त में त्रेसठ कर्म प्रकृति का बन्ध॥
सप्तम् अप्रमत्त में होता उनसठ कर्म प्रकृति का बन्ध।
अष्ट अपूर्व करण में हो अट्ठावन कर्म प्रकृति का बन्ध॥
नौं अनिवृत्तिकरण में होता है बाईस प्रकृति का बन्ध।
दसवें सूक्ष्म साम्पराय में सतरह कर्म प्रकृति का बन्ध॥
ग्यारवें उपशान्त मोह में एक प्रकृति साता का बन्ध।
क्षीण मोह बारहवें में है एक प्रकृति साता का बन्ध॥
है सँयोग केवली त्रयोदश एक प्रकृति साता का बन्ध।
है अयोग केवली चतुर्दश किसी प्रकृति का कोई न बन्ध॥

भौतिक सुख की चकाचौंध में जीवन बीत रहा है ।
भावमरण प्रति समय हो रहा जीवन रीत रहा है ।।

अष्टम् गुण स्थान में उपशम क्षपक श्रेणि होती प्रारम्भ ।
उपशय नौ,दस,ग्यारह तक है नव दस बारह क्षायक रम्य ।।
अविरत गुण स्थान चौथे में होता सात प्रकृति का क्षय ।
पंचम् षष्ठम् सप्तम् में होता है तीन प्रकृति का क्षय ।।
नवमें गुण स्थान में होता है छत्तीस प्रकृति का क्षय ।
दसवें गुण स्थान में होता केवल एक प्रकृति का क्षय ।।
क्षीण मोह बारहवे में हो सोलह कर्म प्रकृति का क्षय ।
इस प्रकार चौथे से बारहवे तक त्रेसठ प्रकृति विलय ।।
गुण स्थान तेरहवें में सर्वज्ञ अनंत चतुष्टयवान ।
जीवन मुक्त परम औदारिक सकल ज्ञेय ज्ञायक भगवान ।।
चौदहवें में शेष प्रकृति पिच्चासी का होता है क्षय ।
प्रकृति एक सौ अड़तालीस कर्म की होती पूर्ण विलय ।।
ऊर्ध्व गमन कर देह मुक्त हो सिद्ध शिला लोकाग्र निवास ।
पूर्ण सिद्ध पर्याय प्रगट, होता है सादि अनंत प्रकाश ।।
काल अनंत व्यर्थ ही खोये दुख अनंत अब तक छाये ।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव परिवर्तन पाँचों पाये ।।
पर भावों में मग्न रहा तो रही विकारी ही पर्याय ।
निज स्वभाव का आश्रय लेता होती प्रगट शुद्ध पर्याय ।।
अष्ट कर्म से रहित अवस्था पाऊँ परम शुद्ध हे देव ।
शुद्ध त्रिकाली ध्रुव स्वभाव से मैं भी सिद्ध बनूँ स्वयमेव ।।
इसीलिये हे स्वामी मैंने अष्ट द्रव्य से की पूजन ।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ ले निज ध्रुव का अवलम्बन ।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय पूर्णार्घ्यंम् नि० स्वाहा ।

अचेतन द्रव्य जड़ संयोग सुख दुख के नहीं दाता।
संयोगी भाव करके तू स्वयं दुखवान होता है।।

सेही चिह्न चरण में शोभित श्री अनंत प्रभु पद उर धार।
मन वच तन जो ध्यान लगाते हो जाते भव सागर पार।।

❂ इत्याशीर्वादः ❂

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

— ❂ —

श्री शान्तिनाथ पूजन

शान्ति जिनेश्वर हे परमेश्वर परम शान्त मुद्रा अभिराम।
पञ्चम चक्री शान्ति सिन्धु सोलहवें तीर्थङ्कर सुखधाम।।
निजानन्द में लीन शान्ति नायक जग गुरु निश्चल निष्काम।
श्री जिन दर्शन पूजन अर्चन वंदन नित प्रति करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जल स्वभाव शीतल मलहारी आत्म स्वभाव शुद्ध निर्मल।
जन्म मरण मिट जाये प्रभु जब जागे निज स्वभाव का बल।।
परम शान्तिसुखदायक शान्तिविधायक शान्तिनाथ भगवान।
शाश्वत सुख की मुझे प्राप्ति हो श्री जिनवर दो यह वरदान।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन गुण सुगन्धमय निज स्वभाव अति ही शीतल।
पर विभाव का ताप मिटाता निज स्वरूप का अन्तर्बल।।परम०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

भव अटवी से निकल न पाया पर पदार्थ में अटका मन।
यह संसार पार करने का निज स्वभाव ही है साधन।। परम०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि०।

जिस घड़ी निज आत्म की अनुभूति होती है।
उस घड़ी सम्यक्त्व की सुविभूति होती है।।

कोमल पुष्प मनोरम जिनमें राग आग की दाह प्रबल।
निज स्वरूप की महाशक्ति से काम व्यथा होती निर्बल ।। परम०

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

उर की क्षुधा मिटाने वाला यह चरु तो दुखदायक है।
इच्छाओं की भूख मिटाता निज स्वभाव सुखदायक है ।। परम०

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

अन्धकार में भ्रमते भ्रमते भव भव में दुख पाया है।
निज स्वरूप के ज्ञान भानु का उदय न अब तक आया है ।। परम०

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम नि०।

इष्ट अनिष्ट सँयोगों में ही अब तक सुख दुख माना है।
पूर्ण त्रिकाली ध्रुव स्वभाव का बल न कभी पहिचाना है ।।परम०

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विनाशनाय धूपम् नि०।

शुद्ध भाव पीयूष त्याग कर पर को अपना मान लिया।
पुण्य फलों में रूचि करके अब तक मैंने विष पान किया ।।परम०

ॐ ह्रीं श्री शाँतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा।

अविनश्वर अनुपम अनर्घ पद सिद्ध स्वरूप महा सुखकार।
मोक्ष भवन निर्माता निज चैतन्य रागनाशक अघहार ।। परम०

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घम् नि० स्वाहा।

श्री पंच कल्याणक

भादव कृष्ण सप्तमी के दिन तज सर्वार्थ सिद्धि आये।
माता ऐरा धन्य हो गईं विश्वसेन नृप हरषाये ।।
छप्पन दिककुमारियों ने नित नवल गीत मङ्गल गाये।
शान्तिनाथ के गर्भोत्सव पर रत्न इन्द्र ने बरसाये ।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तमी गर्भ मङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

जब तक मिथ्यात्व हृदय में है संसार न पल भर कम होगा।
जब तक पर द्रव्यों से प्रतीति भव भार न तिल भर कम होगा॥

नगर हस्तिनापुर में जन्मे त्रिभुवन में आनन्द हुआ।
ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को सुरगिरि पर अभिषेक हुआ॥
मङ्गल वाद्य नृत्य गीतों से गूञ्ज उठा था पाण्डुक वन।
हुआ जन्म कल्याण महोत्सव शान्तिनाथ प्रभु का शुभ दिन॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ वदी चतुर्दश्यां जन्म मङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

मेघ विलय लख इस जग की अनित्यता का प्रभु भान लिया।
लौकान्तिक देवों ने आकर धन्य धन्य जय गान किया॥
कृष्ण चतुर्दशि ज्येष्ठ मास की अतुलित वैभव त्याग दिया।
शान्तिनाथ ने मुनिव्रत धारा शुद्धातम अनुराग किया॥

ॐ ह्रीं जेष्ठ कृष्णा चतुर्दश्याम् तपो मङ्गल मण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी को चारों घातिकर्म चकचूर किये।
पाया केवल ज्ञान जगत के सारे सङ्कट दूर किये॥
समवशरण रचकर देवों ने किया ज्ञान कल्याण महान।
शान्तिनाथ प्रभु की महिमा का गूञ्जा जग में जय-जय गान॥

ॐ ह्रीं पौष शुल्का दशम्यां केवल ज्ञान मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को प्राप्त किया सिद्धत्व महान।
कूट कुन्द प्रभ गिरि सम्मेद शिखर से पाया पद निर्वाण॥
सादि अनन्त सिद्ध पद को प्रगटाया प्रभु ने धर निज ध्यान।
जय-जय शान्तिनाथ जगदीश्वर अनुपम हुआ मोक्ष कल्याण॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा।

(जयमाला)

शान्तिनाथ शिवनायक शान्ति विधायक शुचिमय शुद्धात्मा।
शुभ्र मूर्ति शरणागत वत्सल शील स्वभावी शान्तात्मा॥

विन समकित व्रत पूजन अर्चन जप तप सब तेरे निष्फल हैं।
संसार बंध के हैं प्रतीक भवसागर के ही दल दल हैं॥

नगर हस्तिनापुर के अधिपति विश्वसेन नृप के नन्दन।
मां ऐरा के राजदुलारे सुर नर मुनि करते वन्दन॥
कामदेव बारहवें पंचम चक्री तीन ज्ञान धारी।
बचपन में अणुव्रत धर यौवन में पाया वैभव भारी॥
भरतक्षेत्र के षट खण्डों को जय कर हुए चक्रवर्ती।
नवनिधि चौदह रत्न प्राप्त कर शासक हुए न्यायवर्ती॥
इस जग के उत्कृष्ट भोग भोगते बहुत जीवन बीता।
एक दिवस नभ में घन का परिवर्तन लख निज मन रीता॥
यह संसार असार जानकर तप धारण का किया विचार।
लौकान्तिक देवर्षि सुरों ने किया हर्ष से जय-जयकार॥
वन में जाकर दीक्षा धारी पंच मुष्टि कचलोच किया।
चक्रवर्ति की अतुल सम्पदा क्षण में त्याग विराग लिया॥
मन्दिर पुर के नृप सुमित्र ने भक्तिपूर्वक दान दिया।
प्रभुकर में पय धारा दे भव सिन्धु सेतु निर्माण किया॥
उच्च तपस्या से तुमने कर्मों की कर निर्जरा महान।
सोलह वर्ष मौन तप करके ध्याया शुद्धातम का ध्यान॥
श्रेणी क्षपक चढे स्वामी केवल ज्ञानी सर्वज्ञ हुए।
दिव्य ध्वनि से जीवों को उपदेश दिया विश्वज्ञ हुए॥
गणधर थे छत्तीस आपके चक्रायुध पहले गणधर॥
मुख्य आर्यिका हरिषेणा थीं श्रोता पशु, नर, सुर, मुनिवर॥
कर विहार जग में जगती के जीवों का कल्याण किया।
उपादेय है शुद्ध आत्मा यह सन्देश महान दिया॥
पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ आश्रव जग में भ्रमण कराते हैं।
जो संवर धारण करते हैं परम मोक्ष पद पाते हैं॥

बैराग्य घटा घिर आई चमकी निजत्व की बिजली।
अब जिय को नहीं सुहाती पर के ममत्व की कजली॥

सात तत्त्व की श्रद्धा करके जो भी समकित धरते हैं।
रत्नत्रय का अवलम्बन ले मुक्ति वधू को बरते हैं॥
सम्मेदाचल के पावन पर्वत पर आप हुए आसीन।
कूट कुन्दप्रभ से अघातिया कर्मों से भी हुए विहीन॥
महा मोक्ष निर्वाण प्राप्त कर गुण अनन्त से युक्त हुए।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध सिद्ध पद पाया भव से मुक्त हुए॥
हे प्रभु शान्तिनाथ मङ्गलमय मुझको भी ऐसा वर दो।
शुद्ध आत्मा की प्रतीति मेरे उर में जाग्रत कर दो॥
पाप, ताप सन्ताप नष्ट हो जाये सिद्ध स्वपद पाऊँ।
पूर्ण शान्तिमय शिव सुख पाकर फिर न लौट भव में आऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यम् नि० स्वाहा।

चरणों में मृग चिह्न सुशोभित शान्ति जिनेश्वर का पूजन॥
भक्ति भाव से जो करते हैं वे पाते हैं मुक्ति गगन॥

✲ इत्याशीर्वादः ✲

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

— ✲ —

श्री नेमिनाथ पूजन

जय श्री नेमिनाथ तीर्थङ्कर बाल ब्रह्मचारी भगवान।
हे जिनराज परम उपकारी करुणा सागर दया निधान॥
दिव्यध्वनि के द्वारा हे प्रभु तुमने किया जगत कल्याण।
श्री गिरनार शिखर से पाया तुमने सिद्ध स्वपद निर्वाण॥
आज तुम्हारे दर्शन करके निज स्वरूप का आया ध्यान।
मेरा सिद्ध समान सदा पद यह दृढ़ निश्चय हुआ महान॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

समकित का सावन आया समरस की लगी झडी रे।
अंतरस की रीती सरिता भर आई उमड़ पड़ी रे।।

समकित जल की धारा से तो मिथ्या भ्रम धुल जाता है।
तत्त्वों का श्रद्धान स्वयं को शाश्वत मङ्गल दाता है।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थङ्कर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मिथ्यात्व विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा का पावन चन्दन भव ताप मिटाता है।
क्रोध कषाय नष्ट होती है निज की अरुचि हटाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्रोध कषाय विनाशनाय चन्दम् नि०।

भाव शुभाशुभ का अभिमानी मान कषाय बढ़ाता है।
वस्तु स्वभाव जान जाता तो मान कषाय मिटाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मान कषाय विनाशनाय अक्षतम् नि०।

चेतन छल से पर भावों का माया जाल बिछाता है।
भव भव की माया कषाय को समकित पुष्प मिटाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय माया कषाय विनाशनाय पुष्पम् नि०।

तृष्णा की ज्वाला से लोभी कभी नहीं सुख पाता है।
सम्यक् चरु से लोभ नाश कर यह शुचिमय हो जाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय लोभ कषाय विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

अन्धकार अज्ञान जगत में भव भव भ्रमण कराता है।
समकित दीप प्रकाशित हो तो ज्ञान नेत्र खुल जाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि०।

पर विभाव परिणति में फँसकर निज का धुवाँ उड़ाता है।
निज स्वरूप की गन्ध मिले तो पर की गन्ध जलाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय विभाव परणित विनाशनायधूपम् नि०।

जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी।
जिस क्षण निज पर भेद जान ले उस क्षण ही तू ज्ञानी।।

निज स्वभाव फल पाकर चेतन महा मोक्ष फल पाता है।
चहुँगति के बन्धन कटते हैं सिद्ध स्वपद पा जाता है।। नेमि०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ से लाभ न कुछ हो पाता है।
जब तक निज स्वभाव में चेतन मग्न नहीं हो जाता है।।
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूं पूजन।
वीतराग तीर्थंङ्कर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि० स्वाहा।

श्री पंच कल्याणक

कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन शिव देवी उर धन्य हुआ।
अपराजित विमान से चलकर आये मोद अनन्य हुआ।।
स्वप्न फलों को जान सभी के मन में अति आनन्द हुआ।
नेमिनाथ स्वामी का गर्भोत्सव मंगल सम्पन्न हुआ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल षष्ठयां गर्भ मङ्गल मण्डिताय अर्घम् नि०।

श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन शौर्यपुरी में जन्म हुआ।
नृपति समुद्र विजय आँगन में सुर सुरपति का नृत्य हुआ।।
मेरु सुदर्शन पर क्षीरोदधि जल से शुभ अभिषेक हुआ।
जन्म महोत्सव नेमिनाथ का परम हर्ष अतिरेक हुआ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला षष्ठयां जन्म मङ्गल मण्डिताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल षष्ठमी को प्रभु पशुओं पर करुणा आई।
राजमती तज सहस्राम्र वन में जा जिन दीक्षा पाई।।

पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती ।
जड की रुचि में चिन्मूरति चिन्मूरति की रुचि कभी न भाती ।।

इन्द्रादिक ने उठा पालकी हर्षित मङ्गलचार किया ।
नेमिनाथ प्रभु के तप कल्याणक पर जय-जयकार किया ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठयां तपो मङ्गल मण्डिताय अर्घम् नि० स्वाहा ।

आश्विन शुक्ला एकम् को प्रभु हुआ ज्ञान कल्याण महान ।
उर्जयंत पर समवशरण में दिया भव्य उपदेश प्रधान ।।
ज्ञानावरण, दर्शनावरणी मोहनीय का नाश किया ।
नेमिनाथ ने अन्तराय क्षय कर कैवल्य प्रकाश लिया ।।

ॐ ह्री श्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ला प्रतिपदायाम् ज्ञान मङ्गल मण्डिताय अर्घम् नि० स्वाहा ।

श्री गिरनार क्षेत्र पर्वत से महा मोक्ष पद को पाया ।
जगती ने आषाढ़ शुक्ल सप्तमी दिवस मङ्गल गाया ।।
वेदनीय अरु आयु नाम अरु गोत्र कर्म अवसान किया ।
अष्ट कर्म हर नेमिनाथ ने परम पूर्ण निर्वाण लिया ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ शुक्ला सप्तम्यॉं मोक्ष मङ्गल मण्डिताय अर्घम् नि० स्वाहा ।

❋ जयमाला ❋

जय नेमिनाथ नित्योदित जिन, जय नित्यानन्द नित्य चिन्मय ।
जय निर्विकल्प निश्चल निर्मल, जय निर्विकार नीरज निर्भय ।।
नृपराज समुद्र विजय के सुत माता शिव देवी के नन्दन ।
आनन्द शौर्यपुर में छाया जय-जय से गूञ्जा पाण्डुक वन ।।
बालकपन में क्रीड़ा करते तुमने धारे अणुव्रत सुखमय ।
द्वारिका पुरी में रहे अवस्था पाई सुन्दर यौवन वय ।।
आमोद-प्रमोद तुम्हारे लख पूरा यादव कुल हर्षाता ।
तब श्रीकृष्ण नारायण ने जूनागढ़ से जोड़ा नाता ।।

वीतराग विज्ञान ज्ञान का अनुभव ज्ञान चेतना लाता।
कर्म चेतना उड़ जाती है निज चैतन्य परम पद पाता।

राजुल से परिणय करने को जूनागढ़ पहुँचे वर बनकर।
जीवों की करुण पुकार सुनी जागा उर में वैराग्य प्रखर॥
पशुओं को बन्धन मुक्त किया कङ्गन विवाह का तोड़ दिया।
राजुल के द्वारे आकर भी स्वर्णिम रथ पीछे मोड़ लिया॥
रथ त्याग चढ़े गिरनारी पर जा पहुँचे सहस्राम्रवन में।
वस्त्राभूषण सब त्याग दिये जिन दीक्षा धारी तन मन में॥
फिर उग्र तपस्या के द्वारा निश्चय स्वरूप मर्मज्ञ हुए।
घातिया कर्म चारों नाशे छप्पन दिन में सर्वज्ञ हुए॥
तीर्थङ्कर प्रकृति उदय आई सुर हर्षित समवशरण रचकर।
प्रभु गन्ध कुटी में अन्तरीक्ष आसीन हुए पद्मासन धर॥
ग्यारह गणधर में थे पहले गणधर वरदत्त महा ऋषिवर।
थी मुख्य आर्यिका राजमती श्रोता थे अगणित भव्य प्रवर॥
दिव्य ध्वनि खिरने लगी शाश्वत ओंकार घन गर्जन सी।
शुभ बारह सभा बनी अनुपम सौन्दर्य प्रभा मणिकंचन सी॥
जग जीवों का उपकार किया भूलों को शिव पथ बतलाया।
निश्चय रत्नत्रय की महिमा का परम मोक्ष फल दर्शाया।
कर प्राप्त चतुर्दश गुण स्थान योगों का पूर्ण अभाव किया।
कर ऊर्ध्व गमन सिद्धत्व प्राप्त कर सिद्ध लोक आवास लिया॥
गिरनार शैल से मुक्त हुए तन के परमाणु उड़े सारे।
पावन मङ्गल निर्वाण हुआ सुरगण के गूँजे जयकारे॥
नख केश शेष थे देवों ने माया मय तन निर्माण किया।
फिर अग्नि कुमार सुरों ने आ मुकुटानल से तन भस्म किया॥
पावन भस्मी का निज निज के मस्तक पर सबने तिलक किया।
मङ्गल वाद्यों की ध्वनि गूञ्जो निर्वाण महोत्सव पूर्ण किया॥

यदि भव सागर दुख से भय है तो तज दो पर भाव को।
करो चिन्तवन शुद्धातम का पालो सहज स्वभाव को॥

कर्मों के बन्धन टूट गये पूर्णत्व प्राप्त कर सुखी हुए।
हम तो अनादि से हे स्वामी ! भव दुख बन्धन से दुखी हुए॥
ऐसा अन्तर बल दो स्वामी हम भी सिद्धत्व प्राप्त कर लें।
तुम पद चिह्नों पर चल प्रभुवर शुभ अशुभ विभावों को हरलें॥
परिणाम शुद्ध का अर्चन कर हम अन्तर ध्यानी बन जावें।
घातिया चार कर्मों को हर हम केवल ज्ञानी बन जावें॥
शाश्वत शिव पद पाने स्वामी हम पास तुम्हारे आ जायें।
अपने स्वभाव के साधन से हम तीन लोक पर जय पायें॥
निज सिद्ध स्वपद पाने को प्रभु हर्षित चरणों में आया हूं।
वसु द्रव्य सजा हे नेमीश्वर प्रभु पूर्ण अर्घ मैं लाया हूं॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पन्चकल्याणक प्राप्ताय पूर्णार्घम् नि०।

शङ्ख चिह्न चरणों में शोभित जय-जय नेमि जिनेश महान।
मन वच तन जो ध्यान लगाते वे हो जाते सिद्ध समान॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः

—:—

श्री पार्श्वनाथ पूजन

तीर्थङ्कर श्री पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में करूँ नमन।
अश्वसेन के राजदुलारे वामा देवी के नन्दन॥
बाल ब्रह्मचारी भवतारी योगीश्वर जिनवर वन्दन।
श्रद्धा भाव विनय से करता श्री चरणों का मैं अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

परिणाम बंध का कारण है ।
परिणाम मोक्ष का कारण ।।

समकित जल से तो अनादि की मिथ्या भ्रान्ति हटाऊँ मैं ।
निज अनुभव से जन्म मरण का अंत सहज पा जाऊँ मैं ।।
चिन्तामणि प्रभु पार्श्वनाथ की पूजन कर हर्षाऊँ मैं ।
सङ्कटहारी मङ्गलकारी श्री जिनवर गुण गाऊँ मैं ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन की तपन मिटाने वाला चन्दन भेंट चढ़ाऊँ मैं ।
भव आताप मिटाने वाला समकित चन्दन पाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दम् नि० ।

अक्षत चरण समर्पित करके निज स्वभाव में आऊँ मैं ।
अनुपम शान्त निराकुल अक्षय अविनश्वर पद पाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेद्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।

अष्ट अङ्गयुत सम्यक् दर्शन पाऊँ पुष्प चढ़ाऊँ मैं ।
कामवाण विध्वंस करु निज शील स्वभाव सजाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

इच्छाओं की भूख मिटाने सम्यक् पथ पर आऊँ मैं ।
समकित का नैवेद्य मिले तो क्षुधा रोग हर पाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

मिथ्यातम के नाश हेतु यह दीपक तुम्हें चढ़ाऊँ मैं ।
समकित दीप जले अन्तर में ज्ञान ज्योति प्रगटाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

समकित धूप मिले तो भगवन् शुद्ध भाव में आऊँ मैं ।
भाव शुभाशुभ धूम्र बन उड़ जायें धूप चढ़ाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।

जीव शुद्ध है किन्तु विकारी है अजीव के सँग पर्याय ।
जड़ पुद्गल कर्मों की छाया में पाता भव दुख समुदाय ।।

उत्तम फल चरणों में अर्पित आत्म ध्यान ही ध्याऊँ मैं ।
समकित का फल महामोक्ष फल प्रभु अवश्य पा जाऊँ मैं ।। चिन्ता०

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० ।

अष्ट कर्म क्षय हेतु अष्ट द्रव्यों का अर्घ बनाऊँ मैं ।
अविनाशी अविकारी अष्टम वसुधापति बन जाऊँ मैं ।।
चिन्तामणि प्रभु पार्श्वनाथ की पूजन कर हर्षाऊँ मैं ।
सङ्कटहारी मङ्गलकारी श्री जिनवर गुण गाऊँ मैं ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

श्री पंच कल्याणक

प्राणत स्वर्ग त्याग आये माता वामा के उर श्रीमान ।
कृष्ण दूज बैशाख सलोनी सोलह स्वप्न दिखे छविमान ।।
पन्द्रह मास रत्न बरसे नित मङ्गलमयी गर्भ कल्याण ।
जय जय पार्श्व जिनेश्वर प्रभु परमेश्वर जय जय दया निधान ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय बैसाख कृष्ण द्वितिया गर्भ कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

पौष कृष्ण एकादशी को जन्मे, हुआ जन्म कल्याण ।
ऐरावत गजेन्द्र पर आये तब सौधर्म इन्द्र ईशान ।।
गिरि सुमेरु पर क्षीरोदधि से किया दिव्य अभिषेक महान ।
जय जय पार्श्व जिनेश्वर प्रभु परमेश्वर जय जय दया निधान ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

बाल ब्रह्मचारी व्रतधारी उर छाया वैराग्य प्रधान ।
लौकान्तिक देवों ने आकर किया आपका जय जय गान ।।

यह निकृष्ट पर परिणति तुझको, नर्क निगोद बताएगी।
सर्वोत्कृष्ट स्वयं की परिणति, तुझे मोक्ष ले जाएगी।।

पौष कृष्ण एकादशमी को हुआ आपका तप कल्याण।
जय जय पार्श्व जिनेश्वर प्रभु परमेश्वर जय जय दया निधान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा एकादश्याम् तपो कल्याण प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ जीव ने अहिक्षेत्र पर किया घोर उपसर्ग महान्।
हुए न विचलित शुक्ल ध्यान धर श्रेणी चढ़े हुए भगवान्।।
चैत्र कृष्ण की चौथ हो गई पावन प्रगटा केवल ज्ञान।
जय जय पार्श्व जिनेश्वर प्रभु परमेश्वर जय जय दया निधान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणक प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन बने अयोगी हे भगवान्।
अन्तिम शुक्ल ध्यान धर सम्मेदाचल से पाया पद निर्वाण।।
कूट सुवर्ण भद्र पर इन्द्रादिक ने किया मोक्ष कल्याण।
जय जय पार्श्व जिनेश्वर प्रभु परमेश्वर जय जय दया निधान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणक प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

☼ जयमाला ☼

तेईसवें तीर्थङ्कर प्रभु परम ब्रह्ममय परम प्रधान।
प्राप्त महा कल्याणपंचक: पार्श्वनाथ प्रणतेश्वर प्राण।।
वाराणसी नगर अति सुन्दर विश्वसेन नृप परम उदार।
ब्राह्मी देवी के घर जन्मे जग में छाया हर्ष अपार।।
मति श्रुति अवधि ज्ञान के धारी बाल ब्रह्मचारी त्रिभुवान।
अल्प आयु में दीक्षा धर के पंच महाव्रत धरे महान।।
चार मास छद्मस्थ मौन रह वीतराग अर्हन्त हुए।
आत्म ध्यान के द्वारा प्रभु सर्वज्ञ देव भगवन्त हुए।।

मैं निर्विकल्प हूँ शुद्ध बुद्ध, इतना तो अंगीकार करो।
शुद्धपयोग मय परम पारिणामिक स्वभाव स्वीकार करो ।।

बैरी कमठ जीव ने तुमको नौं भव तक दुख पहुँचाया।
इस भव में भी संवर सुर हो महा विघ्न करने आया ।।
किया अग्निमय घोर उपद्रव भीषण झंझावात चला।
जल प्लावित हो गयी धरा पर ध्यान आपका नहीं हिला ।।
यक्षी पद्मावती यक्ष धरणेन्द्र विघ्न हरने आये।
पूर्व जन्म के उपकारों से हो कृतज्ञ तत्क्षण आये ।।
प्रभु उपसर्ग निवारण के हित शुभ परिणाम हृदय छाये।
फण मण्डप अरु सिंहासन रच जय जय जय प्रभु गुण गाये ।।
देव आपने साम्य भाव धर निज स्वरूप को प्रगटाया।
उपसर्गों पर जय पाकर प्रभु निज कैवल्य स्वपद पाया ।।
कमठ जीव की माया विनशी वह भी चरणों में आया।
समवशरण रचकर देवों ने प्रभु का गौरव प्रगटाया ।।
जगत जनों को ओंकार ध्वनिमय प्रभु ने उपदेश दिया।
शुद्ध बुद्ध भगवान् आत्मा सबकी है सन्देश दिया ।।
दश गणधर थे जिनमें पहले मुख्य स्वयंभू गणधर थे।
मुख्य आर्यिका सुलोचना थीं श्रोता महासेन वर थे ।।
जीव, अजीव, आश्रव, संवर, बन्ध निर्जरा मोक्ष महान।
ज्यों का त्यों श्रद्धान तत्व का सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ प्रधान ।।
जीव तत्व तो उपादेय है, अरु अजीव तो है सब ज्ञेय।
आश्रव बन्ध हेय है साधन संवर निर्जर मोक्ष उपेय ।।
सात तत्व ही पाप पुण्य मिल नव पदार्थ हो जाते हैं।
तत्व ज्ञान बिन जग के प्राणी भव भव में दुख पाते हैं ।।
वस्तु तत्व को जान स्वयं के आश्रय में जो आते हैं।
आत्म चिंतवन करके वे ही श्रेष्ठ मोक्ष पद पाते हैं ।।

जो स्वरूप वेत्ता होता है, वही भावश्रुत जल पीता है।
सर्व द्रव्य गुण पर्यायों को, जान अमर जीवन जीता है॥

हे प्रभु ! यह उपदेश आपका मैं निज अन्तर में लाऊँ।
आतम बोध की महाशक्ति से मैं निर्वाण स्वपद पाऊँ॥
अष्ट कर्म को नष्ट करूँ मैं तुम समान प्रभु बन जाऊँ।
सिद्ध शिला पर सदा विराजूँ निज स्वभाव में मुस्काऊँ॥
इसी भावना से प्रेरित हो हे प्रभु ! की है यह पूजन।
तुव प्रसाद से एक दिवस मैं पा जाऊँगा मुक्ति सदन॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्प चिह्न शोभित चरण पार्श्वनाथ उर धार।
मन, वच, तन जो पूजते वे होते भव पार॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री वर्धमान जिन पूजन

वर्धमान सन्मति सुवीर प्रभु, महावीर मंगलदाता।
वर्त्तमान चौबीसी के, अंतिम तीर्थङ्कर विख्याता॥
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, त्रिभुवनपति भव दुख घाता।
महामोक्ष कल्याण प्रदायक जगदुद्धारक जग त्राता॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट।
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नित चरण चढ़ाऊँ देव निर्मल जल धारा।
रागादिक मल का नाश मैं करदूं सारा॥

धर्म ध्यान का क्रिया आचरण, अगर प्रशंसा के हित ।
तो अज्ञानी जन को ठगने, में तू हुआ दत्त चित ।।

हे वर्धमान भगवान तुम पद ध्याता हूँ ।
हो जाऊँ आप समान मन में भाता हूँ ।।
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिर शीतलता के हेतु लाया हूं चंदन ।
हो आत्म शक्ति से नष्ट चहुँगति का क्रन्दन ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

शुभ अशुभ विकार विभाव आश्रव दुखदायक ।
हे शुद्ध भाव ही सार अक्षय सुख दायक ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये नि० स्वाहा ।

दुखदायी मदन अनंग इसका गर्व हरूँ ।
सुखदायी शील अभंग हे प्रभु प्राप्त करूँ ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

जग के वैभव की भूख पर अब जय पाऊँ ।
तृष्णाओं का कर अंत निज वैभव ध्याऊँ ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

सम्यक् प्रकाश से मोह मिथ्यातम भागे ।
अंतर में हो आलोक केवल रवि जागे ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

आठों ही कर्म विचित्र भव भव दुखकारी ।
हों ध्यान अग्नि में नष्ट लूं पद सुखकारी ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धपम् नि० ।

निर्वाण महाफल हेतु शुभफल ध्वान्त करूँ ।
यह पुण्य पाप की आग हे प्रभु शान्त करूँ ।। हे वर्धमान०
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम् नि० स्वाहा ।

जीवन दृश्य बदल जाएगा, जब देखेगा निज की ओर ।
अघ के बादल विघट जाएंगे, हो जाएगी समकित भोर ॥

पाऊँ अनर्घ पद देव अविनश्वर अविचल ।
अविकारी अमल अनूप अजर अमर अविकल ॥ हे वर्धमान०

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

श्री पंच कल्याणक

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ की, हुई पवित्र महान ।
त्रिशला माँ उर अवतरे, हुआ गर्भ कल्याण ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठयाम् गर्भ मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

शुक्ल त्रयोदशि चैत्र की हुआ जन्म कल्याण ।
गिरि सुमेरु पर इन्द्र ने उत्सव किया महान ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मंगल मंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० ।

दशमी मगसिर कृष्ण की पावन तप कल्याण ।
भव तन भोग विरक्त हो लिया महाव्रत यान ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्ण दश्याम् तपो मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यम् नि० स्वाहा ।

शुक्ल दशम् वैशाख को पाया केवल ज्ञान ।
घाति कर्म क्षय कर हुए श्री अरहंत महान ॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल दश्याम् ज्ञान मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेंद्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

कृष्ण अमावस कार्तिकी ध्याया अन्तिम ध्यान ।
अष्ट कर्म अवसान कर हुए सिद्ध भगवान ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् नि० स्वाहा ।

जिस दिन तू मिथ्यात्व भाव को कर देगा पूरा विध्वंस।
प्रकट स्वरूपाचरण करेगा पाकर पूर्ण ज्ञान का अंश॥

☼ जयमाला ☼

सुत सिद्धार्थ, जिनेश को वन्दूँ वारम्वार।
वीतराग विज्ञान पा करूं आत्म उद्धार॥

जय जय वर्धमान जिन स्वामी। महावीर प्रभु अंतर्यामी॥
जय अतिवीर वीर गुणधामी। वैशालिक सुवीर शिवनामी॥
जय जय सन्मति सन्मतिदाता। जय जगदीश्वर दृष्टाज्ञाता॥
जय सर्वज्ञ मोक्ष सुखकारी। जय जिनेन्द्र जय दुर्गति हारी॥
बाल ब्रम्हचारी भवतारी। है त्रिकाल वन्दना हमारी॥
चार कर्म घनघाति निवारक। अष्ट कर्म अरि के संहारक॥
स्वपर प्रकाशक केवल ज्ञानी। ध्यान ध्येय ध्याता विज्ञानी॥
चिदानंद चैतन्य विलासी। मंगल मय चेतन अविनाशी॥
निज स्वभाव साधन के द्वारा। स्वयं तरे औरों को तारा॥
राग मात्र को हेय बताया। शुद्धातम ही श्रेय जताया॥
भवतन भोग रोग अघनाशूँ॥ निज स्वरूप चैतन्य प्रकाशूँ॥
पाप पुण्य आश्रव विनशाऊँ। संवर भाव सहज प्रगटाऊँ॥
वस्तु स्वरूप करूँ हृदयंगम। तत्त्व भावना भाऊं हरदम॥
निज शुद्धात्मतत्त्व को जानूं। सर्वोत्कृष्ट स्वपद पहचानूँ॥
अब मैं सम्यक दर्शन पाऊँ। सम्यक् ज्ञान सहज उरलाऊँ॥
सम्यक् चारित को विकसाऊँ। मोक्षमार्ग पर मैं आजाऊँ॥
एक शुद्ध परिपूर्ण त्रिकाली। ज्ञायक मैं अनंत गुणशाली।
सर्व कषाय भाव जय करलूं। मोहक्षीण कर निज पद वरलूं॥
प्रभु पूजन का यह फल पाऊँ फिर न लौटकर भव में आऊँ॥
यही विनय है त्रिभुवन नामी। तुम समान बन जाऊँ स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमत की परिपाटी में पहिले सम्यकदर्शन होता।
फिर स्वशक्ति अनुसार जीवको व्रत संयम तप धन होता।।

सिंह सुशोभित चरण में, वर्धमान जिनराज।
मन वच तन जो पूजते पाते निज पद राज।।

☼ इत्याशीर्वादः ☼

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय नमः।

-: ☼ :-

श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिन पूजन

जय शांन्तिनाथ हे शांति मूर्ति जय कुन्थुनाथ आनन्द रूप।
जय अरहनाथ अरि कर्मजयी तीनों तीर्थंकर विश्वभूप।।
तुम कामदेव अतिशय महान सम्राट चक्रवर्ती अनूप।
भव भोग देह से हो विरक्त पाया निज सिद्ध स्वपद स्वरूप।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री शांतिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पावन निर्मलनीर समुज्ज्वल श्री चरणों में अर्पित है।
जन्म मरण नाशो हे स्वामी सादर हृदय समर्पित है।।
शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर तीर्थंकर मङ्गलकारी।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती पद त्यागी बलिहारी।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

तन का ताप विनाशक चन्दन श्री चरणों में अर्पित है।
भव आताप मिटाओ स्वामी सादर हृदय समर्पित है।।
शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर तीर्थंकर मंगलकारी।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती पद त्यागी बलिहारी।।

ॐ ह्री श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनम् नि० स्वाहा।

दिव्य ध्वनि की अविच्छिन्न धारा में आती है यह बात।
ध्रुव स्वभाव आश्रय से होता है प्रारंभ नवीन प्रभात॥

अक्षय तन्दुल पुंज मनोहर श्री चरणों में अर्पित है।
अनुपम अक्षय निज पद दो प्रभु सादर हृदय समर्पित है॥
शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर तीर्थङ्कर मंगलकारी।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती पद त्यागी बलिहारी॥
ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि०।
अतिशय सुन्दर भाव पुष्प शुभ श्री चरणों में अर्पित है।
कामरोग विध्वंस करो प्रभु सादर हृदय समर्पित है॥ शान्ति०
ॐ ह्रीं श्री शांतिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।
मन भावन नैवेद्य सुहावन श्री चरणों में अर्पित है।
क्षुधा व्याधि नाशो हे स्वामी सादर हृदय समर्पित है॥ शान्ति०
ॐ ह्रीं श्री शांतिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।
अन्धकार नाशक जड़दीपक श्री चरणों में अर्पित है।
मोह तिमिर हरलो हे स्वामी सादर हृदय समर्पित है॥ शान्ति०
ॐ ह्रीं श्रीं शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि०।
महा सुगन्धित धूप निशंकित श्री चरणों में अर्पित है।
अष्ट कर्म अरि ध्वंस करो प्रभु सादर हृदय समर्पित है॥ शान्ति०
ॐ ह्रीं श्री शांतिकुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।
पुण्य भाव का सारा शुभफल श्री चरणों में अर्पित है।
परम मोक्षफल दो हे स्वामी सादर हृदय समर्पित है॥ शान्ति०
ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि०।
अष्ट द्रव्य का अर्घ अष्ट विधि श्री चरणों में अर्पित है।
निज अनर्घ पद दो हे स्वामी सादर हृदय समर्पित है॥
शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर तीर्थङ्कर मंगलकारी।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती पद त्यागी बलिहारी॥
ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि०।

जीवन तरु आयु कर्म के बल पर ही हरियाता है।
जब आयु पूर्ण होती है तो पल में मुरझाता है॥

नगर हस्तिनापुर के अधिपति विश्वसेन नृप परम उदार।
माता ऐरा देवी के सुत शान्तिनाथ मंगल दातार॥
कामदेव बारहवें पंचम चक्री सोलहवें तीर्थेश।
भरत क्षेत्र को पूर्ण विजयकर स्वामी आप हुए चक्रेश॥
नभ में नाशवान बादल लख उर में जागा ज्ञान विशेष।
भव भोगों से उदासीन हो ले वैराग्य हुए परमेश॥
निज आत्मानुभूति के द्वारा वीतराग अर्हन्त हुए।
मुक्त हुए सम्मेद शिखर से परम सिद्ध भगवन्त हुए॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पच कल्याण प्राप्ताय अर्घम् नि० स्वाहा।

नगर हस्तिनापुर के राजा सूर्य सेन के प्रिय नन्दन।
राज दुलारे श्रीमती देवी रानी के सुत वन्दन॥
कामदेव तेरहवें तीर्थङ्कर सतरहवें कुन्थु महान।
छठे चक्रवर्ती बन पाई षट खंडों पर विजय प्रधान॥
भौतिक वैभव त्याग मुनीश्वर बन स्वरूप में लीन हुए।
भाव शुभाशुभ का अभाव कर शुक्ल ध्यान तल्लीन हुए॥
ध्यान अग्नि से कर्म दग्ध कर केवल ज्ञान स्वरूप हुए।
सिद्ध हुए सम्मेद शिखर से तीन लोक के भूप हुए॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थु नाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अर्घम् नि० स्वाहा।

नगर हस्तिनापुर के पति नृपराज सुदर्शन पिता महान।
माता मित्रा देवी की आँखों के तारे हे भगवान।
कामदेव चौदहवें सप्तम चक्री श्री अरनाथ जिनेश।
अष्टादशम तीर्थङ्कर जिन परम पूज्य जिनराज महेश॥

जब निज स्वभाव परिणित की धारा अजस्र बहती है।
अन्तर्मन में सिद्धों की पावन गरिमा रहती है।।

छहखंडों पर शासन करते करते जग अनित्य पाया।
भव तन भोगों से विरक्तिमय उर वैराग्य उमड़ आया।।
पंच महाव्रत धारण करके निज स्वभाव में हुए मगन।
पा कैवल्य श्री सम्मेद शिखर से पाया मुक्ति गगन।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अर्घम् नि० स्वाहा।

☼ जयमाला ☼

शान्ति कुन्थु अरनाथ जिनेश्वर के चरणों में नित वन्दन।
विमल ज्ञान आशीर्वाद दो काट सकूं मैं भव बन्धन।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरितमय लिया पंथ निर्ग्रन्थ महान।
सोलह वर्ष रहे छद्मस्थ अवस्था में तीनों भगवान।।
परम तपस्वी परम संयमी मौनी महाव्रती जिनराज।
निज स्वभाव के साधन द्वारा पाया तुमने निज पद राज।।
शुक्ल ध्यान के द्वारा स्वामी पाया तुमने केवल ज्ञान।
दे उपदेश भव्य जीवों को किया सकल जग का कल्याण।।
मैं अनादि से दुखिया व्याकुल मेरे संकट दूर करो।
पाप ताप संताप लोभ भय मोह क्षोभ चकचूर करो।।
सम्यक् दर्शन प्राप्त करूँ मैं निज परिणति में रमण करूँ।
रत्नत्रय का अवलम्बन ले मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ।।
वीतराग विज्ञान ज्ञान की महिमा उर में छा जाए।
भेद ज्ञान हो निज आश्रय से शुद्ध आत्मा दर्शाए।।
यही विनय है यही भावना विषय कषाय अभाव करूँ।
तुम समान मुनि वन हे स्वामी निज चैतन्य स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिन चरणाग्रेषु महाअर्घ्यम् नि०।

इस मनुष्य भव रूपी नंदन वन में रत्नत्रय के फूल।
पर अज्ञानी चुनता रहता है अधर्म के दुखमय शूल॥

मृग अज, मीन चिन्ह चरणों में प्रभु प्रतिमा जो करें नमन।
जन्म जन्म के पातक क्षय हों मिट जाता भव दुख क्रन्दन॥
रोग शोक दारिद्र आदि पापों का होता शीघ्र शमन।
भव समुद्र से पार उतरते जो नित करते प्रभु पूजन॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।

—:—

श्री बाहुबली स्वामी पूजन

जयति बाहुबलि स्वामी जय जय, करूँ वन्दना बारम्बार।
निज स्वरूप का आश्रय लेकर आप हुए भव सागर पार॥
हे त्रैलोक्य नाथ, त्रिभुवन में छाई महिमा अपरम्पार।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हो गई हुआ जगत् में जय जयकार॥
पूजन करने मैं आया हूं अष्ट द्रव्य का ले आधार।
यही विनय है चारों गति के दुख से मेरा हो उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्।

उज्ज्वल निर्मल जल प्रभु पद पंकज में आज चढ़ाता हूं।
जन्म मरण का नाश करूँ आनन्दकन्द गुण गाता हूं॥
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभु चरणों में शीष झुकाता हूं।
अविनश्वर शिव सुख पाने को नाथ शरण में आता हूं॥

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों में कहीं न सुख है तज इनमें सुख की आशा।
धन शरीर परिवार बध् बाँध व सब दुख की परिभाषा ॥

शीतल मलय सुगन्धित पावन चन्दन भेंट चढ़ाता हूँ।
भव आताप नाश हो मेरा ध्यान आपका ध्याता हूँ ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।

उत्तम शुभ्र अखण्डित तन्दुल हर्षित चरण चढ़ाता हूं।
अक्षय पद की सहज प्राप्ति हो यही भावना भाता हूं ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम नि०।

काम शत्रु के कारण अपना शील स्वभाव न पाता हूं।
काम भाव का नाश करूँ मैं सुन्दर पुष्प चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

तृष्णा की भीषण ज्वाला में प्रति पल जलता जाता हूं।
क्षुधा रोग से रहित बनूँ मैं शुभ नैवेद्य चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

मोह ममत्व आदि के कारण सम्यक् मार्ग न पाता हूं।
यह मिथ्यात्व तिमिर मिट जाये प्रभुवर दीप चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपम नि०।

है अनादि से कर्म बंध दुखमय न पृथक् कर पाता हूं।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ अतएव सु धूप चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने अष्ट कर्म विनाशनाय धूपम् नि०।

सहज सम्पदा युक्त स्वयं होकर भी भव दुख पाता हूँ।
परम मोक्ष पद शीघ्र मिले उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ ॥ श्री बाहु०

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।

पुण्य भाव से स्वर्गादिक पद बार बार पा जाता हूँ।
निज अनर्घ पद मिला न अब तक इससे अर्घ चढ़ाता हूँ ॥

पूर्णा नंद स्वरूप स्वयं तू निज स्वरूप का कर विश्वास।
ज्ञान चेतना में ही बसजा कर्म चेतना का कर नाश।।

श्री बाहुबलि स्वामी प्रभु चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को नाथ शरण में आता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि०।

(जयमाला)

आदिनाथ सुत बाहुबली प्रभु मात सुनन्दा के नन्दन।
चरम शरीरी कामदेव तुम पोदनपुरपति अभिनन्दन।।
छह खण्डों पर विजय प्राप्त कर भरत चढ़े वृषभाचल पर।
अगणित चक्री हुए नाम लिखने को मिला न थल तिल भर।।
मैं ही चक्री हुआ अहं का मान धूल हो गया तभी।
एक प्रशस्ति मिटाकर अपनी लिखी प्रशस्ति स्वहस्त जभी।।
चले अयोध्या किन्तु नगर में चक्र प्रवेश न कर पाया।
ज्ञात हुआ लघु भ्रात बाहुबलि सेवा में न अभी आया।।
भरत चक्रवर्ती ने चाहा बाहुबली आधीन रहे।
ठुकराया आदेश भरत का तुम स्वतन्त्र स्वाधीन रहे।।
भीषण युद्ध छिड़ा दोनों भाई के मन सन्ताप हुए।
दृष्टि, मल्ल, जल युद्ध भरत से करके विजयी आप हुए।।
क्रोधित होकर भरत चक्रवर्ती ने चक्र चलाया है।
तीन प्रदक्षिण देकर कर में चक्र आपके आया है।।
विजय चक्रवर्ती पर पाकर उर वैराग्य जगा तत्क्षण।
राजपाट तज ऋषभदेव के समवशरण को किया गमन।।
धिक् धिक् वह संसार और इसकी असारता को धिक्कार।
तृष्णा की अनन्त ज्वाला में जलता आया है संसार।।
जग की नश्वरता का तुमने किया चिंतवन बारम्बार।
देह भोग संसार आदि से हुई विरक्ति पूर्ण साकार।।

पाप पुण्य तज जो निजात्मा को ध्याता है।
वही जीव परिपूर्ण मोक्ष सुख विलसाता है॥

आदिनाथ प्रभु से दीक्षा ले व्रत संयम को किया ग्रहण।
चले तपस्या करने वन में रत्नत्रय को कर धारण॥
एक वर्ष तक किया कठिन तप कायोत्सर्ग मौन पावन।
किन्तु शल्य थी एक हृदय में भरत भूमि पर है आसन॥
केवल ज्ञान नहीं हो पाया एक शल्य ही के कारण।
परिषह शीत ग्रीष्म वर्षादिक जय करके भी अटका मन॥
भरत चक्रवर्ती ने आकर श्री चरणों में किया नमन।
कहा कि वसुधा नहीं किसी की मान त्याग दो हे भगवन्॥
तत्क्षण शल्य विलीन हुई तुम शुक्ल ध्यान में लीन हुए।
फिर अन्तरमुहूर्त में स्वामी मोह क्षीण स्वाधीन हुए॥
चार घातिया कर्म नष्ट कर आप हुए केवल ज्ञानी।
जय जयकार विश्व में गूञ्जा सारी जगती मुस्कानी॥
झलका लोका लोक ज्ञान में सर्व द्रव्य गुण पर्यायें।
एक समय में भूत भविष्यत् वर्तमान सब दर्शायें॥
फिर अघातिया कर्म विनाशे सिद्ध लोक में गमन किया।
पोदनपुर से मुक्ति हुई तीनों लोकों ने नमन किया॥
महामोक्ष फल पाया तुमने ले स्वभाव का अवलम्बन।
हे भगवान् बाहुबलि स्वामी कोटि कोटि शत् शत् वन्दन॥
आज आपका दर्शन करने चरण शरण में आया हूँ।
शुद्ध स्वभाव प्राप्त हो मुझको यही भाव भर लाया हूँ॥
भाव शुभाशुभ भव निर्माता शुद्ध भाव का दो प्रभु दान।
निज परणति में रमण करूँ प्रभु हो जाऊँ मैं आप समान॥
समकित दीप जले अन्तर में तो अनादि मिथ्यात्व गले।
राग द्वेष परणति हट जाये पुण्य पाप सन्ताप टले॥

अन्तर्जल्पों में जो उलझा निज पद न प्राप्त कर पाता है।
संकल्प विकल्प रहित चेतन निज सिद्ध स्वपद पा जाता है ॥

त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव का आश्रय लेकर बढ़ जाऊँ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा मुक्ति शिखर पर चढ़ जाऊँ ॥
मोक्ष लक्ष्मी को पाकर भी निजानन्द रसलीन रहूं।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाऊं सदा सुखी स्वाधीन रहूं ॥
आज आपका रूप निरखकर निज स्वरूप का भान हुआ।
तुम सम बने भविष्यत् मेरा यह दृढ़ निश्चय ज्ञान हुआ ॥
हर्ष विभोर भक्ति से पुलकित होकर की है यह पूजन।
प्रभु पूजन का सम्यक् फल हो कटें हमारे भव बन्धन ॥
चक्रवर्ति इन्द्रादिक पद की नहीं कामना है स्वामी।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य परम पद पायें हे अन्तरयामी ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि०।

घर घर मङ्गल छाये जग में वस्तु स्वभाव धर्म जानें।
वीतराग विज्ञान ज्ञान से शुद्धातम को पहिचानें ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनाय नमः।

श्री गौतम स्वामी पूजन

जय जय इन्द्र भूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीर्थंङ्कर श्री महावीर के प्रथम मुख्य गणधर जय जय ॥
द्वादशाङ्ग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभु की दिव्यध्वनि जिनवाणी को सुन हुए अभय ॥
ऋद्धि सिद्धि मङ्गल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मङ्गलमय शिव पथ पर चलकर मैं भी सिद्ध बनूं स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र मम् सन्निहितोभव भव वषट्।

अपने स्वरूप में रहता तो यह प्राणी परमेश्वर होता।
ज्ञायक स्वभाव के आश्रय से यह जीव स्वभावेश्वर होता।।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूँ।
सम्यक् दर्शन पाऊँ जन्म मरण क्षय कर भव रोग हरूँ।।
गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच पाप अविरति को त्यागूँ शीतल चन्दन चरण धरूँ।
भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने संसारताप विनाशनाय चन्दम् नि०।

पंच प्रमाद नष्ट करने को उज्ज्वल अक्षत भेंट करूँ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि०।

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेंट करूँ।
काम वाण विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने काम वाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

मन वच काया योग सर्व हरने को प्रभु नैवेद्य धरूँ।
क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊँ मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने को अन्तर दीप प्रकाश करूँ।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूँ मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

मैं सम्यक् चारित्र ग्रहण कर अन्तर तप की धूप वरूँ।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।।गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अष्ट कर्म विनाशनाय धूपम् नि०।

एक दिन भी जी मगर तू ज्ञान बन कर जी।
तू स्वयं भगवान है भगवान बन कर जी।।

रत्नत्रय का परम मोक्ष फल पाने को फल भेंट करूँ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।।गौतम०

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि०।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ चरणों में सविनय भेंट करूँ।
पद अनर्घ सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।।

गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि०।

श्रावण कृष्णा एकम् के दिन समवशरण में तुम आये।
मानस्तम्भ देखते ही तो मान, मोह अघ गल पाये।।
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर।
रत्नत्रय पाते ही दिव्य ध्वनि का लाभ लिया भरपूर।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने दिव्यध्वनि प्राप्ताय अर्घम् नि०।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्म घातिया करके क्षय।
सायङ्काल समय में पाई केवल ज्ञान लक्ष्मी जय।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय का करके अन्त।
अन्तराय का सर्वनाश कर तुमने पाया पद भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने केवल ज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०।

विचरण करके दुखी जगत् के जीवों का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया।।
देव बानवे वर्ष अवस्था में तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान् लिया।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोक्ष पद प्राप्ताय अर्घम् नि०।

धर्म को आज तक हमने जाना नहीं ।
राग की रागिनी हम बजाते रहे ॥

☼ जयमाला ☼

मगध देश के गौतमपुर वासी वसु भूति ब्राह्मण पुत्र ।
माँ पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्र भूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र ॥
अग्नि भूति, अरु वायु भूति लघु भ्राता द्वय उत्तम विद्वान ।
शिष्य पाँच सौ साथ आपके चौदह विद्या ज्ञान निधान ॥
शुभ बैसाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवल ज्ञान ।
समवशरण की रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान ॥
बारह सभा बनी अति सुन्दर गन्ध कुटी के बीच प्रधान ।
अन्तरिक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान ॥
छयासठ दिन हो गये दिव्य ध्वनि खिरी नहीं प्रभु की यह जान ।
अवधि ज्ञान से लखा इन्द्र ने "गणधर की है कमी प्रधान" ॥
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया ।
वृद्ध ब्राह्मण वेश बना, गौतम के गृह प्रस्थान किया ॥
पहुँच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनयमयी ।
मेरे गुरु श्लोक सुनाकर, मौन हो गये ज्ञानमयी ॥
अर्थ भाव वे बता न पाये वही जानने आया हूँ ।
आप श्रेष्ठ विद्वान् जगत में शरण आपकी आया हूँ ॥
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराये ।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उर में आये ॥
मन में सोचा तीन काल, छै द्रव्य, जीव, षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ, पंचास्ति काय, गति, समिति, ज्ञान, व्रत, चारित क्या?
बोले गुरु के पास चलो मैं वहीं अर्थ बतलाऊँगा ।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊँगा ॥

अपनी शुद्धात्मा को तो माना नहीं ।
पुण्य के गीत ही गुनगुनाते रहे ॥

अति हर्षित हो इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें ।
शङ्काओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें ॥
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनों भ्राता सङ्ग लिये जभी ।
शिष्य पाँच सौ सङ्ग ले गौतम साभिमान चल दिये तभी ॥
समवशरण की सीमा में जाते ही हुआ गलित अभिमान ।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान ॥
तत्क्षण सम्यक् चारित धारा मुनि बन गणधर पद पाया ।
अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गईं ज्ञान मनःपर्यय छाया ॥
खिरने लगी दिव्य ध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया ।
कर्म नाश कर मोक्ष प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया ॥
ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली ।
द्वादशांग वाणी तुमने अन्तर्मुहूर्त में रच डाली ॥
दोनों भ्राता शिष्य पाँच सौ ने मिथ्यात तभी हर कर ।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनों भ्रात हुए गणधर ॥
राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मङ्गलमय ।
महावीर सन्देश विश्व ने सुना शाश्वत शिव सुखमय ॥
इन्द्रभूति, श्री अग्निभूति, श्री वायुभूति, शुचिदत्त, महान् ।
श्री सुधर्म, मांडव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्प्य, अति ही विद्वान् ॥
अचल और मेदार्य प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान् ।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान् ॥
छह छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय नित मङ्गलमय ।
वस्तु तत्त्व उपदेश प्राप्त कर भव्य जीव होते निजमय ॥
तीस वर्ष रह समवशरण में गूंथा श्री जिनवाणी को ।
देश देश में कर विहार फैलाया श्री जिनवाणी को ॥

दर्शन ज्ञान चरित्र नियम है, जो कि नियम से करने योग्य ।
कारण नियम त्रिकाल शुद्ध ध्रुव, सहज स्वभाव आश्रय योग्य ।।

कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः महावीर निर्वाण हुआ ।
सन्ध्याकाल तुम्हें भी पावापुर में केवल ज्ञान हुआ ।।
ज्ञान लक्ष्मी तुमने पाई और वीर प्रभु ने निर्वाण ।
दीप मालिका पर्व विश्व में तभी हुआ प्रारंभ महान ।।
आयु पूर्ण जब हुई आपको योग नाश निर्वाण लिया ।
धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जयगान किया ।।
आज तुम्हारे चरण कमल के दर्शन पाकर हर्षाया ।
रोम रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया ।।
मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज पर में भेद करूँ ।
भेद ज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हरूँ ।।
पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊँ ।
तुम समान बन शिव पद पाकर सदा सदा को मुस्काऊँ ।।
जय जय गौतम गणधर स्वामी अभिरामी अन्तरयामी ।
पाप पुण्य पर भाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी ।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि० ।

गौतम स्वामी के वचन भाव सहित उर धार ।
मन, वच, तन जो पूजते वे होते भव पार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधराय नमः ।

-: :-

श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन

अष्टापद कैलाश श्री सम्मेदाचल चम्पापुरधाम ।
उर्ज्जयंत गिरनार शिखर पावापुर सबको करूँ प्रणाम ।।

भावना भवनाशिनी ।
मोह भ्रम अज्ञान वश यह आत्मा भव वासिनी ॥

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर मुक्ति वधू के कंत हुए ।
पंच तीर्थों से तीर्थङ्कर परम सिद्ध भगवन्त हुए ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

जन्म मरण से व्यथित हुआ हूँ भव अनादि से दुख पाया ।
परम पारिणामिक स्वभाव का निर्मल जल पाने आया ॥
अष्टापद सम्मेद शिखर, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार ।
चौबीसों तीर्थङ्कर की निर्वाण भूमि वन्दू सुखकार ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आतप से दग्ध हुआ मैं प्रतिपल दुख अनन्त पाया ।
परम पारिणामिक स्वभाव का निज चन्दन पाने आया ॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

भव समुद्र में चहुँ गति की भंवरों में डूबा उतराया ।
परम पारिणामिक स्वभाव से अक्षय पद पाने आया ॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।

काम भोग बन्धन में पड़कर शील स्वभाव नहीं पाया ।
परम पारिणामिक स्वभाव के सहज पुष्प पाने आया ॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

तृष्णा की ज्वाला में जल जल तृप्त नहीं मैं हो पाया ।
परम पारिणामिक स्वभाव के शुचिमय चरु पाने आया ॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

सम्यक् ज्ञान बिना प्रभु अब तक निज स्वरूप ना लख पाया ।
परम पारिणामिक स्वभाव की दीप ज्योति पाने आया ॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

राग पर का छूट जाए तो स्वयं का भान हो।
ध्रुव अचल अनुपम स्वगति पा स्वयं ही भगवान हो॥

अष्ट कर्म की क्रूर प्रकृतियों में ही निज को उलझाया।
परम पारिणामिक स्वभाव की सजल धूप पाने आया॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

मोक्ष प्राप्ति के बिना आज तक सुख का एक न कण पाया।
परम पारिणामिक स्वभाव के शिवमय फल पाने आया॥ अष्टा०

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि०।

शुद्ध त्रिकाली अपना ज्ञायक आत्म स्वभाव न दर्शाया।
परम पारिणामिक स्वभाव से पद अनर्घ पाने आया॥
अष्टापद सम्मेद शिखर, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार।
चौबीसों तीर्थङ्कर की निर्वाण भूमि वन्दू सुखकार॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय पूर्णार्घम् नि०।

❖ जयमाला ❖

श्री चौबीस जिनेश को वन्दन करूँ त्रिकाल।
तीर्थङ्कर निर्वाण भू हरे कर्म जंजाल॥

अष्टापद कैलाश आदि प्रभु ऋषभदेव पद करूँ प्रणाम।
चम्पापुर में वासुपूज्य जिनवर के पद वन्दू अभिराम॥
उर्ज्जयन्त गिरनार शिखर पर नेमिनाथ पद में वन्दन।
पावापुर में वर्धमान प्रभु के चरणों को करूँ नमन॥
बीस तीर्थङ्कर सम्मेदाचल के पर्वत पर वन्दू।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर सिद्ध भूमि को अभिनन्दूँ॥
कूट सिद्धवर अजितनाथ के चरण कमल को नमन करूँ।
धवल कूट पर सम्भव जिन पद पूजूँ निज का मनन करूँ॥

अगर जगत में सुख होता तो तीर्थङ्कर क्यों इसको तजते।
पुण्यो का आनंद छोड़कर निज स्वभाव चेतन क्यो भजते॥

मैं आनन्द कूट पर अभिनन्दन स्वामी को करूँ नमन।
अविचल कूट सुमति जिनवर के पद कमलों में है वन्दन॥
मोहन कूट पदम प्रभु के चरणों में सादर करूँ नमन।
कूट प्रभास सुपार्श्वनाथ प्रभु के मैं पूजूँ भव्य चरन॥
ललित कूट पर चन्दा प्रभु को भाव सहित सादर बन्दू।
सुप्रभ कूट सुविधि जिनवर श्री पुष्पदन्त पद अभिनन्दू॥
विद्युत कूट श्री शीतल जिनवर के चरण कमल पावन।
संकुल कूट चरण श्रेयांसनाथ के पूजूँ मनभावन॥
श्री सुवीर कुल कूट भाव से विमलनाथ के पद बन्दू।
चरण अनन्तनाथ स्वामी के कूट स्वयंभू पर बन्दू॥
कूट सुदत्त पूजता हूँ मैं धर्मनाथ के चरण कमल।
नमू कुन्द प्रभु कूट मनोहर शान्तिनाथ के चरण विमल॥
कुन्थुनाथ स्वामी को बन्दू कूट ज्ञान धर भव्य महान।
नाटक कूट श्री अरहनाथ जिनेश्वर पद का ध्याऊँ ध्यान॥
संबल कूट मल्लि जिनवर के चरणों की महिमा गाऊँ।
निर्जर कूट श्री मुनि सुव्रत चरण पूजकर हर्षाऊँ॥
कूट मित्र धर श्री नेमिनाथ तीर्थङ्कर पद करूँ प्रणाम।
स्वर्ण भद्र श्री पार्श्वनाथ प्रभु को नित बन्दू आठों याम॥
तीर्थङ्कर निर्वाण भूमियाँ तीर्थ क्षेत्र कहलाती हैं।
मुनियों की निर्वाण भूमियाँ सिद्ध क्षेत्र कहलाती हैं॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमियाँ अतिशय क्षेत्र कहलाती हैं।
इन सब तीर्थों की यात्रा से उर पवित्रता आती है॥
अपना शुद्ध स्वभाव लक्ष्य में लेकर जो निज ध्यान धरूँ।
सादि अनन्द समाधि प्राप्त कर परम मोक्ष निर्वाण वरूँ॥

ॐ ह्री श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों के सम्यक् निर्णय का यह स्वर्णिम अवसर आया है।
संसार दुखों का सागर है दिन दो दिन नश्वरकाया है ।।

सिद्ध भूमि जिनराज की महिमा अगम अपार।
निज स्वभाव जो साधते वे होते भव पार ।।

❋ इत्याशीर्वादः ❋

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्राय नमः ।

❋❋❋

श्री जिनवाणी पूजन

जय जय श्री जिनवाणी जय जय, जग कल्याणी जय जय जय ।
तीर्थङ्कर की दिव्य ध्वनि जय, गुरु गणधर गुम्फित जय जय जय ।।
स्याद्वाद पीयूषमयी जय लोकालोक प्रकाशमयी ।
द्वादशांग श्रुत ज्ञानमयी जय वीतराग विज्ञानमयी ।।
श्री जिनवाणी के प्रताप से मैं अनादि मिथ्यात्व हरूँ ।
श्री जिनवाणी मस्तक धारूँ वारम्बार प्रणाम करूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनि अत्र मम् सन्निहितोभव भव वषट् ।

मिथ्यात्व कलुषता के कारण पाया न बिन्दु समता जल का ।
अपने ज्ञायक स्वभाव का भी अब तक प्रतिभास नहीं झलका ।।
मैं श्री जिनवाणी चरणों में मिथ्यातम हरने आया हूँ ।
श्री महावीर की दिव्य ध्वनि हृदयंगम करने आया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रद्धा विपरीत रही मेरी निज पर का ज्ञान नहीं भाया ।
चन्दन सम शीतल सा मय हूँ इतना भी ध्यान नहीं आया ।। मैं०

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रद्धा की वंदनवारें जिनमें विवेक की लड़ियाँ।
संशय का लेश न किन्चित आई अनुभव की घड़ियाँ।।

यह आधि व्याधि पर की उपाधि भव भ्रमण बढ़ाती आई है।
अक्षय अखंड निज की समाधि अब तक न कभी भी पाई है।।मैं०

ॐ ह्रीं श्रीं जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै अक्षतम् नि० स्वाहा।

एकत्व बुद्धि करके पर में कर्तापन का अभिमान किया।
मैं निज का कर्ता भोक्ता हूँ ऐसा न कभी भी भान किया।।मैं०

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै पुष्पम् नि० स्वाहा।

यह माया अनन्तानुबन्धी कषाय प्रति समय जाल उलझाती है।
चारों कषाय की यह तृष्णा उलझन न कभी सुलझाती है।। मैं०

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै नैवेद्यम् नि० स्वाहा।

तत्त्वों के सम्यक् निर्णय बिन श्रद्धा की ज्योति न जल पाई।
अज्ञान अन्धेरा हटा नहीं सन्मार्ग न देता दिखलाई।। मैं०

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

होकर अनन्त गुण का स्वामी, पर का ही दास रहा अब तक।
निज गुण की सुरभि नहीं भाई भव दधि में कष्ट सहा अब तक।।मैं०

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै धूपम् नि० स्वाहा।

मैं तीन लोक का नाथ पुण्य धूला के पीछे पागल हूँ।
चिन्तामणि रत्न छोड़कर मैं रागों में आकुल-व्याकुल हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि०।

अब तक का जितना पुण्य शेष हर्षित हो अर्पण करता हूँ।
अनुपम अनर्घ पद पा जाऊँ मैं यही भावना भरता हूँ।।
मैं श्री जिनवाणी चरणों में मिथ्यातम हरने आया हूँ।
श्री महावीर की दिव्य ध्वनि हृदयंगम करने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व बंध गति गति के करता है ।
सम्यक्त्व बंध गति गति के हरता है ॥

❁ जयमाला ❁

जय जय जय ओंकार दिव्य ध्वनि योगीजन नित करते ध्यान ।
मोह तिमिर मिथ्यात्व विनाशक ज्ञान प्रकाशक सूर्य समान ॥
वस्तु स्वरूप प्रदर्शक निज पर भेद ज्ञान की ज्योति महान ।
सप्तभङ्ग, स्याद्वाद नयाश्रित द्वादशांग श्रुत ज्ञान प्रमाण ॥
द्वादश अंग पूर्व चौदह परिकर्म सूत्र से शोभित है ।
पंच चूलिका चौ अनुयोग प्रकीर्णक चौदह भूषित है ॥
जय जय आचारांग प्रथम जय सूत्रकृतांग द्वितीय नमन ।
स्थानांग तृतीय नमन जय चौथा समवायांग नमन ॥
जय व्याख्या प्रज्ञप्ति पांचवा षष्टम् ज्ञातृधर्मकथांग ।
उपासकाध्ययनांग सातवाँ अष्टम् अंतःकृतदशांग ॥
अनुत्तरोत्पादकदशांग नौं प्रश्न व्याकरणअङ्ग दशम् ।
जय विपाक सूत्रांग ग्यारहवाँ दृष्टिवाद द्वादशम् परम ॥
दृष्टिवाद के चौदह भेद रूप है चौदह पूर्व महान् ।
ग्यारह अङ्ग पूर्व नौ तक का द्रव्य लिंगि कर सकता ज्ञान ॥
पहला है उत्पाद पूर्व दूजा अग्रायणीय जानो ।
तीजा है वीर्यानुवाद चौथा है अस्ति नास्ति जानो ॥
पंचम ज्ञानप्रवाद कि षष्टम् सत्यप्रवाद पूर्व जानो ।
सप्तम् आत्म प्रवाद, आठवाँ कर्मप्रवाद पूर्व मानो ॥
नवमा प्रत्याख्यानप्रवाद सु दशवाँ विद्युनुवाद जान ।
ग्यारहवाँ कल्याणवाद बारहवाँ प्राणानुवाद महान ॥
तेरहवाँ क्रियाविशाल चौदहवाँ लोकबिन्दु है सार ।
अङ्ग प्रविष्ट अरु अङ्ग बाह्य के भेद प्रभेद सदा सुखकार ॥

मिथ्यात्व मोह भ्रम त्यागो रे प्राणी।
सम्यक्त्व सूर्य सम जागो रे प्राणी ।।

दृष्टिवाद का भेद पाँचवां पंच चूलिका नाम यथा।
जलगत थलगत मायागत अरु रूपगता आकाशगता ।।
पाँच भेद परिकर्म उपांग के प्रथम चन्द्रप्रज्ञप्ति महान।
दूजासूर्य प्रज्ञप्ति तीसरा जम्बु द्वीपप्रज्ञप्ति प्रधान ।।
चौथा द्वीप--समूह- प्रज्ञप्ति पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति जान।
सूत्र आदि अनुयोग अनेकों हैं उपांग धन धन श्रुत ज्ञान ।।
तत्त्वों के सम्यक् निर्णय से होता शुद्धातम का ज्ञान।
सरस्वती माँ के आश्रय में होता है शाश्वत कल्याण ।।
इसीलिये जिनवाणी का अध्ययन चिंतवन मैं कर लूँ।
काल लब्धि पाकर अनादि अज्ञान निविड़तम को हर लूँ ।।
नव पदार्थ छह द्रव्य काल त्रय सात तत्व को मैं जानूँ
तीन लोक पंचास्तिकाय छह लेश्याओं को पहचानूँ ।।
षटकायक की दया पालकर समिति गुप्ति व्रत को पा लूँ।
द्रव्य भाव चारित्र धार कर तप संयम को अपना लूँ ।।
निज स्वभाव में लीन रहूँ मैं निज स्वरूप में मुस्काऊँ ।।
क्रम--क्रम से मैं चार घातिया नाश करूँ निज पद पाऊँ ।।
प्राप्त चतुर्दश गुणस्थान कर पूर्ण अयोगी बन जाऊँ।
निज सिद्धत्व प्रगट कर सिद्ध शिला पर सिद्ध स्वपद पाऊँ ।।
यह मानव पर्याय धन्य हो जाये माँ ऐसा बल दो।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित रत्नत्रय पावन निर्मल दो ।।
भव्य भावना जगा हृदय में जीवन मङ्गलमय कर दो।
हे जिनवाणी माता मेरा अन्तर ज्योतिर्मय कर दो ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

वाह्यांतर में मुनि मुद्रा होगी निर्ग्रंथ दिगंबर।
चरणों में झुक जाएगा सादर विनीत भू अंबर ।।

जिनवाणी का सार है भेद-ज्ञान सुखकार।
जो अन्तर में धारते हो जाते भवपार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत श्रुत ज्ञानाय नमः।

—:—

श्री समयसार पूजन

जय जय जय ग्रन्थाधिराज श्री समयसार जिन श्रुत नन्दन।
कुन्द कुन्द आचार्य रचित परमागम को सादर वन्दन ।।
द्वादशाँग जिनवाणी का है इसमें सार परम पावन।
आत्म तत्व की सहजप्राप्ति का है अपूर्व अनुपम साधन ।।
सीमंधर प्रभु की दिव्य ध्वनि इसमें गूञ्ज रही प्रतिक्षण।
इसको हृदयंगम करते ही हो जाता सम्यक् दर्शन ।।
समयसार का सार प्राप्त कर सफल करूँ मानव जीवन।
सब सिद्धों को वन्दन करके करता विनय सहित पूजन ।।

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

निज स्वरूप को भूल आज तक चारों गति में किया भ्रमण।
जन्म मरण क्षय करने को अब निज स्वरूप में करूँ रमण ।।
समयसार का करूँ अध्ययन समयसार का करूँ मनन।
कारण समयसार को ध्याऊँ समयसार को करूँ नमन ।।

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

भव ज्वाला में प्रतिपल जल जल करता रहा करुण क्रन्दन।
निज स्वभाव ध्रुव का आश्रय ले काटूँगा जग के बन्धन ।। समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि०।

नर से अर्हन्त सिद्ध हो त्रैलोक्य पूज्य अविनाशी ।
संसार विजेता होगा जिसने निज ज्योति प्रकाशी ।।

पुण्य पाप के मोह जाल में बढ़ी सदा भव की उलझन ।
संवरभाव जगा उर में तो, भव समुद्र का हुआ पतन ।। समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

काम भोग बन्धन की कथनी सुनी अनन्तों बार सघन ।
चिर परिचित जिन श्रुत अनुभूति न जागी मेरे अन्तर्मन ।।

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

क्षुधा रोग की औषधि पाने का न किया है कभी यतन ।
आत्मभान करते ही महका वीतरागता का उपवन ।। समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

भ्रम अज्ञान तिमिर के कारण पर में माना अपनापन ।
सत्य बोध होते ही पाई ज्ञान सूर्य की दिव्य किरण ।। समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्नि०।

आर्त रौद्र ध्यान में पड़कर पर भावों में रहा मगन ।
शुचिमय ध्यान धूप देखी तो धर्म ध्यान की लगी लगन ।।समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपम् नि० ।

भव तरु के विषमय फल खाकर करता आया भाव मरण।
सिद्ध स्वपद की चाह जगी तो यह पर्याय हुई धन धन।। समय०

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि० ।

आश्रव बंधभाव के कारण मिटा राग का एक न कण ।
द्रव्य दृष्टि बनते ही पाया निज अनर्घ पद का दर्शन ।।
समयसार का करूँ अध्ययन समयसार का करूँ मनन ।
कारण समयसार को ध्याऊँ समयसार को करूँ नमन ।।

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० ।

जिया तुम निज का ध्यान करो ।
आर्त्त रौद्र दुर्ध्यान छोड़कर धर्मध्यान करो ॥

☼ जयमाला ☼

समयसार के ग्रन्थ की महिमा अगम अपार ।
निश्चय नय भूतार्थ है अभूतार्थ व्यवहार ॥
दुर्नय तिमिर निवारण कारण समयसार को करूं प्रणाम ।
हूं अबद्धस्पृष्ट नियत अविशेष अनन्य मुक्ति का धाम ॥
सप्त तत्व अरु नव पदार्थ का इसमें सुन्दर वर्णन है ।
जो भूतार्थ आश्रय लेता पाता सम्यक् दर्शन है ॥
जीव अजीव अधिकार प्रथम में भेदज्ञान की ज्योति प्रधान ।
[1]"जो पस्सदि अप्पांण णियदं," हो जाता सर्वज्ञ महान ॥
कर्ता कर्म अधिकार समझकर कर्ता बुद्धि विनाश करूं ।
[2]"सम्मद्दंसण णाणं एसो" निज शुद्धात्म प्रकाश करूं ॥
पुण्य पाप अधिकार जान दोनों में भेद नहीं मानूं ।
ये विभाव परणति से हैं उत्पन्न बंधमय ही जानूं ॥
[3]"रत्तो बंधदि कम्मं," जानूं, उर विराग ले कर्म हरूं ।
राग शुभाशुभ का निषेध कर निज स्वरूप को प्राप्त करूं ॥
मैं आश्रव अधिकार जानकर राग द्वेष अरु मोह हरूं ।
भिन्न द्रव्य आश्रव से होकर भावाश्रव को नष्ट करूं ॥
मैं संवर अधिकार समझकर संवरमय ही भाव करूं ।
[4]"अप्पाणं झायंतो" दर्शन ज्ञानमयी निज भाव वरूं ॥

---

(१) स. सा. १५ – जो अपनी आत्मा को. नियत देखता है...

(२) स. सा. १४४–....सम्यक दर्शन ज्ञान ऐसी संज्ञा मिलती है...

(३) स. सा. १५०–....रागी जीव कर्म बांधता है....

(४) स. सा. १८६–... आत्मा को ध्याता हुआ...

वस्त्र पुराने सदा बदलते नए वस्त्र द्वारा ।
उसी भाँति यह देह बदलती जन्म मृत्यु द्वारा ॥

मैं अधिकार निर्जरा जानूँ पूर्ण निर्जरावंत बनूँ ।
पूर्व उदय में सम रहकर मैं चेतन ज्ञायक मात्र बनूँ ॥
[५]"अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो" सारे कर्म झराऊँगा ।
मैं रतिवंत ज्ञान में होकर शाश्वत शिव सुख पाऊँगा ॥
बंध अधिकार बंध की ही तो सकल प्रक्रिया बतलाता ।
बिन समकित जप तप व्रत संयमबंध मार्ग है कहलाता ॥
राग द्वेष भावों से विरहित जीव बंध से रहता दूर ।
[६]"णिच्छयणआ सिदापुणमुणिणो" अष्टकर्म करता चकचूर ॥
जान मोक्ष अधिकार शीघ्र ही नष्ट करूँ विषकुम्भ विभाव ।
आत्म स्वरूप प्रकाशित करके प्रगटाऊँ परिपूर्ण स्वभाव ॥
शुद्ध आत्मा ग्रहण करूँ मैं सर्व बंध का कर छेदन ।
निशङ्कित होकर पाऊँगा मुक्ति शिला का सिंहासन ॥
सर्व विशुद्ध ज्ञान का है अधिकार अपूर्व अमूल्य महान ।
पर कर्तृत्व नष्ट हो जाता होता शिव पथ पर अभियान ॥
कर्म फलों को मूढ़ भोगता ज्ञानी उनका ज्ञाता है ।
इसीलिये अज्ञानी दुख पाता ज्ञानी सुख पाता है ॥
भाव भासना नौ अधिकारों से कर निज में वास करूँ ।
[७]"मिच्छत्तं अविरमणं कषाय योग" की सत्ता नाश करूँ ॥

कुन्द कुन्द ने समयसार मन्दिर का किया दिव्य निर्माण ।
वीतराग सर्वज्ञ देव की दिव्यध्वनि का इसमें ज्ञान ॥

---

(५) स. सा. २१०-११-१२-१३-...अनिच्छुक को अपरिगृही कहा हैं....

(६) स. सा. २७२-...निश्चय नयाश्रित मुनि मोक्ष प्राप्त करते हैं...

(७) स. सा. १६४-...मिथ्यात्व अविरति कषाय योग ये आश्रव है. .

जिया तुम निज को पहचानो ।
निज स्वरूप को पर स्वरूप से सदा भिन्न जानो ।।

सर्व चार सौ पन्द्रह गाथाएँ प्राकृत भाषा में जान ।
सारभूत निज समयसार का ही अनुभव लूँ भव्य महान ।।
अमृतचन्द्राचार्य देव ने आत्म ख्याति टीका लिखकर ।
कलश चढ़ाये दो सौ अठहत्तर स्वर्णिम अनुपम सुन्दर ।।
श्री जयसेनाचार्य स्वामी की तात्पर्य वृत्ति टीका ।
ऋषि मुनि विद्वानों ने लिक्खा वर्णन समयसार जी का ।।
ज्ञानी ध्यानी मुनियों ने भी तोरण द्वार सजाये हैं ।
समयसार के मधुर गीत गा वन्दनवार चढ़ाये हैं ।।
भिन्न भिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद हुए सुन्दर ।
काव्य अनेकों लिखे गये हैं समयसार जी पर मनहर ।।
श्री कानजी स्वामी ने भी करके समयसार प्रवचन ।
समयसार मन्दिर पर सविनय हर्षित किया ध्वजारोहण ।।
समयसार पढ़ सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित प्रगटाऊँगा ।
८"तिव्वं मंद सहावं" क्षयकर, वीतराग पद पाऊँगा ।।
पंच परावर्तन अभाव कर सिद्ध लोक में जाऊँगा ।
काल लब्धि आई है मेरी परम मोक्ष पद पाऊँगा ।।
भक्ति भाव से समयसार की मैंने पूजन की है देव ।
कारण समयसार की महिमा उर में जाग उठी स्वयमेव ।।
नमः समयसाराय स्वानुभव ज्ञान चेतनामयी परम ।
एक शुद्ध टंकोत्कीर्ण, चिन्मात्र पूर्ण चिद्रूप स्वयम् ।।
नय पक्षों से रहित आत्मा ही है समयसार भगवान ।
समयसार ही सम्यक् दर्शन सममसार ही सम्यक् ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय पूर्णार्घम् नि० ।

(८) स. सा. २८८—...बन्धन के तीव्र मन्द स्वभाव को....

प्राण मेरे तरसते हैं कब मुझे समकित मिलेगा।
कब स्वयं से प्रीत होगी कब मुझे निज पद मिलेगा॥

समयसार के भाव को जो लेते उर धार।
निज अनुभव को प्राप्त कर हो जाते भव पार॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री परमागम समयसाराय नमः।

— ☼ —

श्री कुन्द कुन्द आचार्य पूजन

कुन्द कुन्द आचार्य देव के चरण कमल मैं करूँ नमन।
कुन्द कुन्द आचार्य देव की वाणी के उर धरूँ सुमन॥
कुन्द कुन्द आचार्य देव की भाव सहित करके पूजन।
निज स्वभाव के साधन द्वारा मोक्ष प्राप्ति का करूँ यतन॥
१ "परिणामो बंधो परिणामो मोक्खो" करूँ आत्म दर्शन।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हेतु मैं निज स्वरूप में करूँ रमन॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देव चरणाग्रेषु पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

समयसार वैभव के जल से उर में उज्ज्वलता लाऊँ।
२ "दंसण मूलो धम्मो" सम्यक् दर्शन निज में प्रगटाऊँ॥
कुन्द कुन्द आचार्य देव के चरण पूज निज को ध्याऊँ।
सब सिद्धों को वन्दन कर ध्रुव अचल सु अनुपम गति पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

समयसार वैभव चन्दन से निज सुगन्ध को विकसाऊँ।
३ "वत्थु सहावो धम्मो" सम्यक् ज्ञान सूर्य को प्रगटाऊँ॥ कुन्द०

ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्नि०।

---

(१) . . . परिणामों से बन्ध और परिणामों से मोक्ष होता है।
(२) अष्ट. पा. २– धर्म का मूल सम्यक् दर्शन है।
(३) . . वस्तु स्वभाव ही धर्म है।

मैं ज्ञाता दृष्टा हूं चेतन चिद्रूपी हूं ।
गुण ज्ञान अनंत सहित मैं सिद्ध स्वरूपी हूं ॥

समयसार वैभव के उत्तम अक्षत गुण निज में लाऊँ ।
४ "चारित्तं खलु धम्मो" सम्यक् चारित रथ पर चढ़ जाऊँ ॥कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।
समयसार वैभव के पावन पुष्पों में मैं रम जाऊँ ।
५ "दाणं पूजा मुक्खयसावयधम्मो" शील स्वगुण पाऊँ ॥ कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।
समयसार वैभव के मनभावन नैवेद्य हृदय लाऊँ ।
६ जो जाणदि अरिहन्तं" निज ज्ञायक स्वभाव आश्रय पाऊँ ॥कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय क्षुधा रोग विनाशनायनैवेद्यम्नि०।
समयसार वैभव के ज्योतिर्मय दीपक उर में लाऊँ ।
७ "दंसण भट्टा भट्टा" मिथ्या मोह तिमिर हर सुख पाऊँ ॥कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।
समयसार वैभव की शुचिमय ध्यान धूप उर में ध्याऊँ ।
८ "ववहारोऽभूयत्थो" निश्चय आश्रित हो शिव पद पाऊँ ॥कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।
समयसार वैभव के भव्य अपूर्व मनोरम फल पाऊँ ।
९ "णियमं मोक्ख उवायो" द्वारा महा मोक्ष पद प्रगटाऊँ ॥ कुन्द०
ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० ।

---

(४) प्र. सा. ७ – चरित्र ही धर्म है ।
(५) र. सा. १०–श्रावक धर्म में दान पूजा मुख्य है ।
(६) प्र. सा. ८०–जो अरहन्त को - - जानता है ।
(७) अष्ट. पा. ३– जो पुरुष दर्शन से भ्रष्ट हैं, वे भ्रष्ट हैं ।
(८) स. सा. ११ व्यवहार नय अभूतार्थ है ।
(९) नि. सा. ४ – (रत्नत्रय रूप) नियम मोक्ष का उपाय है ।

पुण्याश्रव के द्वारा स्वर्गों के सुख भोगे।
माला जब मुरझाई तो कितने दुख भोगे॥

समयसार वैभव का निर्मल भाव अर्घ उर में लाऊँ।
१०"अहमिक्को खलु सुद्धो" चिन्तन कर अनर्घ पद को पाऊँ॥
कुन्द कुन्द आचार्य देव के चरण पूज निज को ध्याऊँ।
सब सिद्धों को वन्दन कर ध्रुव अचल सु अनुपम गति गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि०।

(जयमाला)

मङ्गलमय भगवान् वीर प्रभु मङ्गलमय गौतम गणधर।
मङ्गलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि, मङ्गल जैन धर्म सुखकर॥
कन्नड़ प्रान्त बड़ा दक्षिण में कोण्डकुण्ड था ग्राम अपूर्व।
कुन्द कुन्द ने जन्म लिया था दो सहस्र वर्षों के पूर्व॥
ग्यारह वर्ष आयु थी जब तुमने स्वामी वैराग्य लिया।
श्रेष्ठ महाव्रत धारण करके मुनि पद का सौभाग्य लिया॥
एक दिवस जङ्गल में बैठे घोर तपस्या में थे लीन।
कंचन सी काया तपती थी आत्म ध्यान में थे तल्लीन॥
उसी समय इक पूर्व जन्म का मित्र देव व्यंतर आया।
देख तपस्या रत भू पर आ श्रद्धा से मस्तक नाया॥
ध्यान पूर्ण होने पर मुनि ने जब अपनी आँखें खोली।
देखा देव पास बैठा है बोले तब हित मित बोली॥
धर्म वृद्धि हो, धर्म वृद्धि हो, धर्म वृद्धि हो, तुम हो कौन।
हर्षित पुलकित गद्गद् होकर तोड़ा तब व्यन्तर ने मौन॥
नमस्कार कर भक्ति भाव से पूर्व जन्म का दे परिचय।
पिछले भव में परम मित्र थे क्षमा करें मेरी अविनय॥

---

(१०) स. सा. ३८, ७३—मैं निश्चय से एक हूं शुद्ध हूं।

अंतरंग बहिरंग आश्रव से विरक्ति ही संयम है।
सम्यक्दर्शन ज्ञान पूर्वक जो संवर है संयम है ।।

सीमंधर स्वामी के दर्शन को विदेह भू जाता हूं।
यही प्रार्थना चलें आप भी नम्र विनय मन लाता हूं ।।
चिर इच्छा साकार हुई मुनिवर ने स्वर्ण समय जाना।
बोले श्री जिनवाणी सुनकर मुझे लौट भारत आना ।।
मुनि को साथ लिया उसने आकाश मार्ग से गमन किया।
तीर्थङ्कर सर्वज्ञ देव को जा विदेह में नमन किया ।।
सीमंधर के समवशरण को देखा मन में हर्षाये।
जन्म जन्म के पातक क्षय कर अनुपम ज्ञान रत्न पाये ।।
सीमंधर प्रभु के चरणों में झुककर किया विनय वन्दन।
प्रभु की शाँत मधुर छवि लखकर धन्य हुए भारत नन्दन ।।
प्रभु से प्रश्न हुआ लघु मुनिवर कौन कहाँ से आये हैं।
खिरी दिव्य ध्वनि कुन्द कुन्द मुनि भरत क्षेत्र से आये हैं ।।
सीमंधर ने दिव्य ध्वनि में कुन्द कुन्द का नाम लिया।
भव भव के अघ नष्ट हो गये मुनि ने विनय प्रणाम किया ।।
विनयी होकर कुन्द कुन्द ने जिन वाणी का पान किया।
अष्ट दिवस रह समवशरण में द्वादशांग का ज्ञान लिया ।।
अक्षय ज्ञान उदधि मन में भर और हृदय में प्रभु का नाम।
सीमंधर तीर्थङ्कर प्रभु को करके बारम्बार प्रणाम ।।
फिर विदेह से चले और नभ पथ से भारत में आये।
तीर्थङ्कर वाणी का सागर मन मन्दिर में लहराये ।।
जो सुनकर आये जिनवाणी फिर उसको लिपि रूप दिया।
जगत जीव कल्याण करें निज ऐसा शास्त्र स्वरूप दिया ।।
राग मात्र को हेय बताया उपादेय निज शुद्धातम।
भाव शुभाशुभ का अभाव कर होता चेतन परमातम ।।

संयम के बिन यह भव प्राणी हो सकता है मुक्त नहीं।
संयम बिन कैवल्य लक्ष्मी से हो सकता युक्त नहीं॥

समयसार में निश्चय नय का पावन मय सन्देश भरा।
श्री पंचास्तिकाय को रचकर द्रव्य तत्व उपदेश भरा॥
प्रवचन सार बनाया तुमने भेदज्ञान को बतलाया।
मूलाचार लिखा मुनि जन हित साधु मार्ग को दर्शाया॥
नियमसार की रचना अनुपम रयणसार गूँथा चितलाय।
लघु सामायिक पाठ बनाया लिखा सिद्ध प्राभृत सुखदाय॥
श्री अष्ट पाहुड़ षट्प्राभृत द्वादशानुप्रेक्षा के बोल।
चौरासी पाहुड लिक्खे जो ज्ञात नहीं हमको अनमोल॥
ताड़ पत्र पर लिखे ग्रन्थ सब सफल हुई चिर अभिलाषा।
जन जन की वाणी कल्याणी धन्य हुई प्राकृत भाषा॥
जीवों के प्रति करुणा जागी मोक्ष मार्ग उपदेश दिया।
और तपस्या भूमि बनाकर गिरि कुन्दाद्रि पवित्र किया॥
अमृतचन्द्राचार्य देव की टीका आत्म ख्याति विख्यात।
पद्मप्रभ मलधारि देव की टीका नियमसार प्रख्यात॥
श्री जयसेनाचार्य रचित तात्पर्य वृत्ति टीका पावन।
श्री कानजी स्वामी के भी अनुपम समयसार प्रवचन॥
पद्मनन्दि गुरु वक्रग्रीव मुनि ऐलाचार्य आपके नाम।
गृद्धपृच्छ आचार्य यतीश्वर कुन्द कुन्द हे गुण के धाम॥
हे आचार्य आपके गुण वर्णन करनेको मुझमेंशक्ति नहीं।
पथ पर चलें आपके ऐसी भी तो अभी विरक्ति नहीं॥
भक्ति विनय के सुमन तुम्हारे चरणों में अर्पित हैं देव।
भव्य भावना यही एक दिन मैं सर्वज्ञ बनूँ स्वयमेव॥

चेतन आज संजोलो उर में पावन दीपावलियाँ ।
भेदज्ञान विज्ञान पूर्वक नाशो कर्मावलियाँ ।।

११"जीवादि सद्दहणं सम्मत्तं" पाऊँ प्रभु करूँ प्रणाम ।
इन चरणों की पूजन का फल पाऊँ सिद्ध पुरी का धाम ।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्द आचार्य देवाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् ।

कुन्द कुन्द मुनि के वचन भाव सहित उरधार ।
निज आतम जो ध्यावते पाते ज्ञान अपार ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री कुन्द कुन्दाचार्य देवाय नमः ।

श्री क्षमावणी पूजन

क्षमावणी का पर्व सुपावन देता जीवों को सन्देश ।
उत्तम क्षमा धर्म को धारो जो अतिभव्य जीव का वेश ।।
मोह नींद से जागो चेतन अब त्यागो मिथ्याभिनिवेश ।
द्रव्य दृष्टि बन निज स्वभाव से चलो शीघ्र सिद्धों के देश ।।
क्षमा मार्दव आर्जव संयम शौच सत्य को अपनाओ ।
त्याग, तपस्या, आकिंचन, व्रत ब्रह्मचर्य मय हो जाओ ।।
एक धर्म का सार यही है समता मय ही बन जाओ ।
सब जीवों पर क्षमा भाव रख स्वयं क्षमा मय हो जाओ ।।
क्षमा धर्म की महिमा अनुपम क्षमा धर्म ही जग में सार ।
तीन लोक में गूञ्ज रही है क्षमावणी की जय जयकार ।।
ज्ञाता दृष्टा हो समग्र को देखो उत्तम निर्मल भेष ।
रागों से विरक्त हो जाओ रहे न दुख का किंचित लेश ।।

ॐ ह्रीं श्रीं उत्तम क्षमा धर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्म अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

---

(११) स. सा. १५५—जीवादि पदार्थों का श्रद्धान सम्यक दर्शन है ।

समकित रवि की ज्योति प्राप्तकर नाशो पापावलियां ।
मोह कर्म सर्वथा नाशकर नाशो पुण्यावलियां ॥

जीवादिक नव तत्त्वों का श्रद्धान यही सम्यक्त्व प्रथम ।
इनका ज्ञान ज्ञान है, रागादिक का त्याग चरित्र परम ॥
१ "संते पुव्वणिवद्धं जाणदि" वह अबंध का ज्ञाता है ।
सम्यक् दृष्टि सुजीव आश्रव बंध रहित हो जाता है ॥
उत्तम क्षमा धर्म उर धारूं जन्म मरण क्षय कर मानूं ।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाऊं निज स्वरूप को पहचानूं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्त भयों से रहित निशङ्कित निज स्वभाव में सम्यक् दृष्टि ।
मिथ्यात्वादिक भावों में जो रहता वह है मिथ्यादृष्टि ॥
तीन मूढ़ता छह अनायतन तीन शल्य का नाम नहीं ।
आठ दोष समकित के अरु आठों मद का कुछ काम नहीं ॥ उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।

अशुभ कर्म जाना कुशील शुभ को सुशील मानता नहीं ।
जो संसार बंध का कारण वह सुशील जानता नहीं ॥
कर्म फलों के प्रति जिसकी आकांक्षा उर में रही नहीं ।
वह निःकांक्षित सम्यक् दृष्टि भव की वाँछा रही नहीं ॥उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।

राग शुभाशुभ दोनों ही संसार भ्रमण का कारण है ।
शुद्ध भाव ही एकमात्र परमार्थ भवोदधि तारण है ॥
वस्तु स्वभाव धर्म के प्रति जो लेश जुगुप्सा करे नहीं ।
निर्विचिकित्सक जीव वही है निश्चय सम्यक् दृष्टि वही ॥ उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

---

(१) स. सा. १६६– (सम्यक दृष्टि) सत्ता में रहे हुए पूर्व बद्ध कर्मों को जानता है ।

पर परिणति दुर्मति से आज विमूढ़ हुआ हूं ।
निज परिणति के रथ पर मैं आरूढ़ हुआ हूं ।।

शुद्ध आत्मा जो ध्याता वह पूर्ण शुद्धता पाता है ।
जो अशुद्ध को ध्याता है वह ही अशुद्धता पाता है ।।
पर भावों में जो न मूढ़ है दृष्टि यथार्थ सदा जिसकी ।
वह अमूढ़ दृष्टि का धारी सम्यक् दृष्टि सदा उसकी ।।उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

राग द्वेष मोहादि आश्रव ज्ञानी को होते न कभी ।
ज्ञाता दृष्टा को ही होते उत्तम संवर भाव सभी ।।
शुद्धातम की भक्ति सहित जो पर भावों से नहीं जुड़ा ।
उपगूहन का अधिकारी है सम्यक् दृष्टि महान् बड़ा ।। उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय मोहान्धकार विनाशनायदीपम् नि०।

कर्म बन्ध के चारों कारण मिथ्या अवरति योग कषाय ।
चेतयिता इनका छेदन कर करता है निर्वाण उपाय ।।
जो उन्मार्ग छोड़कर निज को निज में सुस्थापित करता ।
स्थिति करण युक्त होता वह सम्यक् दृष्टि स्वहित वरता ।। उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय अष्टकर्म दहनाय धूपम नि०स्वाहा ।

पुण्य पाप मय सभी शुभाशुभ योगों से जो रहता दूर ।
सर्व संग से रहित हुआ वह दर्शन ज्ञानमयी सुख पूर ।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित धारी के प्रति गौ वत्सल भाव ।
वात्सल्य का धारी सम्यक् दृष्टि मिटाता पूर्ण विभाव ।।उत्तम०

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि०स्वाहा।

ज्ञान विहीन कभी भी पल भर ज्ञान स्वरूप नहीं होता ।
बिना ज्ञान के ग्रहण किये कर्मों से मुक्त नहीं होता ।।
विद्या रूपी रथ पर चढ़ जो ज्ञान रूप रथ चलवाता ।
वह जिन शासन की प्रभावना करता शिव पद दर्शाता ।।उत्तम०

देह तो अपनी नहीं है देह से फिर मोह कैसा ।
जड़ अचेतन रूप पुद्गल द्रव्य से व्यामोह कैसा ।।

उत्तम क्षमा धर्म उर धारूं पद अनर्घ पाकर मानूं ।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाऊं निज स्वरूप को पहचानूं ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि०स्वाहा ।

☼ जयमाला ☼

उत्तम क्षमा स्वधर्म को वन्दन करूं त्रिकाल ।
नाश दोष पच्चीस सब काटूं भव जञ्जाल ।।

सोलह कारण पुष्पांजलि दश लक्षण रत्नत्रय व्रतपूर्ण ।
इनके सम्यक् पालन से हो जाते हैं वसुकर्म विचूर्ण ।।
भाद्र मास में सोलह कारण तीस दिवस तक होते हैं ।
शुक्ल पक्ष के दश लक्षण पंचम से दस दिन होते हैं ।।
पुष्पांजलि दिन पांच पंचमी से नवमी तक होते हैं ।
पावन रत्नत्रय व्रत अन्तिम तीन दिवस के होते हैं ।।
आश्विन कृष्णा एकम् उत्सव क्षमावणी का होता है ।
उत्तम क्षमा धार उर श्रावक मोक्ष मार्ग को जोता है ।।
भाद्र मास अरु माघ मास अरु चैत्र मास में आते हैं ।
तीन बार आ पर्व राज जिनवर सन्देश सुनाते हैं ।।
१–"जीवे कम्मं बद्धं पुट्ठं" यह तो है व्यवहार कथन ।
है अबद्ध अस्पृष्ट कर्म से निश्चय नय का यही कथन ।।
जीव देह को एक बताना यह है नय व्यवहार अरे ।
जीव देह तो पृथक् पृथक हैं निश्चय नय कह रहा अरे ।।
निश्चय नय का विषय छोड़ व्यवहार मांहि करते वर्तन ।
उनको मोक्ष नहीं हो सकता और न ही सम्यक्दर्शन ।।

---

(१) स. सा. १४१–जीव कर्म से बंधा है तथा स्पर्शित है ।

चक्रवर्ती इन्द्र नारायण नहीं जीवित रहे हैं।
समय जिसका आगया वे एक ही पल में ढहे हैं।।

२–"दोण्हविणणाय भणियं जाणई" जो पक्षातिक्रान्त होता।
चित्स्वरूप का अनुभव करता सकल कर्म मल को खोता।।
ज्ञानी ज्ञानस्वरूप छोड़कर जब अज्ञान रूप होता।
तब अज्ञानी कहलाता है पुद्गल बन्ध रूप होता।।
३–"जह विस भुव भुज्जंतोवेज्जो" मरण नहीं पा सकता है।
ज्ञानी पुद्गल कर्म उदय को भोगे बन्ध न करता है।।
मुनि अथवा गृहस्थ कोई भी मोक्ष मार्ग है कभी नही।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित ही मोक्ष मार्ग है सही सही।।
मुनि अथवा गृहस्थ के लिंगों में जो ममता करता है।
मोक्ष मार्ग तो बहुत दूर भव अटवी में ही भ्रमता है।।
प्रतिक्रमण प्रतिसरण आदि आठों प्रकार के हैं विष कुम्भ।
इनसे जो विपरीत वही है मोक्ष मार्ग के अमृत कुम्भ।।
पुण्य भाव को भी तो इच्छा ज्ञानी कभी नहीं करता।
पर भावों से अरति सदा है निज का ही कर्ता धर्ता।।
कोई कर्म किसी को भी सुख दुख देने में है असमर्थ।
जीव स्वयं ही अपने सुख दुख का निर्माता स्वयं समर्थ।।
क्रोध, मान, माया, लोभादिक नहींजीव के किंचित् मात्र।
रूप, गंध, रस, स्पर्श शब्द भी नहीं जीव के किंचित्मात्र।।
देह सँहनन संस्थान भी नहीं जीव के किंचित्मात्र।
राग द्वेष मोहादि भाव भी नहीं जीव के किंचित्मात्र।।
सर्व भाव से भिन्न त्रिकाली पूर्ण ज्ञानमय ज्ञायक मात्र।
नित्य, ध्रौव्य, चिद्रूप, निरंजन, दर्शन, ज्ञानमयी चिन्मात्र।।

---

(२) स. सा. १४३–दोनों ही नयों के कथन को मात्र जानता है।
(३) स. सा. १९५–जिस प्रकार वैद्य पुरुष विष को भोगता, खाता हुआ भी...

शुद्ध आत्मा में प्रवृत्ति का एक मार्ग है निज चिन्तन ।
दुश्चिन्ताओ से निवृत्ति का एक मार्ग है निजचिन्तन ।।

वाक् जाल में जो उलझे वह कभी सुलझ ना पायेंगे ।
निज अनुभव रस पान किये बिन नहीं मोक्ष में जायेंगे ।।
अनुभव ही तो शिवसमुद्र है अनुभव शाश्वत सुखका स्रोत ।
अनुभव परम सत्यशिव सुन्दरअनुभव शिव से ओतप्रोत।।
निज अनुभव ही निर्विकल्प है अनुभव है चैतन्यमयी ।
अनुभव परम तरण तारण है अनुभव है संसार जयी ।।
निज स्वभाव के सम्मुख होजा पर से दृष्टि हटा भगवान।
पूर्ण सिद्ध पर्याय प्रगट कर आज अभी पा ले निर्वाण ।।
ज्ञान चेतना सिन्धु स्वयं तू स्वयं अनंत गुणों का भूप ।
त्रिभुवन पति सर्वज्ञ ज्योति मय चिन्तामणि चेतन चिद्रूप।।
यह उपदेश श्रवण कर हे प्रभु मैत्री भाव हृदय धारूं ।
जो विपरीत दृष्टि वाले हैं उन पर मैं समता धारूं ।।
धीरे धीरे पाप, पुण्य शुभ आश्रव संहारूं ।
भव तन भोगों से विरक्त हो निज स्वभाव को स्वीकारूं।।
दश धर्मो को पढ़ सुनकर अन्तर में आये परिवर्तन ।
व्रत उपवास तपादिक द्वारा करूं सदा ही निज चिन्तन ।।
राग द्वेष अभिमान पाप हर काम क्रोध को चूर करूं ।
जो संकल्प विकल्प उठें प्रभु उनको क्षण क्षण दूर करूं ।।
अणु भर भी यदि राग रहेगा नहीं मोक्ष पद पाऊंगा ।
तीन लोक में काल अनन्ता राग लिये भरमाऊंगा ।।
राग शुभाशुभ के विनाश से वीतराग बन जाऊंगा ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा स्वयं सिद्ध पद पाऊंगा ।।
पर्यूषण में दूषण त्यागूं बाह्य क्रिया में रमे न मन ।
शिव पथ का अनुसरण करूं मैं बन के नाथ सिद्ध नन्दन ।।

सहज शुद्ध निष्काम भाव से भव समुद्र को तरो तरो ।
आत्मोज्ज्वलता में बाधक, शुभ अशुभ राग को हरो हरो ॥

शिव पथ का अनुसरण करूं प्रभु मैं व्यवहार धर्म पालूं ।
निज शुद्धात्म पर करुणा कर निश्चय धर्म सहज पालूं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मोक्ष मार्ग दर्शा रहा क्षमा वणी का पर्व ।
क्षमाभाव धारण करो राग द्वेष हर सर्व ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः ।

-: :-

श्री दीपमालिका पूजन

महावीर निर्वाण दिवस पर महावीर पूजन कर लूं ।
वर्धमान अतिवीर वीर सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूं ॥
पावापुर से मोक्ष गये प्रभु जिनवर पद अर्चन कर लूं ।
जगमग जगमग दिव्य ज्योति से धन्य मनुज जीवन करलूं ॥
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को शुद्ध भाव मन में भर लूं ।
दीपमालिका पर्व मनाऊं भव भव के बन्धन हर लूं ॥
ज्ञान सूर्य का चिर प्रकाश ले रत्नत्रय पथ पर बढ़ लूं ।
पर भावों का राग तोड़कर निज स्वभाव में मैं अड़ लूं ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल प्राप्त श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल प्राप्त श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल प्राप्त श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

चिदानन्द चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव मय जल भर लूं ।
जन्म मरण का चक्र मिटाऊं भव भव की पीड़ा हर लूं ॥

क्षमा सत्य संतोष सरलता मृदुता लघुता नम्रता ।
ब्रम्हचर्य तप गुप्ति त्याग समता उज्जवलता उच्चता ।।

दीपावलि के पुण्य दिवस पर वर्धमान पूजन कर लूँ ।
महावीर अतिवीर वीर सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ ।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल प्राप्ताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अमल अखण्ड अतुल अविनाशी निज चन्दन उर में धर लूँ ।
चारों गति का ताप मिटाऊँ निज पंचम गति आदर लूँ ।।दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल प्राप्ताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अजर अमर अक्षय अविकल अनुपम अक्षत पद उर धरलूं ।
भव सागर तर मुक्ति वधू से मैं पावन परिणय करलूं ।। दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ।

रूप गंध रस स्पर्श रहित निज शुद्ध पुष्प मन में भर लूं ।
कामवाण की व्यथा नाश कर मैं निष्काम रूप धर लूं ।। दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म शक्ति परिपूर्ण शुद्ध नैवेद्य भाव उर में धर लूं ।
चिर अतृप्ति का रोग नाश कर सहज तृप्त निज पद वरलूं।।दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्ण ज्ञान कैवल्य प्राप्ति हित ज्ञान दीप ज्योतित कर लूँ ।
मिथ्या भ्रम तम मोह नाश कर निज सम्यकत्व प्राप्त कर लूँ।।दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

पाप तिमिर का पुन्ज नाश कर ज्ञान ज्योति जयवंत हुई।
नित्य शुद्ध अविरुद्ध शक्ति के द्वारा महिमावंत हुई ॥

पुण्य भाव की धूप जलाकर घाति अघाति कर्म हर लूँ।
क्रोध मान माया लोभादिक मोह द्रोह सब क्षय कर लूँ ॥दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

अमिट अनन्त अचल अविनश्वर श्रेष्ठ मोक्ष पद उर धर लूँ।
अष्ट स्वगुण से युक्त सिद्ध गति पा सिद्धत्व प्राप्त करलूँ ॥दीपा०

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त प्रगटाऊँ अपने निज अनर्घ पद को वर लूँ।
शुद्ध स्वभावी ज्ञान प्रभावी निज सौन्दर्य प्रगट कर लूँ ॥
दीपावलि के पुण्य दिवस पर वर्धमान पूजन कर लूँ।
महावीर अतिवीर वीर सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष फल मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंच कल्याणक

शुभ आषाढ़ शुक्ल षष्ठी को पुष्पोत्तर तज प्रभु आये।
माता त्रिशला धन्य हो गईं सोलह सपने दरशाये ॥
पन्द्रह मास रत्न बरसे कुण्डलपुर में आनन्द हुआ।
वर्धमान के गर्भोत्सव पर दूर शोक दुख द्वन्द हुआ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला षष्ठयाम् गर्भ मङ्गल प्राप्त श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी को सारी जगती धन्य हुई।
नृप सिद्धार्थराज हर्षाये कुण्डलपुरी अनन्य हुई ॥

निज स्वभाव का साधन लेकर लो शुद्धात्म शरण ।
गुण अनंतपति, बनो सिद्धपति करके मुक्ति वरण ॥

मेरु सुदर्शन पाण्डुक वन में सुरपति ने कर प्रभु अभिषेक ।
नृत्य वाद्य मङ्गल गीतों के द्वारा किया हर्ष अतिरेक ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला त्रयोदश्याम जन्म मङ्गल प्राप्त श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मगसिर कृष्णा दशमी को उर में छाया वैराग्य अपार ।
लौकान्तिक देवों के द्वारा धन्य धन्य प्रभु जय जयकार ॥
बाल ब्रम्हचारी गुणधारी वीर प्रभू ने किया प्रयाण ।
वन में जाकर दीक्षा धारी निज में लीन हुए भगवान ॥

ॐ ह्रीं मगसिर कृष्ण दशम्याम् तपो मङ्गल प्राप्ताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादश वर्ष तपस्या करके पाया तुमने केवल ज्ञान ।
कर बैसाख शुक्ल दशमी को त्रेसठ कर्म प्रकृति अवसान ॥
सर्व द्रव्य गुण पर्यायों को युगपत एक समय में जान ।
वर्धमान सर्वज्ञ हुए प्रभु वीतराग अरिहन्त महान ॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल दशम्याम् केवल ज्ञान मङ्गल प्राप्ताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को वर्धमान प्रभु मुक्त हुए ।
सादि अनन्त समाधि प्राप्त कर मुक्ति रमा से युक्त हुए ॥
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा कर अघातिया का अवसान ।
शेष प्रकृति पच्चासी को भी क्षय करके पाया निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् मोक्ष मङ्गल मण्डिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

☼ जयमाला ☼

महावीर ने पावापुर से मोक्ष लक्ष्मी पाई थी ।
इन्द्र सुरों ने हर्षित होकर दीपावली मनाई थी ॥

परम पूज्य भगवान आत्मा है अनंतगुण से परिपूर्ण ।
अंतरमुखाकार होते ही हो जाते सब कर्म विचूर्ण ।।

केवल ज्ञान प्राप्त होने पर तीस वर्ष तक किया विहार ।
कोटि कोटि जीवों का प्रभु ने दे उपदेश किया उपकार ।।
पावापुर उद्यान पधारे योग निरोध किया साकार ।
गुणस्थान चौदह को तजकर पहुंचे भव समुद्र के पार ।।
सिद्ध शिला पर हुए विराजित मिली मोक्ष लक्ष्मी सुखकार ।
जल थल नभ में देवों द्वारा गूञ्ज उठी प्रभु की जयकार ।।
इन्द्रादिक सुर हर्षित आये मन में धारे मोद अपार ।
महामोक्ष कल्याण मनाया अखिल विश्व को मङ्गलकार ।।
अष्टादश गण राज्यों के राजाओं ने जयगान किया ।
नत मस्तक होकर जन जन ने महावीर गुणगान किया ।।
तन कपूरवत उड़ा शेष नख केश रहे इस भू तल पर ।
माया मयी शरीर रचा देवों ने क्षण भर के भीतर ।।
अग्नि कुमार सुरों ने झुक मुकुटानल से तन भस्म किया ।
सर्व उपस्थित जन समूह सुरगण ने पुण्य अपार लिया ।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या का दिवस मनोहर सुखकर था ।
उषाकाल का उजियारा कुछ तम मिश्रित अति मनहर था ।।
रत्न ज्योतियों का प्रकाश कर देवों ने मङ्गल गाये ।
रत्न दीप की आवलियों से पर्व दीपमाला लाये ।।
सबने शीष चढ़ाई भस्मी पद्म सरोवर बना वहाँ ।
वही भूमि है अनुपम सुन्दर जल मन्दिर है बना जहां ।।
इसी दिवस गौतम स्वामी को सन्ध्या केवल ज्ञान हुआ ।
केवल ज्ञान लक्ष्मी पाई पद सर्वज्ञ महान हुआ ।।
प्रभु के ग्यारह गणधर में थे प्रमुख श्री गौतम स्वामी ।
क्षपक श्रेणि चढ़ शुक्ल ध्यान से हुए देव अन्तर्यामी ।।

व्याकुल मत हो मेरे मनवा कट जाएगी दुख की रात ।
दिन के बाद रात आती है और रात के बाद प्रभात ॥

देवों ने अति हर्षित होकर रत्न ज्योति का किया प्रकाश ।
हुई दीपमाला द्विगुणित आनन्द हुआ छाया उल्लास ॥
प्रभु के चरणाम्बुज दर्शन कर हो जाता मन अति पावन ।
परम पूज्य निर्वाण भूमि शुभ पावापुर है मन भावन ॥
अखिल जगत में दीपावलि त्यौहार मनाया जाता है ।
महावीर निर्वाण महोत्सव धूम मचाता आता है ॥
हे प्रभु महावीर जिन स्वामी गुण अनन्त के हो धामी ।
भरत क्षेत्र के अन्तिम तीर्थंङ्कर जिनराज विश्वनामी ॥
मेरी केवल एक विनय है मोक्ष लक्ष्मी मुझे मिले ।
भौतिक लक्ष्मी के चक्कर में मेरी श्रद्धा नहीं हिले ॥
भव भव जन्म मरण के चक्कर मैंने पाये हैं इतने ।
जितने रजकण इस भूतल पर पाये हैं प्रभु दुख उतने ॥
अवसर आज अपूर्व मिला है शरण आपकी पाई है ।
भेद ज्ञान की बात सुनी है तो निज की सुधि आई है ॥
अब मैं कहीं नहीं जाऊंगा जब तक मोक्ष नहीं पाऊँ ।
दो आशीर्वाद हे स्वामी नित्य नये मङ्गल गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्याम् निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपमालिका पर्व पर महावीर उर धार ।
भाव सहित जो पूजते पाते सौख्य अपार ॥

卐 इत्याशीर्वाद 卐

जाप्य ॐ ह्रीं श्री वर्धमान परम सिद्धेभ्यो नमः ।

—: ✽ :—

अपनी देह नहीं अपनी तो पर पदार्थ भी सपना है।
शुद्ध बुद्ध चिद्रूप त्रिकाली ध्रुव स्वभाव ही अपना है॥

श्री महावीर जयन्ती पूजन

महावीर की जन्म जयन्ती का दिन जग में है विख्यात।
चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी को हुआ विश्व में नवल प्रभात॥
कुण्डलपुर वैशाली नृप सिद्धार्थ राजगृह जन्म लिया।
माता त्रिशला धन्य हो गईं वर्धमान रवि उदय हुआ॥
इन्द्रादिक ने मङ्गल गाये गिरि सुमेरु पर कर नर्तन।
एक सहस्त्र आठ कलशों से क्षीरोदधि से किया न्हवन॥
तीन लोक में आनन्द छाया घर घर मङ्गलचार हुआ।
दशों दिशायें हुईं सुगन्धित प्रभु का जय जयकार हुआ॥
दुखी जगत के जीवों का प्रभु के द्वारा उपकार हुआ।
निज स्वभाव जप मोक्ष गये प्रभु सिद्ध स्वपद साकार हुआ॥
मैं भी प्रभु के जन्म महोत्सव पर पुलकित हो गुण गाऊँ।
अष्ट द्रव्य से प्रभु चरणों की पूजन करके हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्।

क्षीरोदधि का क्षीर वर्ण सम भाव नीर लेकर आऊँ।
प्रभु चरणों में भेंट चढ़ाऊँ परम शान्त जीवन पाऊँ॥
महावीर के जन्म दिवस पर महावीर प्रभु को ध्याऊँ।
महावीर के पथ पर चल कर महावीर सम बन जाऊँ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्र जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम निर्वपामीति स्वाहा।

मैं एक शुद्ध चैतन्य मूर्ति शाश्वत ध्रुव ज्ञायक हूँ अनूप।
निर्मलानंद अविकारी हूँ अविचल हूँ ज्ञानानन्द रूप ॥

मलयागिरि चन्दन से उत्तम गन्ध स्वयं की प्रगटाऊँ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी शाश्वत शीतलता पाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र अखण्डित धवलाक्षत ले भाव सहित प्रभु गुण गाऊँ।
निज स्वरूप की महिमा गाऊँ अनुपम अक्षय पद पाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्रीं महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

कल्प वृक्ष के पुष्प मनोहर भावमयी लेकर आऊँ।
पर परणति से विमुख बनूँ निष्काम नाथ मैं बन जाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट रस मय नैवेद्य अनूठे भाव पूर्ण लेकर आऊँ।
निज परणति में रमण करूँ मैं पूर्ण तृप्त प्रभु बन जाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण थाल में रत्न दीप निज भावों का लेकर आऊँ।
केवल ज्ञान प्रकाश सूर्य की ज्योति किरण निज प्रगटाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

दश गन्धों की दिव्य धूप मैं शुद्ध भाव की ही लाऊँ।
दश धर्मों की परम शक्ति से अष्ट कर्म रज विघटाऊँ ॥ महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सफल हुआ सम्यक्त्व पराक्रम छाया भेद ज्ञान अनुपम ।
अंतरद्वंद नष्ट होते ही क्षीण हो गया मिथ्यातम ।।

विविध भाँति के सुर तरु फल प्रभु परम भावना मय लाऊँ ।
महा मोक्ष फल पाऊँ स्वामी फिर न लौट भव में आऊँ ।। महा०

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ शुभ ज्ञान भाव का ही लाऊँ ।
साम्य भाव चारित्र धर्म पा निज अनर्घ पदवी पाऊँ ।।
महावीर के जन्म दिवस पर महावीर प्रभु को ध्याऊँ ।
महावीर के पथ पर चल कर महावीर सम बन जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

(जयमाला)

जन्म दिवस श्री वीर का गाओ मङ्गल गान ।
आत्म ज्ञान की शक्ति से होता मोक्ष कल्याण ।।

इस अखिल विश्व में जब प्रभु हिंसा का राज्य रहा था ।
तब सत्य शान्ति सुख लय कर पापों का स्रोत बहा था ।।
ले ओट धर्म की पापी अन्याय पाप करते अति ।
वे धर्म बताते थे "वैदिक हिंसा हिंसा न भवति" ।।
पशु बलि, जन बलि, यज्ञों में होती थी जब अति भारी ।
"स्त्री शौद्रनाधीयताम्" का आधिपत्य था भारी ।।
जगती तल पर होता था हिंसा का तांडव नर्तन ।
उत्पीड़ित विश्व हुआ लख पापों का भीषण गर्जन ।।
जब जग ने त्राहि त्राहि की अरु पृथ्वी काँपी थर थर ।
तब दिव्य ज्योति दिखलाई आशा के नभ मण्डल पर ।।

निज स्वभाव की महिमा आए बिना जीव भ्रमता जाता है।
पंच परावर्त्तन के द्वारा भवसमुद्र के दुख पाता है ॥

भारत के स्वर्ण सदन में अवतरित हुए करुणामय।
श्री वीर दिवाकर प्रगटे तब विश्व हुआ ज्योतिर्मय ॥
आगमन वीर का लखकर सन्तुष्ट हुआ जग सारा।
अन्यायी हुए प्रकम्पित पापों का तजा सहारा ॥
पतितों दलितों दीनों को तब प्रभु ने शीघ्र उठाया।
अरु दिव्य अलौकिक अनुपम जग को सन्देश सुनाया ॥
पापी को गले लगाना पर घृणा पाप से करना।
प्रभु ने शुभ धर्म बताया दुख कष्ट विश्व के हरना ॥
ये पुण्य पाप की छाया ही जग में सदा भ्रमाती।
पर द्रव्यों की ममता ही चारों में गति में अटकाती ॥
अब मोह ममत्व विनाशो समकित निज उर में लाओ।
तप संयम धारण करके निर्वाण परम पद पाओ ॥
है धर्म अहिंसा मय ही रागादि भाव हैं हिंसा।
रत्नत्रय सफल तभी है उर में हो पूर्ण अहिंसा ॥
निज के स्वरूप को देखो निज का ही लो आलम्बन।
निज के स्वभाव से निश्चित कट जायेंगे भव बन्धन ॥
हैं जीव समान सभी ही एकेन्द्रिय या पंचेन्द्रिय।
है शुद्ध सिद्ध निश्चय से चैतन्य स्वरूप अनिन्द्रिय ॥
"केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वजामी" से।
जग हुआ मधुर गुञ्जारित प्रभु की निर्मल वाणी से ॥
पर हाय सदा हम भूले उपदेश वीर के अनुपम।
जाते अधर्म के पथ पर छाया अज्ञान निविड़तम ॥
हा रूढ़िवाद के बन्धन में जकड़े हुए खड़े हैं।
अवनति के गहरे गड्ढे में बेसुध हुए पड़े हैं ॥

पूर्ण अहिंसा व्रत संयम की जब निश्चय बांसुरी बजेगी ।
मोह क्षोभ की गति क्षय होगी शुद्धातम निज साज सजेगी ॥

इससे अब तो हम चेतें श्री वीर जयन्ती आई ।
भूमण्डल के जीवों को नूतन सन्देशा लाई ॥
चेतो चेतो हे वीरो अब समय नहीं सोने का ।
आलस्य मोह निद्रा में अवसर है ना खोने का ॥
कर्तव्य धर्म मय पालो अरु त्यागो कर्म निरर्थक ।
तब वीर जयन्ति मनाना होगा अति अनुपम सार्थक ॥
श्री वर्धमान सन्मति को अतिवीर वीर को वन्दन ।
है महावीर स्वामी का अति विनय भाव से अर्चन ॥
आशीर्वाद दो हे प्रभु हम द्रव्य दृष्टि बन जायें ।
रागादि भाव को जय कर परमात्म परम पद पायें ॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याम् जन्म मङ्गल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वीर जयन्ती दे रही शुभ सन्देश महान ।
प्राणि मात्र से प्रेम कर करो आत्म कल्याण ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः ।

— ✱ —

श्री अक्षय तृतीया पूजन

अक्षय तृतिया पर्व दान का ऋषभ देव ने दान लिया ।
नृप श्रेयांस दान दाता थे, जगती ने यशगान किया ॥
अहो दान की महिमा, तीर्थंकर भी लेते हाथ पसार ।
होते पंचाश्चर्य पुण्य का भरता है अपूर्व भण्डार ॥
मोक्ष मार्ग के महाव्रती को, भाव सहित जो देते दान ।
निज स्वरूप जप वह पाते हैं निश्चित शाश्वत पद निर्वाण ॥

शुद्धात्मसूर्य प्रकाश का निश्चय परम पुरुषार्थ है ।
घनघाति कर्म विनाश का आचरण ही परमार्थ है ।।

दान तीर्थ के कर्त्ता नृप श्रेयांस हुए प्रभु के गणधर ।
मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध लोक में पाया शिव पद अविनश्वर ।।
प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ प्रभु तुम्हें नमन है बारम्बार ।
गिरि कैलाश शिखर से तुमने लिया सिद्ध पद मङ्गलकार ।।
नाथ आपके चरणाम्बुज में श्रद्धा सहित प्रणाम करूं ।
त्याग धर्म की महिमा पाऊं, मैं सिद्धों का धाम वरूं ।।
शुभ बैशाख शुक्ल तृतीया का दिवस पवित्र महान् हुआ ।
दान धर्म की जय जय गूञ्जी अक्षय पर्व प्रधान हुआ ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्मोदय से प्रेरित होकर विषयों का व्यापार किया ।
उपादेय को भूल हेय तत्वों से मैंने प्यार किया ।।
जन्म मरण दुख नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं ।
अक्षय तृतिया पर्व दान का नृप श्रेयांस सुयश गाऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वच काया की चंचलता कर्म आश्रव करती है ।
चार कषायों की छलना ही भव सागर दुख भरती है ।।
भवाताप के नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं । अक्षय०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

इन्द्रिय विषयों के सुख क्षण भंगुर विद्युत सम चमक अथिर ।
पुण्य क्षीण होते ही आते महा असाता के दिन फिर ।
पद अखण्ड की प्राप्ति हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं ।। अक्षय०

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि०।

आत्म सूर्य के ज्योति पुन्ज सेतिमिर रश्मियाँ हुई विकीर्ण।
निज स्वरूप लक्षी होते ही हो जाता ममत्व सब क्षीण ।।

शील विनय व्रत तप धारण करके भी यदि परमार्थ नहीं।
बाह्य क्रियाओं में ही उलझे वह सच्चा पुरुषार्थ नहीं ।।
काम वाण के नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊँ। अक्षय०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।
विषय लोलुपी भोगों की ज्वाला में जल जल दुख पाता।
मृग तृष्णा के पीछे पागल नर्क निगोदादिक जाता ।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभ को ध्याऊँ। अक्षय०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।
ज्ञान स्वरूप आत्मा का जिसको श्रद्धान नहीं होता।
भव वन में ही भटका करता है निर्वाण नहीं होता ।।
मोह तिमिर के नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊँ। अक्षय०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।
कर्म फलों को वेदन करके सुखी दुखी जो होता है।
अष्ट प्रकार कर्म का बन्धन सदा उसी को होता है ।।
कर्म शत्रु के नाश हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊँ। अक्षय०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।
जो बन्धों से विरक्त होकर बन्धन का अभाव करता।
प्रज्ञा छैनी ले बन्धन को पृथक् शीघ्र निज से करता ।।
महा मोक्ष फल प्राप्ति हेतु मैं आदिनाथ प्रभु को ध्याऊँ। अक्षय०
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् नि०।
पर मेरा क्या कर सकता है मैं पर का क्या कर सकता।
यह निश्चय करने वाला ही भव अटवी के दुख हरता ।।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु मैं आदिनाथ प्रभ को ध्याऊँ।
अक्षय तृतिया पर्व दान का नृप श्रेयांस सुयश गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि०।

जो विकल्प है आश्रव युत है निर्विकल्प ही आश्रव हीन ।
जो स्वरूप में थिर रहता है वही ज्ञान है ज्ञान प्रवीण ।।

☼ जयमाला ☼

चार दान दो जगत में जो चाहो कल्याण ।
औषधि भोजन अभय अरु सद् शास्त्रों का ज्ञान ।।

पुण्य पर्व अक्षय तृतिया का हमें दे रहा है यह ज्ञान ।
दान धर्म की महिमा अनुपम श्रेष्ठ दान दे बनो महान ।।
दान धर्म की गौरव गाथा का प्रतीक है यह त्योहार ।
दान धर्म का शुभ प्रेरक है सदा दान की जय जयकार ।।
आदिनाथ ने अर्ध वर्ष तक किये तपस्या मय उपवास ।
मिली न विधि फिर अन्तराय होते होते बीते छः मास ।।
मुनि आहार दान देने की विधि थी नहीं किसी को ज्ञात ।
मौन साधना में तन्मय हो प्रभु विहार करते प्रख्यात ।।
नगर हस्तिनापुर के अधिपति सोम और श्रेयांस सुभ्रात ।
ऋषभ देव के दर्शन कर कृत कृत्य हुए पुलकित अभिजात ।।
श्रेयांस को पूर्व जन्म का स्मरण हुआ तत्क्षण विधिकार ।
विधिपूर्वक पड़गाहा प्रभु को दिया इक्षु रस का आहार ।।
पंचाश्चर्य हुए प्राँगण में हुआ गगन में जय जयकार ।
धन्य धन्य श्रेयांस दान का तीर्थ चलाया मङ्गलकार ।।
दान पुण्य की यह परम्परा हुई जगत में शुभ प्रारम्भ ।
हो निष्काम भावना सुन्दर मन में लेश न हो कुछ दम्भ ।।
चार भेद हैं दान धर्म के औषधि शास्त्र अभय आहार ।
हम सुपात्र को योग्य दान दे बनें जगत् में परम उदार ।।
धन वैभव तो नाशवान है अतः करें जी भर कर दान ।
इस जीवन में दान कार्य कर करें स्वयं अपना कल्याण ।।

शुद्ध भाव ही मोक्ष मार्ग है इससे चलित नहीं होना ।
चलित हुए तो मुक्ति न होगी होगा कर्मभार ढोना ॥

अक्षय तृतिया के महत्व को यदि निज में प्रगटायेंगे ।
निश्चित ऐसा दिन आयेगा हम अक्षय फल पायेंगे ।
हे प्रभु आदिनाथ मङ्गलमय हम को भी ऐसा वर दो ॥
सम्यक् ज्ञान महान सूर्य का अन्तर में प्रकाश कर दो ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घम् नि० ।
अक्षय तृतीया पर्व की महिमा अपरम्पार ।
त्याग धर्म जो साधते हो जाते भव पार ॥
इत्याशीर्वादः
जाप्य– ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।

श्री श्रुत पंचमी पूजन

स्याद्वाद मय द्वादशांग युत माँ जिनवाणी कल्याणी ।
जो भी शरण हृदय से लेता हो जाता केवल ज्ञानी ॥
जय जय जय हितकारी शिव सुखकारी माता जय जय जय ।
कृपा तुम्हारी से ही होता भेद ज्ञान का सूर्य उदय ॥
श्री धरसेनाचार्य कृपा से मिला परम जिन श्रुत का ज्ञान ।
भूतबली मुनि पुष्पदन्त ने षट्खंडागम रचा महान ॥
अंकलेश्वर में यह ग्रन्थ हुआ था पूर्ण आज के दिन ।
जिनवाणी लिपि बद्ध हुई थी पावन परम आज के दिन ॥
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस जिन श्रुत का जय जयकार हुआ ।
श्रुत पंचमी पर्व पर श्री जिनवाणी का अवतार हुआ ॥
ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागम अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागम अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।
शुद्ध स्वानुभव जल धारा से यह जीवन पवित्र कर लूँ ।
साम्य भाव पीयूष पान कर जन्म जरामय दुःख हर लूँ ॥

भव भय को हरने वाला सम्यकदर्शन अति पावन ।
शिव सुख को करने वाला सम्यक्त्व परम मन भावन ।

श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट् खण्डागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ।

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव का उत्तम पावन चन्दन चर्चित कर लूँ ।
भव दावानल के ज्वालामय अघसंताप ताप हर लूँ ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुत षट् खण्डागमाय संसारताप विनाशनाय चन्दनंनि०

शुद्ध स्वानुभव के परमोत्तम अक्षत धवल हृदय धर लूँ ।
परम शुद्ध चिद्रूप शक्ति से अनुपम अक्षय पद वर लूँ ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डगमाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि० ।

शुद्ध स्वानुभव के पुष्पों से निज अन्तर सुरभित कर लूँ ।
महाशील गुण के प्रताप से मैं कन्दर्प दर्प हर लूँ ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमायकामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

शुद्ध स्वानुभव के अति उत्तम प्रभु नैवेद्य प्राप्त कर लूँ ।
अमल अतन्द्रिय निज स्वभाव से दुखमय क्षुधा व्याधि हरलूं ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुतषट्खण्डागमाय क्षुधा रोग विनाशनायनैवेद्यम्नि०।

शुद्ध स्वानुभव के प्रकाशमय दीप प्रज्वलित मैं कर लूँ ।
मोह तिमिर अज्ञान नाश कर निज कैवल्य ज्योति वर लूँ ।।श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमाय अज्ञानान्धकार विनाशनाय दीपंनि०।

शुद्ध स्वानुभव गन्ध सुरभि मय ध्यान धूप उर में भर लूँ ।
संवर सहित निर्जरा द्वारा मैं वसु कर्म नष्ट कर लूँ ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमाय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।

शुद्ध स्वानुभाव का फल पाऊँ मैं लोकाग्र शिखर वर लूँ ।
अजर अमर अविकल अविनाशी पद निर्वाण प्राप्त कर लूँ ।। श्रुत०

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमाय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि० ।

"अप्पा सो परमप्पा" जिनके उर में भाव समाया ।
पर पदार्थ से निमिष मात्र में उसने राग हटाया ।।

शुद्ध स्वानुभव दिव्य अर्घ ले रत्नत्रय सु पूर्ण कर लूँ ।
भव समुद्र को पार करूँ प्रभु निज अनर्घ पद मैं वर लूँ ।।
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट् खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत षट् खण्डागमाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् नि० ।

जयमाला

श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।
गूँजा जय जयकार जगत् में जिन श्रुत जय जयकार का ।।
ऋषभदेव की दिव्य ध्वनि का लाभ पूर्ण मिलता रहा ।
महावीर तक जिन वाणी का विमल वृक्ष खिलता रहा ।।
हुए केवली अरुश्रुतकेवलि ज्ञान अमर फलता रहा ।
फिर आचार्यों के द्वारा यह ज्ञान दीप जलता रहा ।।
भव्यों में अनुराग जगाता मुक्ति वधू के प्यार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।।
गुरु परम्परा से जिनवाणी निर्झर सी झरती रही ।
मुमुक्षुओं को परम मोक्ष का पथ प्रशस्त करती रही ।।
किन्तु काल की घड़ी मनुज की स्मरण शक्ति हरती रही ।
श्री धरसेनाचार्य हृदय में करुण टीस भरती रही ।।
द्वादशाँग का लोप हुआ तो क्या होगा संसार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।।
शिष्य भूतबलि पुष्पदन्त की हुई परीक्षा ज्ञान की ।
जिनवाणी लिपिबद्ध हेतु श्रुत विद्या विमल प्रदान की ।।
ताड़ पत्र पर हुई अवतरित वाणी जन कल्याण की ।
षट्खण्डागम महा ग्रन्थ करुणानुयोग जय ज्ञान की ।।

अंतर्मन निर्ग्रंथ नहीं तो फिर सच्चा निर्ग्रंथ नहीं।
बाह्य क्रिया कांडों से होता इस भव दुख का अंत नहीं।।

ज्येठ शुक्ल पंचमी दिवस था सुरनर मङ्गलचार का।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का।।
धन्य भूतवलि पुष्पदन्त जय श्री धरसेनाचार्य की।
लिपि परम्परा स्थापित करके नई क्रांति साकार की।।
देवों ने पुष्पों की वर्षा नभ से अगणित बार की।
धन्य धन्य जिनवाणी माता निज पर भेद विचार की।।
ऋणी रहेगा विश्व तुम्हारे निश्चय का व्यवहार का।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का।।
धवला टीका वीरसेन कृत बहात्तर हजार श्लोक।
जय धवला जिनसेन वीरकृत उत्तम साठ हजार श्लोक।।
महा धवल है देवसेन कृत हैं चालीस हजार श्लोक।
विजय धवल अरु अतिशय धवल नहीं उपलब्ध एकश्लोक।
षट् खण्डागम टीकाएँ पढ़ मन होता भव पार का।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का।।
फिर तो ग्रन्थ हजारों लिखे ऋषि मुनियों ने ज्ञानप्रधान।
चारों ही अनुयोग रचे जीवों पर करके करुणा दान।।
पुण्य कथा प्रथमानुयोग द्रव्यानुयोग है तत्त्व प्रधान।
ऐक्सरे करूणानुयोग चरणानुयोग कैमरा महान।।
यह परिणाम नापता है वह बाह्य चरित्र विचार का।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का।।
जिनवाणी की भक्ति करें हम जिन श्रुत की महिमा गायें।
सम्यक् दर्शन का वैभवले भेद ज्ञान निधि को पायें।।
रत्नत्रय का अवलम्बन लें निज स्वरूप में रम जायें।
मोक्ष मार्ग पर चलें निरन्तर फिर न जगत में भरमायें।।

देवालय में देव नहीं है मनमंदिर में देव है ।
अंतर्मुख हो देख स्वय तू महादेव स्वयमेव है ।।

धन्य धन्य अवसर आया है अब निज के उद्धार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।।
गून्जा जय जय नाद जगत् में जिन श्रुतजय जयकार का ।।

ॐ ह्रीं श्री परम श्रुत पट् खण्डागमाय पूर्णार्घम् नि० ।

श्रुत पंचमी सुपर्व पर करो तत्त्व का ज्ञान ।
आतम तत्त्व का ध्यान कर पाओ पद निर्वाण ।।

☼ इत्याशीर्वादः ☼

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री परम श्रुतेभ्यो नमः ।

☼☼☼

श्री वीर शासन जयन्ती पूजन

वर्धमान अतिवीर वीर प्रभु सन्मति महावीर स्वामी ।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर अन्तिम तीर्थङ्कर नामी ।।
श्री अरिहंत देव मङ्गलमय स्व पर प्रकाशक गुणधामी ।
सकल लोक के ज्ञाता दृष्टा महा पूज्य अन्तर्यामी ।।
महावीर शासन का पहला दिन श्रावण कृष्णा एकम ।
शासन वीर जयन्ती आती है प्रतिवर्ष सुपावनतम ।।
विपुलाचल पर्वत पर प्रभु के समवशरण में मङ्गलकार ।
खिरी दिव्य ध्वनि शासन वीर जयन्ती पर्व हुआ साकार ।।
प्रभु चरणाम्बुज पूजन करने का आया उर में शुभ भाव ।
सम्यक् ज्ञान प्रकाश मुझे दो, राग द्वेष का करूँ अभाव ।।

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

आत्मिक रुचि ही तो अनंत सुख की है पावन साधना ।
परम शुद्ध चैतन्य ब्रह्म की सहज जगाती भावना ।।

भाग्यहीन नर रत्न स्वर्ण को जैसे प्राप्त नहीं करता ।
ध्यानहीन मुनि निज आतम का त्यों अनुभवन नहीं करता ।।
शासन वीर जयन्ती पर जल चढ़ा वीर का ध्यान करूं ।
खिरी दिव्य ध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूं ।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।
विविध कल्पना उठती मन में, वे विकल्प कहलाते हैं ।
बाह्य पदार्थों में ममत्व मन के सङ्कल्प रुलाते हैं ।।
शासन वीर जयन्ती पर चन्दन अर्पित कर ध्यान करूं । खिरी०
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।
अन्तरंग बहिरंग परिग्रह त्यागूं, मैं निर्ग्रन्थ बनूं ।
जीवन मरण मित्र अरि, सुख दुख लाभ हानि में साम्य बनूं ।।
शासन वीर जयन्ती पर, कर अक्षत भेंट स्व ध्यान करूं । खिरी०
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि०।
शुद्ध सिद्ध ज्ञानादिक गुणों से, मैं समृद्ध हूं देह प्रायाण ।
नित्य असंख्यप्रदेशी निर्मल हूं अमूर्तिक महिमावान ।।
शासन वीर जयन्ती पर, कर भेंट पुष्प निज ध्यान करूं । खिरी०
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।
परम तेज हूं परम ज्ञान हूं परम पूर्ण हूं ब्रह्म स्वरूप ।
निरालम्ब हूं निर्विकार हूं निश्चय से मैं परम अनूप ।।
शासन वीर जयन्ती पर नैवेद्य चढ़ा निज ध्यान करूं । खिरी०
ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।
स्व पर प्रकाशक केवल ज्ञानमयी, निज मूर्ति अमूर्ति महान् ।
चिदानन्द टंकोत्कीर्ण हूँ ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता भगवान् ।।
शासन वीर जयन्ती पर दीप चढ़ा निज ध्यान करूं । खिरी०
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि०।

एक मात्र पुरुषार्थ यही है सम्यक् पथ पर आ जाओ।
अंतस्तल की गहराई में आकर निज दर्शन पाओ॥

द्रव्य कर्म ज्ञानावरणादिक देहादिक नोकर्म विहीन।
भाव कर्म रागादिक से मैं पृथक् आत्मा ज्ञान प्रवीण॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं धूप चढ़ा निज ध्यान करूँ। खिरी०

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीर जिनेन्द्राय अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।

कर्म मल रहित शुद्ध ज्ञानमय, परम मोक्ष है मेरा धाम।
भेद ज्ञान की महा शक्ति से, पाऊँगा अनन्त विश्राम॥
शासन वीर जयन्ती पर फल चढ़ा शुद्ध निज ध्यान करूँ। खिरी०

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि०स्वाहा।

मात्र वासना जन्य कल्पना है पर द्रव्यों में सुख बुद्धि।
इन्द्रिय जन्य सुखों के पीछे पाई किञ्चित नहीं विशुद्धि॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं अर्घ चढ़ा निज ध्यान करूँ।
खिरी दिव्य ध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि०।

☼ जयमाला ☼

विपुलाचल के गगन को वन्दू बारम्बार।
सन्मति प्रभु की दिव्य ध्वनि जहां हुई साकार॥

महावीर प्रभु दीक्षा लेकर मौन हुए तप संयम धार।
परिषह उपसर्गों को जय कर देश देश में किया विहार॥
द्वादश वर्ष तपस्या करके ऋजु कूला सरि तट आये।
क्षपक श्रेणि चढ़ शुक्ल ध्यान से कर्म घातिया विनसाये॥
स्व पर प्रकाशक परम ज्योतिमय प्रभु को केवल ज्ञान हुआ।
इन्द्रादिक को समवशरण रच, मन में हर्ष महान् हुआ॥
बारह सभा जुड़ी अति सुन्दर, सबके मन का कमल खिला।
जन मानस को प्रभु की दिव्य ध्वनि का, किन्तु न लाभ मिला॥

ज्ञानदीप की शिखा प्रज्ज्वलित होते ही भ्रम दूर हुआ ।
सम्यक् दर्शन की महिमा से गिरि मिथ्यातम चूर हुआ ।।

छयासठ दिन तक रहे मौन प्रभु, दिव्यध्वनि का मिला न योग ।
अपने आप स्वयं मिलता है, निमित्त नैमित्तिक संयोग ।।
राजगृही के विपुलाचल पर, प्रभु का समवशरण आया ।
अवधि ज्ञान से जान इन्द्र ने, गणधर का अभाव पाया ।।
बड़ी युक्ति से इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण को वह लाया ।
गौतम ने दीक्षा लेते ही ऋषि गणधर का पद पाया ।।
तत्क्षण खिरी दिव्य ध्वनि प्रभु की द्वादशांग मय कल्याणी ।
रच डाली अन्तर मुहूर्त्त में, गौतम ने श्री जिनवाणी ।।
सात शतक लघु और महा भाषा अष्टादश विविध प्रकार ।
सब जीवों ने सुनी दिव्य ध्वनि अपने उपादान अनुसार ।।
विपुलाचल पर समवशरण का हुआ आज के दिन विस्तार ।
प्रभु की पावन वाणी सुनकर गूञ्जा नभ में जय जयकार ।।
जन जन में नव जाग्रति जागी मिटा जगत का हाहाकार ।
जियो और जीने दो का जीवन सन्देश हुआ साकार ।।
धर्म अहिंसा सत्य और अस्तेय मनुज जीवन का सार ।
ब्रह्मचर्य अपरिग्रह से ही होगा जीव मात्र से प्यार ।।
घृणा पाप से करो सदा ही किन्तु नहीं पापी से द्वेष ।
जीव मात्र को निज सम समझो यही वीर का था उपदेश ।।
इन्द्रभूति गौतम ने गणधर बनकर भाषी जिनवाणी ।
इसके द्वारा परमात्मा बन सकता कोई भी प्राणी ।।
मेघ गर्जना करती श्री जिनवाणी का बह चला प्रवाह ।
पाप ताप संताप नष्ट हो गये मोक्ष की जागी चाह ।।
प्रथमं, करणं, चरणं, द्रव्यं ये अनुयोग बताये चार ।
निश्चय नय सत्यार्थ बताया, असत्यार्थ सारा व्यवहार ।।

अब प्रभु चरण छोड़ कित जाऊं ।
ऐसी निर्मल वुद्धि प्रभो दो शुद्धातम को ध्याउं ॥

तीन लोक षट द्रव्यमयी है सात तत्व की श्रद्धा सार ।
नव पदार्थ छह लेश्या जानो, पंच महाव्रत उत्तम धार ॥
समिति गुप्ति चारित्र पाल कर तप संयम धारो अविकार ।
परम शुद्ध निज आत्म तत्त्व,आश्रय से हो जाओ भव पार ॥
उस वाणी को मेरा वन्दन, उसकी महिमा अपरम्पार ।
सदा वीर शासन की पावन, परम जयन्ती जय जयकार ॥
वर्धमान अतिवीर वीर की पूजन का है हर्ष अपार ।
काल लब्धि प्रभु मेरी आई, शेष रहा थोड़ा संसार ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सन्मति वीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

दिव्य ध्वनि प्रभु वीर की देती सौख्य अपार ।
आत्म ज्ञान की शक्ति से, खुले मोक्ष का द्वार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री संपूर्ण द्वादशांगाय नमः ।

श्री रक्षा बन्धन पर्व पूजन

जय अकम्पनाचार्य आदि सात सौ साधु मुनिव्रत धारी ।
बलि ने कर नरमेध यज्ञ उपसर्ग किया भीषण भारी ॥
जय जय विष्णु कुमार महा मुनि ऋद्धि विक्रिया के धारी ।
किया शीघ्र उपसर्ग निवारण वात्सल्य करुणा धारी ॥
रक्षा-बन्धन पर्व मना मुनियों का जय जयकार हुआ ।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन घर घर मङ्गलचार हुआ ॥
श्री मुनि चरण कमल मैं वन्दू पाऊँ प्रभु सम्यक् दर्शन ।
भक्ति भाव से पूजन करके निज स्वरूप में रहूं मगन ॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

द्रव्य पर अणुमात्र भी तेरा नहीं इसलिएपर द्रव्य से मत रागकर ।
द्रव्य तेरा शुद्ध चेतन आत्म है इसलिए निज आत्म से अनुराग कर ॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनि अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

जन्म मरण के नाश हेतु प्रासुक जल करता हूँ अर्पण ।
राग द्वेष परणति अभाव कर निज परणति में करूँ रमण ॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सप्त शतक को करूँ नमन ।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णु कुमार महा मुनि को वन्दन ॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

भव सन्ताप मिटाने को मैं चन्दन करता हूं अर्पण ।
देह भोग भव से विरक्त हो निज परणति में करूँ रमण ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

अक्षय पद अखण्ड पाने को अक्षत धवल करूँ अर्पण ।
हिंसादिक पापों को क्षय कर निज परणति में करूँ रमण ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ।

काम वाण विध्वंस हेतु मैं सहज पुष्प करता अर्पण ।
क्रोधादिक चारों कषाय हर निज परणति में करूँ रमण ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा रोग के नाश हेतु नैवेद्य सरस करता अर्पण ।
विषय भोग की आकांक्षा हर निज परणति में करूँ रमण ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तीव्रराग को दुखमय समझा, मंदराग को सुखमय जाना ।
पाप पुण्य दोनो बंधन हैं वीतराग का कथन न माना ।।

चिर मिथ्यात्व तिमिर हरने को दीप ज्योति करता अर्पण ।
सम्यक् दर्शन का प्रकाश पा निज परणति में करूं रमण ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो मोहान्धकार विनाशनायदीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट कर्म के नाश हेतु यह धूप सुगन्धित है अर्पण ।
सम्यक् ज्ञान हृदय प्रगटाऊं निज परणति में करूं रमण ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ति प्राप्ति हित उत्तम फल चरणों में करता हूं अर्पण ।
मै सम्यक् चारित्र प्राप्त कर निज परणति में करूं रमण ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शाश्वत पद अनर्घ पाने को उत्तम अर्घ करूं अर्पण ।
रत्नत्रय की तरणी खेऊं निज परणति में करूं रमण ।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सप्त शतक को करूं नमन ।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णु कुमार महा मुनि कोवन्दन ।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि०स्वाहा ।

❋ जयमाला ❋

वात्सल्य के अङ्ग की महिमा अपरम्पार ।
विष्णु कुमार मुनीन्द्र की गूंजी जय जयकार ।।

उज्जयनी नगरी के नृप श्री वर्मा के थे मन्त्री चार ।
बलि,प्रहलाद,नमुचि,बृहस्पति चारों अभिमानीसविकार ।।
जब अकम्पनाचार्य संघ मुनियों का नगरी में आया ।
सात शतक मुनि के दर्शन कर नृप श्री वर्मा हर्षाया ।।

निज में निज पुरुषार्थ करूँ तो भव बंधन सब कट जायेंगे ।
निज स्वभाव में लीन रहूं तो कर्मों के दल मिट जायेंगे ।।

सब मुनि मौन ध्यान में रत, लख बलि आदिक ने निन्दा की ।
कहा कि मुनि सब मूर्ख, इसीसे नहीं तत्त्व की चर्चा की ।।
किन्तु लौटते समय मार्ग में, श्रुत सागर मुनि दिखलाये ।
वाद विवाद किया श्री मनि से, हारे, जीत नहीं पाये ।।
अपमानित होकर निशि में मुनि पर प्रहार करने आये ।
खड्ग उठाते ही कीलित हो गये हृदय में पछताये ।।
प्रातः होते ही राजा ने आकर मुनि को किया नमन ।
देश निकाला दिया मन्त्रियों को तब राजा ने तत्क्षण ।।
चारों मन्त्री अपमानित हो पहुंचे नगर हस्तिनापुर ।
राजा पद्मराय को अपनी सेवाओं से प्रसन्न कर ।।
मुंह मांगा वरदान नृपति ने बलि को दिया तभी तत्पर ।
जब चाहूंगा तब ले लूंगा, बलि ने कहा नम्र होकर ।।
फिर अकम्पनाचार्य सात सौ मुनियों सहित नगर आये ।
बलि के मन में मुनियों की हत्या के भाव उदय आये ।।
कुटिल चाल चल बलि ने नृप से आठ दिवस का राज्य लिया।
भीषण अग्नि जलाई चारों ओर द्वेष से कार्य किया ।।
हाहाकार मचा जगती में, मुनि स्वध्यान में लीन हुए ।
नश्वर देह भिन्न चेतन से, यह विचार निज लीन हुए ।।
यह नरमेघ यज्ञ रच बलि ने किया दान का ढोंग विचित्र।
दान किमिच्छक देताथा, परमन था अतिहिंसक अपवित्र।।
पद्मराय नृप के लघु भाई, विष्णु कुमार महा मुनिवर ।
वात्सल्य का भाव जगा, मुनियों पर संकट का सुनकर ।।
किया गमन आकाश मार्ग से, शीघ्र हस्तिनापुर आये ।
ऋद्धि विक्रिया द्वारा याचक, वामन रूप बना लाये ।।

मोक्ष मार्ग पर चले निरंतर जग में सच्चा श्रमण वही है ।
ज्ञानवान है ध्यानवान है निज स्वरूप अतिक्रमण नहीं है ।।

बलि से मांगी तीन पाँव भू, बलिराजा हँस कर बोला ।
जितनी चाहो उतनी ले लो, वामन मूर्ख बड़ा भोला ।।
हँस कर मुनि ने एक पाँव में ही सारी पृथ्वी नापी ।
पग द्वितीय में मानुषोत्तर पर्वत की सीमा नापी ।।
ठौर न मिला तीसरे पग को, बलि के मस्तक पर रक्खा ।
क्षमा क्षमा कह कर बलि ने, मुनि चरणों में मस्तक रक्खा ।
शीतल ज्वाला हुई अग्नि की, श्री मुनियों की रक्षा की ।
जय जयकार धर्म का गूँजा, वात्सल्य की शिक्षा दी ।।
नवधा भक्तिपूर्वक सबने मुनियों को आहार दिया ।
बलि आदिक का हुआ हृदय परिवर्तन जय जयकार किया ।।
रक्षा सूत्र बाँध कर तब जन जन ने मङ्गलचार किये ।
साधर्मी वात्सल्य भाव से, आपस में व्यवहार किये ।।
समकित के वात्सल्य अङ्ग की महिमा प्रगटी इस जग में ।
रक्षा-बन्धन पर्व इसी दिन से प्रारम्भ हुआ जग में ।।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा दिन था रक्षा सूत्र बंधा कर में ।
वात्सल्य की प्रभावना का आया अवसर घर घर में ।।
प्रायश्चित ले विष्णु कुमार पुनः व्रत ले तप ग्रहण किया ।
अष्ट कर्म बन्धन को हर कर इस भव से ही मोक्ष लिया ।।
सब मुनियों ने भी अपने अपने परिणामों के अनुसार ।
स्वर्ग मोक्ष पद पाया जग में हुई धर्म की जय जयकार ।।
धर्म भावना रहे हृदय में, पापों के प्रतिकूल चलूँ ।
रहे शुद्ध आचरण सदा ही धर्म मार्ग अनुकूल चलूँ ।।
आत्म ज्ञान रुचि जगे हृदय में, निज पर को मैं पहिचानूँ ।
समकित के आठों अङ्गों की, पावन महिमा को जानूँ ।।

जग में नहीं किसी का कोई जग मतलब का मीत है।
भीतर तो है मायाचारी ऊपर झूठी प्रीत है ॥

तभी सार्थक जीवन होगा तभी सार्थक हो नर देह ।
अन्तर घट में जब बरसेगा पावन परम ज्ञान रस मेह ॥
पर से मोह नहीं होगा, होगा, निजात्मा से अति नेह।
तब पायेंगे हम अखण्ड अविनाशी निज सुखमय शिव गेह ।
रक्षा-बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान ।
रक्षा-बन्धन पर्व ज्ञान की, रक्षा का त्यौहार प्रधान ॥
रक्षा-बन्धन पर्व चरित की, रक्षा का त्यौहार महान ।
रक्षा-बन्धन पर्व आत्म की, रक्षा का त्यौहार प्रधान ॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सात शतक को करूँ नमन।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णु कुमार महा मुनि को वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्त शतक मुनिभ्यो पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा-बन्धन पर्व पर श्री मुनि पद उर धार ।
मन वच तन जो पूजते, पाते सौख्य अपार ॥

❋ इत्याशीर्वादः ❋

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री परम ऋषीश्वरेभ्यो नमः ।

—: ❋ :—

श्री णमोकार मंत्र पूजन

ॐ णमो अरिहंताणं जप अरिहंतों का ध्यान करूँ ।
ॐ णमो सिद्धाणं जप कर सिद्धों का गुणगान करूँ ॥
ॐ णमो आयरियाणं जप आचार्यों को नमन करूँ ।
ॐ णमो उवज्झायाणं जप उपाध्याय को नमन करूँ ॥
णमो लोए सव्वसाहूणं जप सर्व साधुओं को वंदन ।
णमोकार का महा मंत्र जप मिथ्यातम को करूँ वमन ॥

एक देश संयम का धारी कहलाता है देशव्रती ।
पूर्णदेश संयम का धारी कहलाता है महाव्रती ।।

एमो पंच णमो यारो जप सर्व पाप अवसान करूं ।
सर्व मंगलों में पहिला मंगल पढ़ मंगल गान करूं ।।
णमो कार का मंत्र जपूं मैं णमो कार का ध्यान करूं ।
णमो कार की महाशक्ति से निज आतम कल्याण करूं ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

ज्ञानावरणी कर्मनाश हित मिथ्यातम का करूं अभाव ।
जन्म मरण दुख क्षय कर डालूं प्राप्त करूं निज शुद्ध स्वभाव ।।
णमोकार का मंत्र जपूं मैं णमोकार का ध्यान करूं ।
णमोकार की महाशक्ति से नाथ आत्म कल्याण करूं ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय ज्ञानावरणी कर्म विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शन आवरणी क्षय करने चिर अविरति का करूं अभाव ।
यह संसारताप क्षय करने प्राप्त करूं निज शुद्ध स्वभाव ।। णमो०

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय दर्शनावरणी कर्मविनाशनाय चन्दनम् नि०।

वेदनीय की पीड़ा हरने करलूं पंच प्रमाद अभाव ।
अक्षय पद पाने को स्वामी प्राप्त करूं निज शुद्ध स्वभाव ।।णमो०

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय वेदनीय कर्मनाशाय अक्षतम् नि०।

मोहनीय का दर्प कुचलदूं करलूं पूर्ण कषाय अभाव ।
काम बाण की व्याधि मिटाऊं प्राप्त करूं निज शुद्ध स्वाभाव ।।णमो०

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय मोहनीय कर्म विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

आयु कर्म के सर्वनाश हित शीघ्र करूं त्रय योग अभाव ।
क्षुधा व्याधि का नाश करूं मैं प्राप्त करूं निज शुद्ध स्वभाव ।।णमो०

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय आयुकर्म नाशाय नैवेद्यम् नि० ।

संसार महासागर से समकिती पार हो जाता ।
मिथ्यामति सदा भटकता भव सागर में खो जाता ।।

नाम कर्म का मल मिटादूँ नष्ट करूँ मैं सर्व विभाव ।
भ्रम अज्ञान विनाश करूँ मैं प्राप्त करूँ निज शुद्ध स्वभाव ।।णमो०

ॐ ह्रीं श्रीं पच नमस्कार मंत्राय नामकर्म नाशाय दीपम् नि० ।

गोत्र कर्म को दग्ध करूँ मैं कर्म प्रकृति सब करूँ अभाव ।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ मैं प्राप्त करूँ निज शुद्ध स्वभाव ।। णमो०

ॐ ह्रीं श्री पच नमस्कार मंत्राय गोत्र कर्मनाशाय धूपम् यि० ।

अंतराय मूलोच्छेद कर सर्व बंध का करूँ अभाव ।
परम मोक्ष फल पाऊँ स्वामी प्राप्त करूँ निज शुद्ध स्वभाव ।।णमो०

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय अंतराय कर्म नाशाय फलम् नि०।

परम भेद विज्ञान प्राप्त कर करलूं मैं संसार अभाव ।
पद अनर्घ पाने को स्वामी प्राप्त करूँ निज शुद्ध स्वभाव ।।
णमोकार का मंत्र जपूँ मैं णमोकार का ध्यान करूँ ।
णमोकार की महाशक्ति से नाथ आत्म कल्याण करूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० ।

(जयमाला)

णमोकार जिन मंत्र का जाप करूँ दिन रात ।
पाप पुण्य को नाश कर पाऊँ मोक्ष प्रभात ।।
छयालीस गुण धारी स्वामी नमस्कार अरिहंतो को ।
अष्ट स्वगुण धारी अनंत गुण मंडित बन्दूँ सिद्धों को ।।
हैं छत्तीस गुणों से भूषित नमस्कार आचार्यों को ।
हैं पच्चीस गुणों से शोभित नमस्कार उपाध्यायों को ।।
अट्ठाईस मूल गुणधारी नमस्कार सब मुनियों को ।
ॐ शब्द में गर्भित पांचों परमेष्ठी प्रभु गणियों को ।।

जड़ से प्रीत न की होती तो चेतन अगणित दुख न उठाता ।
भव पीड़ा कब की कट जाती मुक्ति वधू मिलती हर्षाता ॥

सर्व मङ्गलों में सर्वोतम सर्वश्रेष्ठ मङ्गलदाता ।
ह्रीं शब्द में गर्भित चौबीसों तीर्थङ्कर विख्याता ॥
णमोकार पैंतिस अक्षर का मंत्र पवित्र ध्यान करलूँ ।
यह नवकार मंत्र अड़सठ अक्षर से युक्त ज्ञान करलूँ ॥
"अर्हंत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुनमः" भज लूँ ।
सोलह अक्षर का यह पावन मंत्र जपूँ दुष्कृत तज लूँ ॥
छह अक्षर का मंत्र जपूं अरहंत सिद्ध को नमन करूँ ।
अ सि आ उ सा पंचाक्षर का मंत्रजपूँ अघ शमन करूँ ॥
अक्षर चार मंत्र जप लूँ अरहंत देव का ध्यान करूँ ।
अर्हम अक्षर तीन, मंत्र जप स्वपर भेद विज्ञान करूँ ॥
दो अक्षर का "सिद्ध" मंत्र जप सर्व सिद्धियाँ प्रगट करूँ ।
अक्षर एक ॐ ह्री जपकर सब पापों को विघट करूं ॥
सप्ताक्षर का मंत्र "णमो अरहंताणं" का जाप करूँ ।
छह अक्षर का मंत्र "णमो सिद्धाणं" जप भव ताप हरूँ ॥
सप्ताक्षर का मंत्र "णमो आइरियाणं" जप हर्षाऊँ ।
सप्ताक्षर का "णमो उवज्झायाणं" जप कर मुस्काऊँ ॥
नो अक्षर का "मंत्र णमो लोए सव्वसाहूणं" ध्याऊँ ।
"एसो पंच णमोयारो" जप सर्व पाप हर सुख पाऊँ ॥
नव पद या नवकार पांच पद का मैं णमोकार ध्याऊँ ।
एक शतक सत्ताइस अक्षर का चत्तारि पाठ गाऊँ ॥
"चत्तारि मङ्गलम्" श्रेष्ठ मङ्गल है जग में परम प्रधान ।
"अरिहंता मङ्गलम्" पाठ कर गाऊँ निज आतम के गान ॥
"सिद्धामङ्गलम्" "साहू मङ्गलम्" का मैं भाव हृदय भर लूँ ।
"केवलि पण्णत्तो धम्मो मङ्गलम्" स्वधर्म प्राप्त करलूँ ॥

निज स्वभाव चेतन स्वरूप मय ।
पर विभाव अज्ञान रूपमय ॥

"चत्तारि लोगोत्तमा" ही सर्वोत्तम है परम शरण ।
"अरिहंता लोगोत्तमा" ही से होगा भव कष्ट हरण ॥
"सिद्धा लोगोत्तमा" सु "साहू लोगोत्तमा" परम पावन ।
"केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा" मोक्ष साधन ॥
"चत्तारि शरणं पव्वज्जामि" का गूँजे जय जय गान ।
"अरिहंतेशरणं पव्वज्जामि" का हो प्रभु लक्ष्य महान ॥
"सिद्धेशरणं पव्वज्जामि" मोक्ष सिद्धि को मैं पाऊँ ॥
"साहूशरणं पव्वज्जामि" शुद्ध भावना ही भाऊँ ॥
"केवली पण्णत्तो धम्मो शरणं पव्वज्जामि" है ध्येय ।
महा मोक्ष मङ्गल शिवदाता पाँचों परमेष्ठी प्रभु श्रेय ॥
महा मंत्र निःकांक्षित होकर शुद्ध भाव से नित ध्याऊँ ।
पंच परम परमेष्ठी का सम्यक् स्वरूप उर में लाऊँ ॥
णमोकार का मंत्र जपूँ मैं णमोकार का ध्यान करूँ ।
महा मंत्र की महाशक्ति पा नाथ आत्म कल्याण करूँ ॥
अर्हं अर्हं अर्हं जपकर निज शुद्धातम करलूं भान ।
नमः सर्व सिद्धेभ्यः जपकर मोक्ष मार्ग पर करूँ प्रयाण ॥

ॐ ह्रीं श्री पंच नमस्कार मंत्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ।

णमोकार के मंत्र की महिमा अगम अपार ।
भाव सहित जो ध्यावते हो जाते भव पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य– ॐ ह्रीं श्री णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।

निज स्वभाव शिव सुख का दाता ।
पर विभाव निज सुख का घाता ।।

श्री भक्तामर स्तोत्र पूजन

जय जयति जय स्तोत्र भक्तामर परम सुख कारणम् ।
जय ऋषभदेव जिनेन्द्र जय जय जय भवोदधितारणम् ।।
जय वीतराग महान जिनपति विश्ववंद्य महेश्वरम् ।
जय आदि देव सु महादेव सुपूज्य प्रभु परमेश्वरम् ।।
जय ज्ञान सूर्य अनंत गुणपति आदिनाथ जिनेश्वरम् ।
जय मानतुंग मुनीश पूजित प्रथम जिन तीर्थेश्वरम् ।।
मैं भाव पूर्वक करूँ पूजन स्वपद ज्ञान प्रकाशकम् ।
दो भेद ज्ञान महान अनुपम अष्ट कर्म विनाशनम् ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भवभव वषट् ।

जन्म मरण भयहारी स्वामी, आदि नाथ प्रभु को वंदन ।
त्रिविध दोष ज्वर हरने को, चरणों में जल करता अर्पण ।।
ऋषभदेव के चरण कमल में, मन वच काया सहित प्रणाम ।
भक्तामर स्तोत्र पाठ कर, मैं पाऊँ निज में विश्राम ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप विनाशक स्वामी आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
भवदावानल शीतल करने चंदन करता हूं अर्पण ।। ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।

भव समुद्र उद्धारक स्वामी आदिनाथ प्रभु को वन्दन ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु अक्षत करता हूं अर्पण ।। ऋषभ०

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि०।

ज्ञान ज्योति क्रीड़ा करती है प्रति पल केवलज्ञान से ।
ज्ञान कला विकसित होती है सहज स्वयं के भान से ।।

काम व्यथा संहारक स्वामी आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
मैं कंदर्प दर्प हरने को सहज पुष्प करता अर्पण ।। ऋषभ०
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

क्षुधा रोग के नाशक स्वामी आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
अब अनादि की क्षुधा मिटाऊं प्रभु नैवेद्य करूँ अर्पण ।। ऋषभ०
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनायनैवेद्यम् नि०।

स्वपर प्रकाशक ज्ञान ज्योतिमय आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने दीपक चरणों में अर्पण ।। ऋषभ०
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

कर्म व्यथा के नाशक स्वामी आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
अष्ट कर्म बिध्वंस हेतु भावों की धूप करूँ अर्पण ।। ऋषभ०
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।

नित्य निरंजन महामोक्ष पति आदिनाथ प्रभु को वंदन ।
मोक्ष सुफल पाने को स्वामी चरणों में फल है अर्पण ।। ऋषभ०
ॐ ह्री श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु दीपक सुधूप फल अर्घ सुमन ।
पद अनर्घ पाने को स्वामी चरणों में सादर अर्पण ।।
ऋषभदेवके चरण कमल में मन वच काया सहित प्रणाम ।
भक्तामर स्तोत्र पाठ कर मैं पाऊँ निज में विश्राम ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

✡ जयमाला ✡

वृषभांकित जिनराज पद वंदू बारम्बार ।
वृषभदेव परमात्मा परम सौख्य आधार ।।

रागद्वेष कर्मों का रस है यह तो मेरा नहीं स्वरूप ।
ज्ञान मात्र शुद्धोपयोग ही एक मात्र है मेरा रूप ।।

भक्तामर की यशो पताका फहराते हैं साधु भक्त जन ।
भाव पूर्वक पाठ मात्र से कट जाते सब संकट तत्क्षण ।।
भक्तामर रच मानतुंग ने निज परका कल्याण किया था ।
अड़तालीस काव्य रचना कर शुभ अमरत्व प्रदान किया था ।।
नृपकारा से मुक्त हुए मुनि श्रुत उपदेश महान दिया था ।
आदिनाथ की स्तुति करके निज स्वरूप का ध्यान किया था ।।
मैं भी प्रभु की महिमा गाकर भाव पुष्प करता हूँ अर्पण ।
त्रैलोक्येश्वर महादेव जिन आदिदेव को सविनय वन्दन ।।
नाभिराय मरुदेवी के सुत आदिनाथ तीर्थङ्कर नामी ।
आज आपकी शरण प्राप्त कर अति हर्षित हूँ अन्तर्यामी ।।
मैंने कष्ट अनंतानंत उठाये हैं अनादि से स्वामी ।
आत्म ज्ञान बिन भटक रहा हूँ चारो गति में त्रिभुवननामी ।।
नर सुर नारक पशुपर्यायों में प्रभु मैंने अति दुख पाये ।
जड़ पुदगल तन अपना माना निज चैतन्य गीत ना गाये ।।
कभी नर्क में कभी स्वर्ग में कभी निगोद आदि में भटका ।
सुखाभास की आकांक्षा ले चार कषायों में ही अटका ।।
एक बार भी कभी भूलकर निज स्वरूप का किया न दर्शन ।
द्रव्यलिंग भी धारा मैंने किन्तु न भाया आत्म चिन्तवन ।।
आज सुअवसर मिला भाग्य से भक्तामर का पाठ सुन लिया ।
शब्द अर्थ भावों को जाना निज चैतन्य स्वरूप गुन लिया ।।
अब मुझको विश्वास हो गया भव का अन्त निकट आया है ।
भक्तामर का भाव हृदय में मेरे नाथ उमड़ आया है ।।
भेद ज्ञान की निधि पाऊँगा स्वपर भेद विज्ञान करूँगा ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा अष्ट कर्म अवसान करूँगा ।।

जब तक दृष्टि निमित्तों पर है भव दुख कभी न जाएगा।
उपादान जाग्रत होते ही सब संकट टल जाएगा ॥

इस पूजन का सम्यक् फल प्रभु मुझको आप प्रदान करो अब।
केवल ज्ञान सूर्य की पावन किरणों का प्रभु दान करो अब ॥
क्रोध मान माया लोभादिक सर्व कषाय विनष्ट करूँ मैं।
वीतराग निज पद प्रगटाउँ भव बंधन के कष्ट हरूँ मैं ॥
स्वर्गादिक की नहीं कामना भौतिक सुख से नहीं प्रयोजन।
एक मात्र ज्ञायक स्वभाव निज काही आश्रय लूँ हे भगवन ॥
विषय भोग की अभिलाषाएँ पलक मारते चूर करूँ मैं।
शाश्वत निज अखंड पद पाऊँ पर भावों को दूर करूँ मैं ॥
मिथ्यात्वादिक पाप नष्ट कर सम्यक् दर्शन को प्रगटाऊँ ॥
सम्यक् ज्ञान चरित्र शक्ति से घाति अघाति कर्म विघटाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ देव जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यम् नि०।

भक्तामर स्तोत्र की महिमा अगम अपार।
भाव भासना जो करें हो जाएं भव पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः

श्री नव देव पूजन

श्री अरहंत सिद्ध, आचार्योपाध्याय, मुनि, साधु महान।
जिनवाणी, जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, जिनधर्म, देव नव जान ॥
ये नवदेव परम हितकारी रत्नत्रय के दाता हैं।
विघ्न विनाशक संकटहर्त्ता तीन लोक विख्याता हैं ॥
जल फलादि वसु द्रव्य सजाकर हे प्रभु नित्य करूँ पूजन।
मङ्गलोत्तम शरण प्राप्त कर मैं पाऊं सम्यक् दर्शन ॥

दुर्जय ज्ञान धनुर्धर चेतन जब संवर को अपनाता ।
समरांगण में आए मत्त आश्रव पर यह जय पाता ॥

आत्म तत्त्व का अवलंबन ले पूर्ण अतीन्द्रिय सुख पाऊँ ।
नवदेवों की पूजन करके फिर न लौट भव में आऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्व साधु, जिनवाणी, जिन मंदिर, जिन प्रतिमा, जिनधर्म नवदेव अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनवाणी,जिनमंदिर जिन प्रतिमा, जिनधर्म नवदेव अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्व साधु, जिनवाणी,जिनमंदिर निज प्रतिमा, निजधर्म नवदेव अत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

परम भाव जल की धारा से जन्म मरण का नाश करूँ ।
मिथ्यातम का गर्व चूर कर रवि सम्यक्त्व प्रकाश करूँ ॥
पंच परम परमेष्ठी जिनश्रुत जिनगृह जिनप्रतिमा जिनधर्म ।
नवदेवों की पूजन करके मैं बन जाऊँ प्रभु निष्कर्म ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय जिनवाणी जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिन धर्म नव देवोभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनायजलम् निर्वपामीतिस्वाहा।

परम भाव चंदन के बल से भव आतप का नाश करूँ ।
अन्धकार अज्ञान मिटाऊँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी, जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० ।

परम भाव अक्षत के द्वारा अक्षय पद को प्राप्त करूँ ।
मोह क्षोभ से रहित बनूँ मै सम्यक् चारित व्याप्त करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नव देवेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।

परम भाव पुष्पों से दुर्धर काम भाव को नाश करूँ ।
तप संयम की महाशक्ति से निर्मल आत्म प्रकाश करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।

परम ब्रम्ह हूँ परम तत्त्व हूँ परम ज्योतिमय परम स्वरूप ।
परम ध्यानमय परम ज्ञानमय परम शांतिमय परम अनूप ॥

परम भाव नैवेद्य प्राप्त कर क्षुधा व्याधि का ह्रास करूँ ।
पंचाचार आचरण करके परम तृप्त शिव वास करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

परम भाव मय दिव्य ज्योति से पूर्ण मोह का नाश करूँ ।
पाप पुण्य आश्रव विनाश कर केवल ज्ञान प्रकाश करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु, जिनवाणी, जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि०।

परम भाव मय शुक्ल ध्यान से अष्ट कर्म का नाश करूँ ।
नित्य निरंजन शिव पद पाऊँ सिद्ध स्वरूप विकास करूँ ॥पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी, जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।

परम भाव संपत्ति प्राप्त कर मोक्ष भवन में वास करूँ ।
रत्नत्रय फल मुक्ति शिला पर सादि अनंत निवास करूँ ॥ पंच०

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी, जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि० ।

परम भाव के अर्घ चढ़ाऊँ उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ ।
भेद ज्ञान रवि हृदय जगाकर शाश्वत जीवन प्राप्त करूँ ॥
पंच परम परमेष्ठी जिन श्रुत जिनगृह जिन प्रतिमा जिन धर्म ।
नवदेवों की पूजन करके मैं बन जाऊँ प्रभु निष्कर्म ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी, जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

❋ जयमाला ❋

नवदेवों को नमन कर करूँ आत्म कल्याण ।
शाश्वत सुख की प्राप्ति हित करूँ भेद विज्ञान ॥

समकित रूपी जल प्रवाह जब बहता है अभ्यंतर में।
कर्मधूल आवरण नहीं रहता है लेश मात्र उर में।।

जय जय पंच परम परमेष्ठी जिनवाणी जिन धर्म महान।
जिन मंदिर जिन प्रतिमा नवदेवों को नित वन्दू धर ध्यान।।
श्री अरहंत देव मङ्गलमय मोक्ष मार्ग के नेता हैं।
सकल ज्ञेय के ज्ञातादृष्टा कर्म शिखर के भेत्ता हैं।।
हैं लोकाग्र शिखर पर सुस्थित सिद्ध शिला पर सिद्ध अनंत।
अष्ट कर्म रज से विहीन प्रभु सकल सिद्धि दाता भगवंत।।
हैं छत्तीस गुणों से शोभित श्री आचार्य देव भगवान।
चार संघ के नायक ऋषिवर करते सबको शाँति प्रदान।।
ग्यारह अङ्ग पूर्व चौदह के ज्ञाता उपाध्याय गुणवंत।
जिन आगम का पठन और पाठन करते हैं महिमा वंत।।
अट्ठाईस मूल गुण पालक ऋषि मुनि साधु परम गुणवान।
मोक्ष मार्ग के पथिक श्रमण करते जीवों को करुणादान।।
स्यादवादमय द्वादशांग जिनवाणी है जग कल्याणी।
जो भी शरण प्राप्त करता है हो जाता केवल ज्ञानी।।
जिन मंदिरजिन समवशरणसम इसकी महिमा अपरम्पार।
गंध कुटी में नाथ विराजे हैं अरहँत देव साकार।।
जिन प्रतिमा अरहंतों की नासाग्र दृष्टि निज ध्यानमयी।
जिन दर्शन से निज दर्शन हो जाता तत्क्षण ज्ञानमयी।।
श्री जिन धर्म महा मङ्गलमय जीव मात्र को सुखदाता।
इसकी छाया में जो आता हो जाता दृष्टा ज्ञाता।।
ये नवदेव परम उपकारी वीतरागता के सागर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित से भर देते सबकी गागर।।
मुझको भी रत्नत्रय निधि दो मैं कर्मों का भार हरूँ।
क्षीण मोह जितराग जितेन्द्रिय हो भव सागर पार करूँ।।

जाग जाग रे जाग अभी तू निज आतम का करले भान।
धर्म नहीं दुखरूप धर्म तो परमानंद स्वरूप महान ॥

सदासदा नवदेव शरण पा मैं अपना कल्याण करूं।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊं हे प्रभु पूजन ध्यान करूं॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्ध आचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनवाणी जिनमंदिर जिन प्रतिमा जिनधर्म नवदेवेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घम् नि० ।

इत्याशीर्वादः

मंगलोत्तम शरण हैं नव देवता महान।
भाव पूर्ण जिन भक्ति से होता दुख अवसान॥

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री जिन नवदेवताय नमः।

— ✡ —

श्री नित्य नियम पूजन

जय जय देव शास्त्र गुरु तीनों, मङ्गलदाता प्रभु वंदन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु के चरणों को मैं करूं नमन॥
विद्यमान तीर्थङ्कर बीस विदेह क्षेत्र के करूं नमन।
तीन लोक के कृत्रिम अकीर्तम जिन चैत्यालय को वंदन॥
परमोत्कृष्ट अनंत गुण सहित सर्व सिद्ध प्रभु को वन्दन।
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर तीर्थङ्कर सब करूं नमन॥
निज भावों की अष्ट द्रव्य ले सविनय नाथ करूं पूजन।
श्रद्धा पूर्वक भक्तिभाव से करता हूं जिन पद अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु पुष्पांजलि क्षिपामि।

अनंतानुबंधी कषाय का नाश करूं दो यह आशीष।
मोह रूप मिथ्यात्व नष्ट कर दूं मैं समकित जल से ईश॥
देव शास्त्र गुरु पांचों परमेष्ठी प्रभु विद्यमान जिन बीस।
कृत्रिम अकीर्तम जिनगृह वन्दूं सर्व सिद्ध जिनवर चौबीस॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मंडलमें उड़जाऊँ ।
तीन लोक के तीर्थ क्षेत्र सब वंदन करआऊँ ।।

अप्रत्यख्याना वरणी कषाय का नाश करू तत्काल ।
अविरति हर अणुव्रत लूँ, समकित चंदन से चमके निज भाल ।।देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु भवताप विनाशनाय चन्दनम् नि० ।
मैं कषाय प्रत्यख्यानावरणी हर करू प्रमाद अभाव ।
पंच महाव्रत ले समकित अक्षत से पाऊँ शुद्ध स्वभाव ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।
प्रभु कषाय संज्वलन नाश कर पाऊँ मैं निज में विश्राम ।
समकित पुष्प खिले अन्तर में मैं अरहंत बनूं निष्काम ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।
पाप पुण्य शुभ अशुभ आश्रव का निरोध करलूँ संवर ।
समकित चरु से कर्म निर्जरा कर मैं बंध हरू सत्वर ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।
राग द्वेष सब का अभाव कर नो कषाय का करू विनाश।
सम्यक् ज्ञान दीप से स्वामी पाऊँ केवल ज्ञान प्रकाश ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि० ।
ज्ञानावरणादिक आठों कर्मों का नाश करू भगवंत ।
समकित धूप सुवासित हो उर भव सागर का करदूँ अन्त ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।
गुण स्थान चौदहवां पाकर योग अभाव करू स्वामी ।
समकित का फल महा मोक्ष पद पाऊँ हे अन्तर्यामी ।। देव०
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० ।
बंध हेतु मिथ्यात्व असंयम और प्रमाद कषाय त्रियोग ।
समकित अर्घ सजा अंतर में पाऊँ पद अनर्घ अवियोग ।।
देव शास्त्र गुरु पांचों परमेष्ठी प्रभु विद्यमान जिन बीस ।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनगृह वन्दू सर्व सिद्ध जिनवर चौबीस ।।
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि० ।

कर्म जनित सुख के समूह का जो भी करता है परिहार।
वही भव्य निष्कर्म अवस्था को पाकर होता भव पार॥

☸ जयमाला ☸

जिनवर पद पूजन करूँ नित्य नियम से नाथ।
शुद्धातम से प्रीति कर मैं भी बनूँ सनाथ॥

तीन लोक के सारे प्राणी हैं कषाय आतप से तप्त।
इन्द्रिय विषय रोग से मूर्छित भव सागर दुख से संतप्त॥
इष्ट वियोग अनिष्ट योग से खेद खिन्न जग के प्राणी।
उनको है सम्यक्त्व परम हितकारी औषधि सुखदानी॥
सर्व दुखों की परमौषधि पीते ही होता रोग विनष्ट।
भवनाशक जिन धर्म शरण पाते ही मिट जाता भव कष्ट॥
है मिथ्यात्व असंयम और कषाय पाप की क्रिया विचित्र।
पाप क्रियाओं से निवृत्ति हो तो होता सम्यक् चारित्र॥
घाति कर्म बंधन करने वाली शुभ अशुभ क्रिया सब पाप।
महा पाप मिथ्यात्व सदा ही देता है भव भव संताप॥
इसके नष्ट हुए बिन होता दूर असंयम कभी नहीं।
इसके सम दुखकारी जग में और पाप है कही नहीं॥
मुनिव्रत धारण कर ग्रैवेयक में अहमिन्द्र हुआ बहुबार।
सम्यक् दर्शन बिन भटका प्रभु पाए जग में दुक्ख अपार॥
क्रोधादिक कषाय अनुरंजित हो भव सागर में डूबा।
साता के चक्कर में पड़कर नहीं असाता से ऊबा॥
पाप पुण्य दुखमयी जानकर यदि मैं शुद्ध दृष्टि होता।
नष्ट विभाव भाव कर लेता यदि मैं द्रव्य दृष्टि होता॥
मिथ्यातम के गए बिना प्रभु नहीं असंयम जाता है।
जप तप व्रत पूजन अर्चन से जिय सम्यक्त्व न पाता है॥

सिद्ध दशा को चलो साधने सब सिद्धों को वंदन कर ।
सम्यक् दर्शन की महिमा से आत्म तत्व का दर्शनकर ॥

इसीलिए मैं शरण आपकी आया हूं जिन देव महान ।
सम्यक् दर्शन मुझे प्राप्त हो, पाऊं स्वपर भेदविज्ञान ॥
नित्य नियम पूजन करके प्रभु निज स्वरूप का ज्ञान करूं ।
पर्यायों से दृष्टि हटा, बन द्रव्य दृष्टि निज ध्यान करूं ॥
ॐ ह्रीं श्री सर्व जिन चरणाग्रेषु पूर्णार्घ्यम् नि० ।
नित्य नियम पूजन करूं जिनवर पद उर धार ।
आत्म ज्ञान की शक्ति से हो जाऊं भव पार ॥

卐 इत्याशीर्वादः 卐

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री सर्व जिनेभ्यो नमः ।

—: ✿ :—

श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणक पूजन

चौबीसों जिन के पांचों कल्याणक शुभ मंगलदायी ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष कल्याणक पूजूं सुखदायी ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्म सुपार्श्व भगवंत ।
चंद्र सुविधि शीतलश्रेयाँस जिन वासु पूज्य प्रभु विमल अनंत ॥
धर्म शांति प्रभु कुन्थु अरहजिन मल्लि मुनिसुव्रत नमि गुणवंत ।
नेमि पार्श्व प्रभु महावीर के पांचों मंगल जय जयवंत ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणक समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणक समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणक समूह अत्र मम् सन्निहितो भवभव वषट् ।
शुभ्रनीर की तीन धार दे जन्म जरा मृतु हरण करूं ।
सम्यक् दर्शन की विभूति पा मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूं ॥
जिन तीर्थङ्कर के बत लाए रत्नत्रय को वरण करूं ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पांचों कल्याणक नमन करूं ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

भवावर्त्त में कमी न भायीं ऐसी भाओ भावना ।
भव अभाव के लिए मात्र निज ज्ञायक को हो साधना ।।

मलयागिर चंदन अर्पित कर भव का आतप हरण करूँ ।
सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर मैं भी मोक्ष मार्ग का ग्रहण करूँ ।।जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्य: संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।
अक्षत से अक्षय पद पाऊँ भव सागर दुख हरण करूँ ।
सम्यक् चारित के प्रभाव से मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।।जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि०।
सुन्दर पुष्प सुगंधित लाकर काम शत्रु मद हरण करूँ ।
सम्यक् तप की महाशक्ति से मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।।जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यः कामबाणो विध्वंसनाय पुष्पम् नि०।
शुभ नैवेद्य भेंट कर स्वामी क्षुधा व्याधि को हरण करूँ ।
शुद्ध ध्यान निज के प्रताप से मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।।जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।
तमका नाशक दीप जलाकर मोह तिमिर को हरण करूँ ।
निज अन्तर आलोकित करके मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।।जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि०।
ध्यान अग्नि में धूप डालकर अष्ट कर्म को हरण करूँ ।
शुक्ल ध्यान की प्राप्ति हेतु मैं मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।। जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् नि०।
शुद्ध भाव फल लेकर स्वामी पाप पुण्य को हरण करूँ ।
परम मोक्ष पद पाने को मैं मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।। जिन०
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि० ।
वसु विधि अर्घ चढ़ाकर मैं अष्टम वसुधा को वरण करूँ ।
निज अनर्घ पद प्राप्ति हेतु मैं मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ ।।

परम शुद्ध निश्चय नय का जो विषय भूत है शुद्धातम।
परम भाव ग्राही द्रव्यार्थिक नयको विषय वस्तु आतम॥

जिन तीर्थङ्कर के बतलाए रत्नत्रय को वरण करूँ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पाँचों कल्याणक नमन करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि०।

श्री पंच कल्याणक

श्री जिन गर्भ कल्याण की महिमा अपरम्पार।
रत्नों की बौछार हो घर घर मङ्गल चार॥
गर्भ पूर्व छह मास जन्म तक नित नूतन मंगल होते।
नव बारह योजन नगरी रच इन्द्र महा हर्षित होते॥
गर्भ दिवस जिन माता को देखते हैं सोलह स्वप्न महान।
बैल, सिंह, माला, लक्ष्मी, गज, रवि, शशि, सिंहासन, छविमान॥
मीन युगल, दो कलश, सरोवर, सुरविमान, नागेन्द्र विमान।
रत्न राशि, निर्धूमअग्नि सागर लहराता अतुल महान॥
स्वप्न फलों को सुन के हर्षित, होता है अनुपम आनँद।
धन्य गर्भ कल्याण, देवियाँ सेवा करती हैं सानंद॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पच कल्याणकेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन जन्म कल्याण की महिमा अपरम्पार।
तीनों लोकों में हुआ प्रभु का जय जयकार॥
जन्म समय तीनों लोकों में होता है आनंद अपार।
सभी जीव अन्तर्मुहूर्त्त को पाते अति साता सुखकार।॥
इन्द्र शची ऐरावत पर चढ़ धूम मचाते आते हैं।
जिन प्रभु का अभिषेक मेरु पर्वत के शिखर रचाते हैं॥
क्षीरोदधि से एक सहस्र अरु अष्ट कलश सुर भरते हैं।
स्वर्ण कलश शुभ इन्द्र भाव से प्रभु मस्तक पर करते हैं॥

ज्ञान चक्षु को खोल देख तेरा स्वभाव दुख रूप नहीं।
तीन काल में एक समय भी राग भाव सुख रूप नहीं ।।

मात पिता को सौंप इन्द्र करता है नाटक नृत्य महान।
परम जन्म कल्याण महोत्सव पर होता है जय जयगान ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्म कल्याणकेभ्यो अर्घम् नि०।

श्री जिन तप कल्याण की महिमा अपरम्पार।
तप संयम की हो रही पावन जय जयकार ।।

कुछ निमित पा जब प्रभु के मन में आता वैराग्य अपार।
भव्य भावना द्वादश भाते तजते राजपाट संसार ।।
लौकान्तिक ब्रह्मर्षि एक भव अवतारी होते पुलकित।
प्रभु वैराग्य सुदृढ़ करने को कहते धन्य धन्य हर्षित ।।
इन्द्रादिक प्रभु को शिविका पर ले जाते बाहर वन में।
महाव्रती हो केश लोंचकर लय होते निज चिंतन में ।।
इन केशों को इन्द्र प्रवाहित क्षीरोदधि में करता है।
तप कल्याण महोत्सव तप की विमल भावना भरता है ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र तप कल्याणकेभ्यो अर्घम् नि०।

परम ज्ञान कल्याण की महिमा अपरम्पार।
स्वपद प्रकाशक आतम में झलक रहा संसार ।।

क्षपक श्रेणि चढ़ शुक्ल ध्यान से गुणस्थान बारहवां पा।
चार घातिया कर्म नाश कर गुण स्थान तेरहवाँ पा ।।
केवल ज्ञान प्रगट होते ही होती परमौदारिक देह।
अष्टा दश दोषों से विरहित छयालीस गुण मंडित नेह ।।
समवशरण की रचना होती होते अतिशय देवोपम।
शत इन्द्रों के द्वारा वंदित प्रभु की छवि अति सुन्दरतम ।।
दिव्यध्वनि खिरती है सब जीवों का होता है कल्याण।
परम ज्ञान कल्याण महोत्सव पर जिन प्रभु का ही यश गान ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र ज्ञान कल्याणकेभ्यो अर्घम् नि०।

जब तक नहीं स्वभाव भाव है तब तक है संयोगी भाव ।
जब संयोगी भाव त्याग देगा तो होगा शुद्ध स्वभाव ॥

परम मोक्ष कल्याण की महिमा अपरम्पार ।
अष्ट कर्म को नाश कर नाथ हुए भव पार ॥
गुण स्थान चौदहवां पाकर योगों का निरोध करते ।
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा कर्म अघातिया भी हरते ॥
अ, इ, उ, ऋ, लृ उच्चारण में लगता है जितना काल ।
तीन लोक के शीष विराजित हो जाते हैं प्रभु तत्काल ॥
तन कपूर वत उड़ जाता है नख अरु केश शेष रहते ।
मायामयी शरीर देव रच अन्तिम क्रिया अग्नि दहते ॥
मंगल गीत नृत्य वाद्यों की ध्वनि से होता हर्ष अपार ।
भव्य मोक्ष कल्याण मनाते सब जीवों को मङ्गलकार ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र मोक्षफल कल्याणकेभ्यो अर्घम् नि० ।

☼ जयमाला ☼

जिनवर पंच कल्याण की महिमा अगम अपार ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान सह महा मोक्ष शिवकार ॥
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर के मंगल कल्याण महान ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पाँचों कल्याणक महिमावान ॥
श्री पंच कल्याणक पूजन करके निज वैभव पाऊँ ।
सोलह कारण भव्य भावना मैं भी हे जिनवर भाऊँ ॥
जिन ध्वनि सुनकर मेरेमन में रहा नहीं प्रभु भय का लेश ।
पूर्ण शुद्ध ज्ञायक स्वरूप मय एक मात्र है उज्ज्वल वेश ॥
संयोगी भावों के कारण भटक रहा भव सागर में ।
जिन प्रभु का उपदेश सुना पर झिला नहीं निज गागर में ॥
अवसर आज अपूर्व मिल गया प्रभु चरणों की पूजन का ।
सम्यक् दर्शन आज मिला है फल पाया नर जीवन का ॥

ज्ञान चक्षुओं को खोलो अब देखो निज चैतन्य निधान।
देह और वाणी मन से भी पार विराजित निज भगवान।

हे प्रभु मुझे मार्ग दर्शन दो अब मैं आगे बढ़ जाऊँ।
अणुव्रत धार महाव्रत धारूँ गुण स्थान भी चढ़ जाऊँ॥
परम पंच कल्याण विभूषित जिन प्रभु की महिमा गाऊँ।
घाति अघाति कर्म सब क्षय कर शाश्वत सिद्ध स्वपद पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र पंच कल्याणकेभ्यो पूर्णार्घम् नि०।

तीर्थङ्कर जिन देव के पूज्य पंच कल्याण।
भाव सहित जो पूजते पाते शांति महान॥

☼ इत्याशीर्वादः ☼

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री जिन पच कल्याणकेभ्यो नमः।

☼☼☼

श्री त्रिकाल चौबीसी पूजन

श्री निर्वाण आदि तीर्थङ्कर भूतकाल के तुम्हें नमन।
श्री वृषभादिक वीर जिनेश्वर वर्तमान के तुम्हें नमन॥
महापद्म अनंत वीर्य तीर्थङ्कर भावी तुम्हें नमन।
भूत भविष्यत् वर्तमान की चौबीसी को करूँ नमन॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबंधी भूत भविष्य वर्तमान जिन तीर्थङ्कर समूह अत्रअवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्री भूत भविष्य वर्तमान जिन तीर्थङ्कर समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं भूत भविष्य, वर्तमान जिन तीर्थङ्कर समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

सात तत्त्व श्रद्धा के जल से मिथ्या मल को दूर करूँ।
जन्म जरा भय मरण नाश हित पर विभाव चकचूर करूँ॥

उषा काल में प्रात समय निज का चितन करलो चेतन ।
घड़ी दो घड़ी जितना भी हो तत्व मनन करलो चेतन ॥

भूत भविष्यत् वर्त्तमान की चौबीसी को नमन करूं ।
क्रोध लोभ मद माया हरकर मोह क्षोभ को शमन करूं ॥

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नव पदार्थ को ज्यों का त्यों लख वस्तु तत्व पहचान करूं ।
भव आताप नशाऊं मैं निज गुण चंदन बहुमान करूं ॥ भूत०

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

षट् द्रव्यों से पूर्ण विश्व में आत्म द्रव्य का ज्ञान करूं ।
अक्षय पद पाने को अक्षत गुण से निज कल्याण करूं ॥ भूत०

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जानूं मैं पंचास्ति काय को पंच महाव्रत शील धरूं ।
काम व्याधि का नाश करूं निज आत्म पुष्प की सुरभि वरूं ॥ भूत०

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध भाव नैवेद्य ग्रहण कर क्षुधा रोग को विजय करूं ।
तीन लोक चौदह राजू ऊंचे में मोहित अब न फिरूं ॥ भूत०

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान दीप की विमल ज्योति से मोह तिमिर क्षय कर मानूं ।
त्रिकालवर्त्ती सर्व द्रव्य गुण पर्यायें युगपत जानूं ॥ भूत०

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीर्थङ्करेभ्यो मोहान्धकारविनाशनायदीपनि० ।

षट् लेश्या के भाव जानकर षट कायक रक्षा पालूं ।
शुक्ल ध्यान की शुद्ध धूप से अष्ट कर्म क्षय कर डालूं ॥

ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीर्थङ्करेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम् नि० ।

तू अनंत धर्मों का पिंड अखंडपूर्ण परमातम है।
स्वयं सिद्ध भगवान आतमा सदा शुद्ध सिद्धातम है ॥

पंच समिति त्रय गुप्ति पंच इन्द्रिय निरोध व्रत पंचाचार।
अट्ठाईस मूल गुण पालूं पंच लब्धि फल मोक्ष अपार ॥ भूत०
ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीर्थङ्करेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि०।
छयालीस गुण सहित दोष अष्टादश रहित बनूं अरहंत।
गुण अनंत सिद्धों के पाकर लूं अनर्घ पद हे भगवंत ॥ भूत०
ॐ ह्रीं भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीर्थङ्करेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि०।
भूत भविष्यत् वर्त्तमान की चौबीसी को नमन करूं।
क्रोध लोभ मद माया हरकर मोह क्षोभ को शमन करूं ॥
ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबंधी भूतकाल चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घम् नि०।

श्री भूतकाल चौबीसी

जय निर्वाण, जयति सागर, जय महासाधु, जय विमल, प्रभो।
जय शुद्धाभ, देव जय श्रीधर, श्री दत्त, सिद्धाभ, विभो ॥
जयति अमल प्रभ, जय उद्धार, देव जय अग्नि देव संयम।
जय शिवगण, पुष्पांजलि, जय उत्साह, जयति परमेश्वर नम ॥
जय ज्ञानेश्वर, जय विमलेश्वर, जयति यशोधर, प्रभु जय जय।
जयति कृष्णमति, जयति ज्ञानमति, जयति शुद्धमति जय जय जय ॥
जय श्रीभद्र, अनंतवीर्य जय भूतकाल चौबीसी जय।
जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र के जिन तीर्थङ्कर की जय जय ॥
ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबंधी भूतकाल चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घम् नि०।

श्री वर्त्तमान काल चौबीसी

ऋषभदेव, जय अजितनाथ, प्रभु संभव स्वामी, अभिनंदन।
सुमतिनाथ, जय जयति पद्मप्रभ, जय सुपार्श्व, चंदा प्रभु जिन ॥
पुष्पदंत, शीतल, जिन स्वामी जय श्रेयांस नाथ भगवान।
वासुपूज्य, प्रभु विमल, अनंत, सु धर्मनाथ, जिन शांति महान ॥

दृष्टि विकार याकि भेद को कभी नहीं करती स्वीकार।
किन्तु अभेद अखंड द्रव्य निज ध्रुव को ही करती स्वीकार।

कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लि, प्रभु मुनिसुव्रत, नमिनाथ, जिनेश।
नेमिनाथ, प्रभु पार्श्वनाथ, प्रभु महावीर, प्रभु महा महेश॥
पूज्य पंच कल्याण विभूषित वर्त्तमान चौबीसी जय।
जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र के तीर्थङ्कर प्रभु को जय जय॥
ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबंधी वर्त्तमान चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घम् नि०।

श्री भविष्यकाल चौबीसी

जय प्रभु महापद्म सुरप्रभ, जय सुप्रभ, जयति स्वयंप्रभ, नाथ।
सर्वायुध, जयदेव, उदयप्रभ, प्रभादेव, जय उदंक नाथ॥
प्रश्नकीर्त्ति, जयकीर्त्ति जयति जय पूर्णबुद्धि, निःकषाय, जिनेश।
जयति विमल प्रभ, जयति बहुल प्रभ, निर्मल, चित्र गुप्ति, परमेश॥
जयति समाधि गुप्ति, जय स्वयंभू, जय कंदर्प, देव जयनाथ।
जयति विमल, जय दिव्यवाद, जय जयति अनंतवीर्य, जगनाथ॥
जयति भविष्यकाल की श्री जिन चौबीसी की जय जय जय।
जंबूद्वीप सु भरत क्षेत्र के तीर्थङ्कर प्रभु को जय जय॥
ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र संबंधी भविष्यकाल चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घम् नि०

☼ जयमाला ☼

तीन काल त्रय चौबीसी के नमूं बहात्तर तीर्थङ्कर।
विनय भक्ति से श्रद्धापूर्वक पाऊँ निज पद प्रभु सत्वर॥
मैंने काल अनादि गंवाया पर पदार्थ में रच पचकर।
पर भावों में मग्न रहा मैं निज भावों से बच बचकर॥
इसीलिए चारों गतियों के कष्ट अनंत सहे मैंने।
धर्म मार्ग पर दृष्टि न डाली कर्म कुपंथ गहे मैंने॥
आज पुण्य संयोग मिला प्रभु शरण आपकी मैं आया।
भव भव के अघ नष्ट हो गए मानों चिंतामणि पाया॥

जो वीत गई सो बीत गई जो शेष रही उसको संभाल ।
भव भोग देह से हो उदास पाले सम्यक्त्व परम विशाल ॥

हे प्रभु मुझको विमल ज्ञान दो सम्यक् पथ पर आ जाऊँ ।
रत्नत्रय की धर्मनाव चढ़ भव सागर से तर जाऊँ ॥
सम्यक् दर्शन अष्ट अंगसह अष्ट भेद सह सम्यक् ज्ञान ।
तेरह विध चारित्र धारलूं द्वादश तप भावना प्रधान ॥
हे जिनवर आशीर्वाद दो निज स्वरूप में रमजाऊँ ।
निज स्वभाव अवलंबन द्वारा शाश्वत निज पद प्रगटाऊँ ॥

ॐ ह्री भूत, भविष्य, वर्त्तमान जिन तीर्थङ्करेभ्यो पूर्णार्घ्यंम् नि० ।

तीन काल की त्रय चौबीसी की महिमा है अपरम्पार ।
मन वच तन जो ध्यान लगाते वे हो जाते भव से पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री भूत भविष्य वर्त्तमान कालीन तीर्थङ्करेभ्यो नमः।

— ❀ —

श्री इन्द्रध्वज पूजन

मध्य लोक में चार शतक अट्ठावन जिन चैत्यालय हैं ।
तेरह द्वीपों में अकीर्त्तम पावन पूज्य जिनालय हैं ॥
सर्व इन्द्र, इन्द्रध्वज पूजन करते बहु वैभव के साथ ।
हर मंदिर पर ध्वजा चढ़ाते झुका त्रियोग पूर्वक माथ ॥
मै भी अष्ट द्रव्य ले स्वामी भक्ति सहित करता पूजन ।
निज भावों की ध्वजा चढ़ाऊँ, मिटे पंच प्रत्यावर्त्तन ॥

ॐ ह्रीं मध्य लोक तेरहद्वीप संबधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनविम्ब समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरह द्वीप सबंधीं चार सो अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनविम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्री मध्यलोक तेरह द्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनविम्ब समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

पर परिणति का बहिष्कार कर निज परिणति का स्वागतकर।
ज्ञान ऊर्मियाँ जगा हृदय में निश्चय पंच महाव्रत धर ।।

रत्न जड़ित कंचन झारी में क्षीरोदधि का जल लाऊँ।
जन्म मरण भव रोग नशाऊँ निज स्वभाव में रम जाऊँ ।।
तेरह द्वीप चार सौ अट्ठावन जिन चैत्यालय वंदूँ।
इन्द्रध्वज पूजन करके प्रभु शुद्धातम को अभिनंदूँ ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरह द्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनबिम्बेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि० स्वाहा।

मलयागिरि का बावन चंदन रजत कटोरी में लाऊं।
भव बाधा आताप नाश हित निज स्वभाव में रमजाऊँ ।। तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिन बिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि० स्वाहा।

उत्तम उज्ज्वल धवल अखंडित तंदुल चरणों में लाऊँ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु मैं निज स्वभाव में रमजाऊँ ।। तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चारसौ अट्टावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनबिम्बेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० स्वाहा।

महा सुगंधित शोभनीय बहु पीत पुष्प लेकर आऊँ।
काम भाव पर जय पाने को निज स्वभाव में रमजाऊँ ।। तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिन बिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० स्वाहा।

विविध भांति के भाव पूर्ण नैवेद्य रम्य लेकर आऊँ।
क्षुधा रोग का दोष मिटाने निज स्वभाव में रम जाऊँ ।। तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि० स्वाहा।

मोह तिमिर अज्ञान नाश करने को ज्ञान द्वीप लाऊँ।
मैं अनादि मिथ्यात्व नष्ट कर निज स्वभाव में रम जाऊँ ।। तेरह०

ॐ ह्रीं मध्य लोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।

क्षण क्षण क्यों भाव मरण करता मिथ्यात्व मोह के चक्कर में।
दिनरात भयंकर दुख पाता फिर भी रहता है पर घर में ॥

प्रकृति एक सौ अड़तालीस कर्म की धूप बना लाऊँ।
अष्ट कर्म अरि क्षय करने को निज स्वभाव में रम जाऊँ ॥तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिन बिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम् नि० स्वाहा।

राग द्वेष परिणति अभाव कर निज परिणति के फल पाऊँ।
भव्य मोक्ष कल्याणक पाने निज स्वभाव में रमजाऊँ ॥ तेरह०

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिन बिम्बेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० स्वाहा।

द्रव्य कर्म नो कर्म भाव कर्मों को जीत अर्घ लाऊँ।
देह मुक्त निज पद अनर्घ हित निज स्वभाव में रम जाऊँ॥
तेरह द्वीप चार सौ अट्ठावन जिन चैत्यालय वंदूं।
इन्द्रध्वज पूजन करके मैं शुद्धातम को अभिनंदूं॥

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप संबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वन जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् नि० स्वाहा।

(जयमाला)

तेरहद्वीप महान के श्री जिन बिम्ब महान।
इन्द्रध्वज पूजन करूँ पाऊँ सुख निर्वाण॥

मेरु सुदर्शन, विजय, अचल, मंदिर, विद्युन्माली अभिराम।
भद्रशाल, सौमनस, पांडुक, नंदनवन शोभित सुललाम॥
ढाइद्वीप में पंचमेरु के वंदू अस्सी चैत्यालय।
विजयारध के एक शतक सत्तर वंदू मैं जिन आलय॥
जंबू वृक्ष पाँच मैं वंदू शाल्मलि तरु के पांच महान।
मानुषोत्तर चार और इष्वाकारों के चार प्रधान॥

निज का अभिनन्दन करते ही मिथ्यात्व मूल से हिलता है ।
निज प्रभु का वंदन करते ही आनंद अतीन्द्रिय मिलता है ।।

वक्षारों के अस्सी वंदूं गजदंतों के वंदूं बीस ।
तीस कुलाचल के मैं वंदूं श्रद्धा भाव सहित जगदीश ।।
मनुज लोक के चार शतक मैं दो कम चैत्यालय वंदू ।
ढाई द्वीप से आगे के द्वीपों में साठ भवन वंदूं ।।
इकशत त्रेशठ कोटिलाख चौरासी योजन नंदीश्वर ।
अष्टम द्वीप दिशा चारों में हैं कुल बावन जिन मंदिर ।।
चारों दिशि में अंजनगिरि, दधिमुख, रतिकर, पर्वत सुन्दर ।
देव सुरेन्द्र सदा पूजन वंदन करने आते सुखकर ।।
कुन्डल गिरि है द्वीप ग्यारवां चार चैत्यालय बन्दूं ।
द्वीप रुचकवर तेरहवें के चार जिनालय मैं वन्दूं ।।
मध्यलोक तेरहद्वीपों में चार शतक अट्ठावन गृह ।
एक एक में एक शतक अरु आठ आठ प्रतिमा विग्रह ।।
अष्ट प्रतिहार्यों से शोभित रतनमयी जिन विम्ब प्रवर ।
अष्ट अष्ट मंगल द्रव्यों से हैं शोभायमान मनहर ।।
उनन्चास सहस्र चार सौ चौंसठ जिन प्रतिमा पावन ।
सभी अकोर्तम हैं अनादि हैं परम पूज्य अति मन भावन ।।
एक शतक अरु अर्धशतक योजन लंबे चौड़े जिनधाम ।
पौन शतक योजन ऊँचे हैं भव्य गगनचुंबी सुललाम ।।
उत्तम से आधे मध्यम इनसे आधे जघन्य विस्तार ।
इन्द्र चढ़ाते ध्वजा सुपूजन इन्द्रध्वज करते सुखकार ।।
उच्च शिखर पर दश चिन्हों के ध्वज फहराते हैं हर्षित ।
अष्ट द्रव्य देवोपम चरण चढ़ाते हैं कर मस्तक नत ।।
माला,सिंह,कमल,गज, अंकुश,गरुड़,मयूर,वृषभ के चित्र ।
चकवा चकवी, हंस चिन्ह शोभित बहुरंगी ध्वजा पवित्र ।।

निज निराकार से जुड़ जाओ साकार रूप का छोड़ ध्यान ।
आनंद अतीन्द्रिय सागर में बहते जाओ ले भेद ज्ञान ।।

मेरु मंदिरों पर माला का चिन्ह ध्वजाओं में होता ।
विजयारध की सर्वध्वजाओं में तो वृषभ चिन्ह होता ।।
जंबूशाल्मलितरु के ध्वज पर अंकुश चिन्ह सरल होते ।
मानुषोत्तर इष्वाकारों के ध्वज गज शोभित होते ।।
वक्षारों के जिनमंदिर पर गरुड़ चिन्ह के ध्वज होते ।
गजदंतों के चैत्यालय पर सिंह विभूषित ध्वाज होते ।।
सर्व कुलाचल के जिनगृह पर कमल चिन्ह के ध्वज होते।
नंदीश्वर में चकवा चकवी चिन्ह सुशोभित ध्वज होते ।।
कुन्डलवर गिरि में मयूर के चिन्ह विभूषित ध्वज होते ।
द्वीप रुचकवर गिरि मंदिर पर हंस चिन्ह के ध्वज होते ।।
महाध्वजा अरु क्षुद्र ध्वजाएँ पंचवर्ण की होती हैं ।
जिन पूजन करने वालों के सर्व पाप मल धोती हैं ।।
सुर सुरांगना इन्द्र शची प्रभुगुण गाते हर्षाते हैं ।
नाच नाच कर अरिहंतों के यश की गाथा गाते हैं ।।
गीत नृत्य वाद्यों से झंकृत हो जाते हैं तीनों लोक ।
जय जयकार गूँजता नभ में पुलकित हो जाता सुरलोक ।।
इसीलिए इसको इन्द्रध्वज पूजन कहता है आगम ।
पुण्य उदय जिनका हो वे ही प्रभु पूजन करते अनुपम ।।
इन्द्र महा पूजा रचता है मध्यलोक में हितकारी ।
अब मिथ्यात्व तिमिर हरने की मेरी है प्रभु तैयारी ।।
प्रभु दर्शन से निज आतम का जब दर्शन होगा स्वामी ।
इस पूजन का सम्यक् फल तब मुझको भी होगा स्वामी ।।
एक दिवस ऐसा आएगा शुद्ध भाव ही होगा पास ।
पाप पुण्य पर भाव का नाश कर सिद्ध लोक में होगा वास ।।

आत्म भूत लक्षण सम्यक् दर्शन का स्वपर भेद विज्ञान ।
समकित होते ही होती है निर्विकल्प अनुभूति महान ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक तेरहद्वीप सबंधी चार सौ अट्ठावन जिनालयस्थ शाश्वत जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यंम् नि० स्वाहा ।

भाव सहित जो इन्द्रध्वज की पूजन कर हर्षाते हैं ।
निमिष मात्र में उनके संकट सारे ही मिट जाते हैं ।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री अर्हज्जाताय नमः ।

—:—

श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र पूजन

मध्य लोक में ढाइ द्वीप के सिद्ध क्षेत्रों को वंदन ।
जंबूद्वीप सु भरत क्षेत्र के तीर्थ क्षेत्रों को वंदन ।।
श्री कैलाश आदि निर्वाण भूमियों को मैं करू नमन ।
श्रद्धा भक्ति विनय पूर्वक हर्षित हो करता हूं पूजन ।।
शुद्ध भावना यही हृदय में मैं भी सिद्ध बनूं भगवन ।
रत्नत्रय पथ पर चलकर मैं नाशूं चहुं गति का क्रन्दन ।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भवभव वषट् ।

ज्ञान स्वभावी निर्मल जल का सागर उर में लहराता ।
फिर भी भव सागर भंवरों में जन्म मरण के दुख पाता ।।
श्री सिद्ध क्षेत्रों का दर्शन पूजन वंदन सुखकारी ।
जो स्वभाव का आश्रय लेता उसको है भव दुखहारी ।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शाश्वत भगवान विराजित है आनंद कंद तेरे भीतर ।
पुद्गल तन में अपनत्व मान देखा न कभी निज रूप प्रखर ।।

ज्ञान स्वभावी शीतलता मय चंदन निज में भरा अपार ।
फिर भी भव दावा नल में जल जल दुख पाया बारंबार ।। श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि०।

ज्ञान स्वभावी उज्ज्वल अक्षत पुंज हृदय में भरे अटूट ।
फिर भी अविनाशी अखंड होकर भी पा न सका निज कूट ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी दिव्य सुगंधित पुष्पों का निज में उपवन ।
फिर भी भव माया में पड़ निष्काम न बन पाया भगवन ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी सरस मनोरम तृप्ति पूर्ण नैवेद्य स्वयम् ।
फिर भी क्षुधा रोग से व्याकुल तृष्णा हुई न तिल भर कम ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनायनैवेद्यम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी स्वपर प्रकाशी केवल रवि निज में अनुपम ।
फिर भी अघ मय अंधियारे में भटका मिटा न मिथ्यातम ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी सहजा नंदी विमल धूप से हूं परिपूर्ण ।
फिर भी प्रभो नहीं कर पाया अब तक अष्ट कर्म अरि चूर्ण ।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी शिवफल धारी अविकारी हूँ सिद्ध स्वरूप ।
फिर भी भव अटवी में भटका होकर मैं प्रभु त्रिभुवन का भूप।।श्री०

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि० ।

ज्ञान स्वभावी चिदानंद चैतन्य अनंत गुणों से पूर ।
फिर भी पद अनर्घ ना पाया रहकर निज परिणति से दूर ।।

श्री सिद्ध क्षेत्रों का दर्शन पूजन वंदन सुखकारी ।
जो स्वभाव का आश्रय लेता उसको है भव दुखहारी ।।

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि० ।

विपरीत मान्यताओ में रह मैंने अपार भव दुख पाया ।
मोहो के वंधन में बंदी रहकर न कभी कुछ सुख पाया ।।

☼ जयमाला ☼

तीर्थङ्कर ऋषि आदिमुनि गए जहाँ निर्वाण ।
उन क्षेत्रों को वंद्यकर करूँ आतम कल्याण ।।
जंबू द्वीप घात को खंड अरु पुष्करार्ध में क्षेत्र विदेह ।
पंच भरत अरु पंच ऐरावत तीर्थ क्षेत्र वंदू धरनेह ।।
तीनलोक के सकल तीर्थ निर्वाण क्षेत्र सविनय वंदूँ ।
सिद्ध अनंतानंत विराजित सिद्ध शिला नित प्रतिवंदूँ ।।
अष्टापद कैलाश शिखर पर ऋषभदेव के पद वंदूँ ।
बालि महा बालि मुनि नाग कुमार आदि मुनिवर वंदूँ ।।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर बीस तीर्थङ्कर वंदूँ ।
अजितनाथ संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्म प्रभु को वंदूँ ।।
श्री सुपार्श्व, चंद्रा प्रभु स्वामी, पुष्पदंत, शीतलवंदूँ ।
प्रभु श्रेयाँस, विमल, अनंत जिन, धर्म,शाँति, कुन्थु वंदूँ ।।
अरह, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमिजिन, पार्श्वनाथ प्रभु को वंदूँ ।
मुनि अनंत निर्वाण गए जो, उनके चरणाम्बुज वंदूँ ।।
चंपापुर में वासु पूज्य तीर्थङ्कर को सादर वंदूँ ।
श्री मँदारगिरी से मुक्त हुए मुनियों के पद वंदूँ ।।
श्री गिरनार नेमि प्रभु शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध आदिवंदूँ ।
कोटि बहात्तर सात शतक मुनि मुक्त हुए उनको वंदूँ ।।
पावापुर में महावीर अंतिम तीर्थङ्कर को वंदूँ ।
श्र गुणावा गौतम स्वामी के पद कमलों को वंदूँ ।।
तुंगीगिरि श्री रामचन्द्र,हनुमान गवय, गवाक्ष वंदूँ ।
महानील, सुग्रीव, नील मुनि निन्यानवे कोटि वंदूँ ।।

सिंह विचरता है जिस पथ में उस पर हिरण नहीं जाते ।
सिंह वृत्ति से शूरवीर मुनि मोक्ष मार्ग को अपनाते ।।

शत्रुन्जय पर आठ कोटि मुनियों के चरणाम्बुज वंदूँ ।
भीम युधिष्ठर अर्जुन पाँडव और द्रविड़ राजा वंदूँ ।।
श्री गजपंथ शैल पर मैं बलभद्र सप्त के पद वंदूँ ।
आठ कोटि मुनि मुक्तिगए हैं भाव सहित उनको वंदूँ ।।
सोनागिरि पर नंग अनंग कुमार आदि मुनि को वंदूँ ।
साढ़े पांच कोटि ऋषियों की यह निर्वाण भूमि वंदूँ ।।
रेवातट पर रावण के सुत आदि मुनिश्वर को वंदूँ ।
साढ़े पाँच कोटि मुनियों को सादर सविनय अभिनंदूँ ।।
पावागढ़ पर साढ़े पांच कोटि मुनियों के पद वंदूँ ।
रामचन्द्रसुत लव, मदनाँकुश, लाड़देव के नृप वंदूँ ।।
तारंगा गिरि साढ़े तीन कोटि मुनियों को मैं वंदूँ ।
श्री वरदत्तराय मुनिसागर दत्त आदि पद अभिनंदूँ ।।
श्री सिद्धवर कूट सनत, मघवा चक्री दोनों वंदूँ ।
कामदेव दस आदि ऋषीश्वर साढ़े तीन कोटि वंदूँ ।।
मुक्तागिरि से साढ़े तीन कोटि मुनि मोक्ष गए वंदूँ ।
रावागिरि पर सुवर्ण भद्र आदिक चारों मुनि को वंदूँ ।।
कोटि शिला से एक कोटि मुनि सिद्ध हुये उनको वंदूँ ।
देश कलिंग यशोधर नृप के पाँच शतक सुत मुनि वंदूँ ।।
श्री चूलगिरि इन्द्रजीत अरु कुम्भकरण ऋषिवर वन्दूँ ।
कुन्थलगिरि पर श्री देश भूषण कुलभूषण मुनि वन्दूँ ।।
रेशंदीगिरि वरदत्तादि पंच ऋषियों को मैं वन्दूँ ।
द्रोणागिरि पर गुरुदत्तादिक मुनियों को सविनय वन्दूँ ।।
पंच पहाड़ी राजगृही से मुक्त हुए मुनिवर वन्दूँ ।
चरम केवली जम्बू स्वामी मथुरा मुक्ति भूमि वन्दूँ ।।

धर्मात्मा को जग में अपना केवल शुद्धातम प्रिय है।
निज स्वभाव हो उपादेय है और सभी कुछ अप्रिय है॥

पटना से श्री सेठ सुदर्शन मुक्त हुए उनको वन्दूँ।
कुन्डलपुर से मोक्ष गए श्रीधर स्वामी के पद वन्दूँ॥
पोदनपुर से सिद्ध हुए श्री बाहुबली स्वामी वन्दूँ।
भरत आदि चक्रेश्वर मुनियों की निर्वाण धरा वन्दूँ॥
श्रवण, द्रोण, वैभार, बलाहक, विंध्य, सह्य, पर्वत वन्दूँ।
प्रवर कुन्डली, विपुलाचल, हिमवान क्षेत्रों को वन्दूँ॥
तीर्थङ्कर के सभी गणधरों की निर्वाण भूमि वन्दूँ।
वृषभसेन आदिक गौतम, चौदह सौ उन्सठ ऋषि वन्दूँ॥
कामदेव बलभद्र चक्रि जो मुक्त हुए उनको वन्दूँ।
जल थल नभ से सिद्ध हुए उपसर्ग केवली सब वन्दूँ॥
ज्ञात और अज्ञात सभी निर्वाण भूमियों को वन्दूँ।
भूत भविष्यत् वर्त्तमान की सिद्ध भूमियों को वन्दूँ॥
मन वच काय त्रियोग पूर्वक सर्व सिद्ध भगवन वन्दूँ।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हेतु मैं पाँचों परमेष्ठी वन्दूँ॥
सिद्ध क्षेत्रों के दर्शन कर निज स्वरूप दर्शन करलूँ।
शुद्ध चेतना सिंधु नीर पी मोक्ष लक्ष्मी को वरलूँ॥
सब तीर्थों की यात्रा करके आतम तीर्थ की ओर चलूँ।
अजर अमर अविकल अविनाशी सिद्ध स्वपद की ओर ढलूँ॥
भाव शुभाशुभ का अभाव कर शुद्ध आत्म का ध्यान करूँ।
रागद्वेष का सर्वनाश कर मङ्गलमय निर्वाण वरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घम् नि०।

श्री निर्वाण क्षेत्र का पूजन वंदन जो जन करते हैं।
समकित का पावन वैभव पा मुक्ति वधू को वरते हैं॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री सर्व सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

इन्द्रिय सुख दुखमयी जानकर चलो अतीन्द्रिय सुख के देश।
पूर्ण अतीन्द्रिय शुद्ध आत्मा के भीतर अब करो प्रवेश ॥

महाअर्घ

श्री अरहंत देव को पूजूँ श्री सिद्ध प्रभु को पूजूँ।
आचार्यों के चरणाम्बुज, श्री उपाध्याय के पद पूजूँ॥
सर्व साधु पद पूजूँ, श्री जिन द्वादशांग वाणी पूजूँ।
तीस चौबीसी बीस विदेही, जिनवर सीमन्धर पूजूँ॥
कृत्रिम अकृत्रिम तीन लोक के जिन गृह जिन प्रतिमा पूजूँ।
पंचमेरु नन्दीश्वर पूजूँ तेरह दीप चैत्य पूजूँ॥
सोलह कारण दशलक्षण रत्नत्रय धर्म सदा पूजूँ।
भूत भविष्यत् वर्तमान की त्रय जिन चौबीसी पूजूँ॥
श्री वृषभादिक वीर जिनेश्वर ऋद्धि गणधर स्वामी पूजूँ।
श्री जिनराज सहस्र नाम श्री मोक्ष शास्त्र आदि पूजूँ॥
श्री पंच कल्याणक पूजूँ विविध विधान महा पूजूँ।
गौतम स्वामी कुन्द कुन्द आचार्य सु समयसार पूजूँ॥
चम्पापुर पावापुर गिरनारी कैलाश शिखर पूजूँ।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत जिनवर निर्वाण क्षेत्र पूजूँ॥
तीर्थंकर की जन्म भूमि अतिशय अरु सिद्ध क्षेत्र पूजूँ।
श्री जिन धर्म श्रेष्ठ मङ्गलमय महा अर्घ दे मैं पूजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठी, द्वादशांग जिनवाणी, तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर सीमन्धर स्वामी, कृत्रिम अकृत्रिम जिन मन्दिर, जिन प्रतिमा पंचमेरु, नन्दीश्वर तेरह द्वीप जिनालय, सोलह कारण भावना, दशलक्षण धर्म रत्नत्रय धर्म, भूत भविष्यत वर्तमान चौबीसी, श्री वृषभादिक वीर जिनेश्वर, परम ऋषि, गणधर देव, श्री जिन सहस्र नाम, मोक्ष शास्त्र, श्री जिन पंच कल्याणक गौतम स्वामी, कुन्द कुन्दाचार्य, समयसार, कैलाश,

घर में तेरे आग लगी है शीघ्र बुझा अब तो मतिमंद ।
विषय कषायों की ज्वाला में अब तो जलना करदे बंद ।।

चम्पापुर, गिरनार, पावापुर, सम्मेद शिखर, निर्वाण क्षेत्र, तीर्थङ्कर जन्म क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, सिद्ध क्षेत्र आदिक श्री जिन धर्माय महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

— ☼ —

शान्ति पाठ

इन्द्र नरेन्द्र सुरों से पूजित वृषभादिक श्री वीर महान ।
साधु मुनीश्वर ऋषियो द्वारा वन्दित तीर्थङ्कर विभुवान ।।
गणधर भी स्तुति कर हारे जिनवर महिमा महा महान ।
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित समवशरण में विराजमान ।।
चौतीसों अतिशय से शोभित छयालीस गुण के धारी ।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर श्री अरहंत देव भारी ।।
तरु अशोक सिंहासन भामण्डल सुर पुष्पवृष्टि त्रयक्षत्र ।
चौंसठ चमर दिव्य ध्वनि पावन दुन्दभि देवोपम सर्वत्र ।।
मति श्रुति अवधि ज्ञान के धारी जन्म समय से हे तीर्थेश ।
निज स्वभाव साधन के द्वारा आप हुए सर्वज्ञ जिनेश ।।
केवल ज्ञान लब्धि के धारी परम पूज्य सुख के सागर ।
महा पंच कल्याण विभूषित गुण अनन्त के हो आगर ।।
सकल जगत में पूर्ण शांति हो, शासन हो धार्मिक बलवान् ।
देश राष्ट्र पुर ग्राम लोक में सतत् शान्ति हो हे भगवान् ।।
उचित समय पर वर्षा हो दुर्भिक्ष न चोरी जारी हों ।
सर्व जगत के जीव सुखी हों सभी धर्म के धारी हों ।।
रोग शोक भय व्याधि न होवे ईति भीति का नाम नहीं ।
परम अहिंसा सत्य धर्म हो लेश पाप का काम नहीं ।।

टाल अरे तू पंचाश्रव को पाल अरे तू पंचाचार ।
परम अहिंसा तप संयम धारी बन कर तज विषय विकार ।।

आत्म ज्ञान की महा शक्ति से परम शान्ति सुखकारी हो ।
ज्ञानी ध्यानी महा तपस्वी स्वामी मङ्गलकारी हो ।।
धर्म ध्यान में लीन रहूँ मैं प्रभु के पावन चरण गहूं ।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊँ सदा आपकी शरण लहूं ।।
श्री जिनेन्द्र के धर्म चक्र से प्राणि मात्र का हो कल्याण ।
परम शांति हो परम शाँति हो परम शाँति हो हे भगवान् ।।

शांति धारा

नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप्य

विसर्जन पाठ

जो भी भूल हुई प्रभु मुझसे उसकी क्षमा याचना है ।
द्रव्य भाव की भूल न हो अब ऐसी सदा कामना है ।।
तुम प्रसाद से परम सौख्य हो ऐसी विनय भावना है ।
जिन गुण सम्पत्ति का स्वामी हो जाऊँ यही साधना है ।।
शुद्धातम का आश्रय लेकर तुम समान प्रभु बन जाऊँ ।
सिद्ध स्वपद पाकर हे स्वामी फिर न लौट भव में आऊँ ।।
ज्ञान हीन हूं क्रिया हीन हूं द्रव्य हीन हूं हे जिन देव ।
भाव सुमन अर्पित हैं हे प्रभु पाऊं परम शान्ति स्वयमेव ।।
पूजन शान्ति विसर्जन करके निज आतम का ध्यान धरूं ।
जिन पूजन का फल यह पाऊँ मैं शाश्वत कल्याण करूं ।।
मङ्गलमय भगवान् वीर प्रभु मङ्गलमय गौतम गणधर ।
मङ्गलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि मङ्गल जिनवाणी सुखकर ।।
सर्व मङ्गलों में उत्तम है णमोकार का मन्त्र महान ।
श्री जिन धर्म श्रेष्ठ मङ्गलमय अनुपम वीतराग विज्ञान ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

नरक और पशु गति के दुख की सही वेदना सदा अपार ।
स्वर्गों के नश्वर सुख पाकर भूला निज शिव सुख आगार ॥

करलो जिनवर की पूजन

करलो जिनवर की पूजन, आई पावन घड़ी ।
आई पावन घड़ी — मन भावन घड़ी ॥

दुर्लभ यह मानव तन पाकर, करलो जिन गुण गान ।
गुण अनंत सिद्धों का सुमिरण, करके बनो महान ॥ करलो०

ज्ञानावरण, दर्शनावरणी, मोहनीय अंतराय ।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, आठों कर्म नशाय ॥ करलो०

धन्य धन्य सिद्धों की महिमा, नाश किया संसार ।
निज स्वभाव से शिव पद पाया, अनुपम अगम अपार । करलो०

जड़ से भिन्न सदा तुम चेतन करो भेद विज्ञान ।
सम्यक् दर्शन अंगीकृत कर निज को लो पहचान ॥ करलो०

रत्नत्रय की तरणी चढ़कर चलो मोक्ष के द्वार ।
शुद्धातम का ध्यान लगाओ हो जाओ भव पार ॥ करलो०

सिद्धों के दरबार में

हमको भी बुलवालो, स्वामी, सिद्धों के दरबार में ।

जीवादिक सातों तत्त्वों की, सच्ची श्रद्धा हो जाए ।
भेद ज्ञान से हमको भी प्रभु, सम्यक्दर्शन हो जाए ।
मिथ्यातम के कारण स्वामी, हम डूबे संसार में ॥
हमको भी बुलवालो स्वामी...

आतम द्रव्य का ज्ञान करें हम, निज स्वभाव में आजाएँ ।
रत्नत्रय की नाव बैठकर, मोक्ष भवन को पा जाएँ ।
पर्यायों की चकाचौंध से, बहते हैं मझधार में ॥
हमको भी बुलवालो स्वामी...

शाश्वत भगवान विराजित है आनंद कंद तेरे भीतर ।
पुद्गल तन में अपनत्व मान देखा न कभी निज रूप प्रखर ।।

गगन मण्डल में उड़ जाऊँ

तीन लोक के तीर्थ क्षेत्र सब वंदन कर आऊँ । गगन...
प्रथम श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर मैं जाऊँ ।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर चरण पूज ध्याऊँ ।। गगन...
अजित आदि श्री पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा गाऊँ ।
शाश्वत तीर्थराज के दर्शन करके हर्षाऊँ ।। गगन...
फिर मंदारगिरि पावापुर वासुपूज्य ध्याऊँ ।
हुए पंचकल्याणक प्रभु के पूजन कर आऊँ ।। गगन...
उर्जयंत गिरनार शिखर पर्वत पर फिर जाऊँ ।
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र को वन्दूँ सुख पाऊँ ।। गगन...
फिर पावापुर महावीर निर्वाण धरा जाऊँ ।
जल मंदिर में चरण पूजकर नाचूँ हर्षाऊँ ।। गगन...
फिर कैलाश शिखर अष्टापद आदिनाथ ध्याऊँ ।
ऋषभदेव निर्वाण धरा पर शुद्ध भाव लाऊँ ।। गगन...
पंच महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊँ ।
सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी मैं हो आऊँ ।। गगन...
तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज घर आऊं ।
शुद्धातम से कर प्रतीति मैं समकित उपजाऊँ ।। गगन...
फिर रत्नत्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊँ ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिव पद प्रगटाऊँ ।। गगन...

सुनी जब मैंने जिनवाणी

भ्रम तम पटल चीर, दरसायो चेतन रवि ज्ञानी ।। सुनी०
काम क्रोध गज शिथिल भए, पीवत समरस पानी ।
प्रगट्यो भेद विज्ञान निजांतर, निज आतम जानी ।। सुनी०
ध्रुवस्वभाव की रुचि अब जागी, छोड़ी मन मानी ।
निज परिणित की अनुपम छवि, अब मैंने पहचानी ।। सुनी०

आत्म भूत लक्षण सम्यक् दर्शन का स्वपर भेद विज्ञान ।
समकित होते ही होती है निर्विकल्प अनुभूति महान ॥

चलो रे भाई मोक्षपुरी

गाड़ी खड़ी रे खड़ी रे तैयार चलो रे भाई मोक्षपुरी ॥

सम्यक्दर्शन टिकट कटाओ, सम्यक्ज्ञान संवारो ।
सम्यक्चारित की महिमा से आठों कर्म निवारो ॥ चलो रे...

अगर बीच में अटके तो सर्वार्थसिद्धि जाओगे ।
तेतीस सागर एक कोटि पूरव वियोग पाओगे ॥ चलो रे...

फिर नर भव से ही यह गाड़ी तुमको ले जाएगी ।
मुक्ति वधू से मिलन तुम्हारा निश्चित करवाएगी ॥ चलो रे...

भव सागर का सेतु लांघकर यह गाड़ी जाती है ।
जिसने अपना ध्यान लगाया उसको पहुँचाती है ॥ चलो रे...

यदि चूके तो फिर अनंत भव धर धर पछताओगे ।
मोक्षपुरी के दर्शन से तुम वञ्चित रह जाओगे ॥ चलो रे...

चलो रे भाई सिद्धपुरी

देखो खड़ा है विमान महान, चलो रे भाई सिद्धपुरी ॥

वायुयान आया है सीट सुरक्षित अभी करालो ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित के तीनों पास मंगालो ॥ देखो...।

नरभव से ही यह विमान सीधा शिवपुर जाता है ।
जो चूका वह फिर अनन्त कालों तक पछताता है ॥ देखो...

रत्नत्रय की बर्थ संभालो शुद्धभाव में जीलो ।
निज स्वभाव का भोजन लेकर ज्ञानामृत जल पीलो ॥ देखो...

निज स्वरूप में जागरूक जो उनको पहुँचाएगा ।
सिद्ध शिला सिंहासन तक जा तुमको बिठलाएगा ॥ देखो...

मुक्ति भवन में मोक्ष वधू वरमाला पहनाएगी ।
सादि अनंत समाधि मिलेगी जगती गुण गाएगी ॥ देखो...

जैन पूजांजलि का मूल्य कम करने हेतु सहयोगी दान दाताओं की सूची

राशि	नाम
३०१)	श्रीमती तुलसाबाई ध. प. मिश्रीलाल जी खुशालचंद जी
३०१)	श्री मूलचन्द जी फूलचन्द जी
२०१)	श्रीमती रुक्मणी बाई ध. प नन्नूमल जी [अध्यक्ष]
२०१)	श्री मदनलाल जी [मदनमेडिको]
२०१)	श्री महेन्द्रकुमार जी नरेन्द्रकुमार जी [एन ब्रदर्स] मारवाड़ी रोड
१५१)	श्रीमती सुहागबाई ध. प. बदामीलाल जी
१०१)	श्री पंडित राजमल जी बी. काम.
१०१)	श्रीमती स्व० सुन्दरबाई मातेश्वरी कमलकुमार जी एडवोकेट
१०१)	श्री एस. रतनलाल जी राजमल जी
१०१)	श्री जयकुमार जी बज, [जे० के० एन्टरप्राईजेज]
१०१)	श्री श्रीचन्द जी [सुभाष कटपीस सेन्टर]
१०१)	श्री सौभाग्यमल जी वीरेन्द्रकुमार जी इतवारा
१०१)	श्री देवेन्द्रकुमार जी [अरविंद कटपीस सेन्टर]
१०१)	श्री राजमल जी मगनलाल जी
१०१)	श्री कन्छेदीलाल जी मुन्नालाल जी
१०१)	श्री दीपचन्द जी निहालचन्द जी
१०१)	श्री हुकमचन्द जी सुमतकुमार जी
१०१)	श्रीमती प्रेमबाई [हाथरस वाली]
१०१)	श्री गुट्टूलाल जी नरेन्द्रकुमार जी
१०१)	श्रीमती कमलश्री बाई ध प. स्व० श्री ज्ञानचन्द जी
१०१)	श्रीमती रतनबाई ध. प. नन्नूमल जी भंडारी
१०१)	श्रीमती मक्खनबाई ध. प. श्री पन्नालाल जी
१०१)	श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी माणकचन्द जी गुड़वाले
१०१)	श्रीमती पार्वतीबाई मातेश्वरी दयाचन्द जी [राजहंस लॉज]
१०१)	श्री बागमल जी नीलकमल जी पवैया
१०१)	श्री शांतिलाल जी [सूर्यप्रकाश फ्लोर मिल]
१०१)	श्रीमती कमलश्री बाई ध. प. मोहनलाल जी [म० प्र० ट्रान्सपोर्ट]
१०१)	श्रीमती चम्पाबाई ध. प. रामलालजी सर्राफ [खिमलासा]
१०१)	श्री कस्तूरचन्द जी [सिलवानी]
१०१)	श्रीमती सुशीलाबाई ध. प. विनयचन्द चौधरी [विनोद ब्रदर्स न्यू मार्केट]

१०१)	श्री सिंघई शीतलप्रसाद जी [बेगमगंज]
१०१)	हीरालाल जी चन्दनमल जी सर्राफ
१०१)	श्री श्रीकमल जी एडवोकेट
१०१)	श्रीमती मानिकीबाई ध. प. स्व० श्री बागमल जी संत
१०१)	श्री मूलचन्द्र जी चौधरी [पिपरई गाव]
१०१)	श्रीमती पुतरीबाई ध.प. स्व० श्री बाबूलाल जी नम्बरदार
५१)	श्री छोटेलाल जी बिहारीलाल जी [बेरसिया]
५१)	श्री नूतन फोटो स्टेट जहांगीराबाद द्वारा नरेन्द्र कुमार शास्त्री जयपुर
५१)	श्री सबलाल जी [आनंद बटपीस]
५१)	श्रीमती प्रभाबाई माहेश्वरी उमेशचन्द जी
५१)	[illegible] गुलाबचन्द जी
५१)	श्री [illegible] जी महेन्द्रकुमार जी
५१)	श्रीमती राजमती बाई
५१)	श्रीमती [illegible] ध. प. बाबूलाल जी पीपल्या वाले
५१)	श्री कालूराम जी [एम० पी० कटपीस]
५१)	श्री [illegible] जी महेन्द्रकुमार जी [विदिशा]
५१)	श्री [illegible] जी [illegible] कुमार जी
५१)	श्री राजमल जी मुरलीधर जी
५१)	श्री नेमिनन्दन जी बुधवारा
५१)	श्री मिट्ठूलाल जी सूरजमल जी नरानिया
५१)	गुप्तदान
५१)	श्री मगनजीत हुकमचन्द जी, मगलवारा
५१)	श्री लीलाधर जी राजमल जी
५१)	श्री ज्ञानेन्द्र कुमार नगेन्द्र कुमार पवैया
५५७)	फुटकर राशि (५१ रु० से कम की)

प्रभु तुम हरो मेरी पीर

राग द्वेष विनाश कर दो, देहु समरस नीर ॥ प्रभु० ॥
लीन विषय कषाय होकर, सही जग की पीर ।
कर्म फल भोगत अकेलो कोऊ नाहीं सीर ॥ प्रभु० ॥
तत्व चिन्तन बिना पाई चार गति की भीर ।
शुद्ध बुद्ध स्वरूप विसरयो भूल आतम हीर ॥ प्रभु० ॥